







अनुवादक नरेग बेदी

गंगादत्त बुद्धिप्रसाद भट्ट

मेमबरगन व० गिगोसोव्स्की, व० ग्वेनोव, ओ० नागिन

इ० निमोरोमेव, व० अगोयान, म० ज़मोडव्स्की

Международный терроризм и ЦРУ  
ДОКУМЕНТЫ, СВИДЕТЕЛЬСТВА, ФАКТЫ

*Na jazyce hindu*

International Terrorism and CIA

DOCUMENTS, EVIDENCE, FACTS

*In Hindi*

---

© Издательство „Прогресс“, 1983

© हिंदी अनुवाद.. प्रगति प्रकाशन, १९८५

सोवियत संघ में मुद्रितः

M 0800000000-152-362-85  
014(01)-85











'मेड इन यू० एस०' ~~एन०~~

9331

पश्चिमी प्रचार के "सोवि  
को इस सदी का सबसे बड़ा भूठ ठीक ही कहा जाता है।  
सचमुच, इससे ज्यादा बेहूदा बात को सोचना भी  
मुश्किल होगा कि जिस देश का सबसे पहला ही  
विधायी कार्य शांति के बारे में आज्ञाप्ति रहा हो,  
जिसका आदर्श निःशस्त्रीकरण हो, जो लगातार नये-नये  
शांति-प्रस्ताव सामने रखता हो और एकपक्षीय शस्त्र-  
परिसीमन और कटौती का उदाहरण प्रस्तुत करता हो,  
उसी देश के विरुद्ध आक्रमकता का आरोप लगाया  
जाये। इसके बावजूद पश्चिमी प्रचार-साधन, विद्यालय,  
पादरी और विश्वविद्यालयों के विद्वान, बल्कि राजनेता  
तक, हर दिन और हर घड़ी इस मिथक को करोड़ों  
लोगों की चेतना में दूंसने में लगे रहते हैं।

इस सिलसिले में मुझे १९७६ की गरमियों के  
संयुक्त राज्य अमरीका की एक यात्रा की याद आती है।  
हम लोग, सोवियत पत्रकारों के एक प्रतिनिधिमंडल  
के सदस्य, ओहायो, पाइट-सुकआउट (मिसूरी राज्य)  
का एक स्कूल देखने गये हुए थे।

इस स्कूल में असहमति की कोई गुजाइश नहीं  
है, यहाँ धर्म ही निष्ठा की आधारनिळा है। कॉलेज के

9331



प्रधान, पैट्रम क्लार्क, ने हमसे मान-मान कहा  
 “आपने देश के प्रति हम लोग पूर्वाग्रह रखते हैं और  
 अपने छात्रों को उससे अनुगार ही पढ़ाने हैं। आपकी  
 व्यवस्था के बारे में हमारा अपना दृष्टिकोण है ”

कोई बात नहीं सोवियत लोगों का भी “मुक्त  
 उद्यम” - पूँजीवादी शोषण और सामाजिक असमानता  
 की व्यवस्था के बारे में अपना ही नज़रिया है। लेकिन  
 ऐसा एक भी सोवियत स्कूल या कनिष्ठ नहीं है कि  
 जहाँ ऐसी पुस्तिकाएँ या परीक्षाएँ देखी जा सकें,  
 जैसी हमने इस कनिष्ठ के गिरजाधर में देखी थी।  
 सोवियत छात्रों में अमरीका जनता के प्रति वैर या  
 विद्वेष उपजानेवाली कोई पुस्तक-पुस्तिका या परीक्षा  
 देखने को भी नहीं मिलेगी।

“यह हमारे यहाँ भी हो सकता है” . कनिष्ठ के  
 गिरजाधर में देखी गयी एक पुस्तिका का यह भयावह  
 शीर्षक था। छात्रों और भक्त-समुदाय के अन्य सदस्यों  
 को उसमें क्या बतलाया गया है? “कम्युनिज्म अब भी  
 दुनिया को जीतने का इरादा रखता है और उसके लिए  
 निरंतर प्रयास किये जा रहा है” . और हमी कहते  
 हैं कि “जब हम समुक्त राज्य अमरीका को जीत  
 लेंगे, . तो छ करोड़ अमरीकियों का मफ़ाया करना  
 होगा .” और इसके बाद गिरजाधरों और दीनदारों  
 पर नाज़िल होनेवाली विभीषिकाओं की एक पूरी  
 सूची थी और चिन्ही जॉन नोबल के उद्धरण थे, जिनमें  
 बतलाया गया है कि “लौह आवरण के पीछे २८०  
 लाख लोग दास शिविरो में हैं” । श्री नोबल एकदम







तब से कितने ही साल गुज़र चुके हैं। सोवियत सघ शांति के प्रति अपने समर्पण को अपने कार्यों द्वारा बारंबार प्रदर्शित कर चुका है और वह शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व और परस्पर लाभदायी सहयोग के आधार पर बूर्जुआ राज्यों के साथ संबंध विकसित करने की अपनी आकांक्षा और दक्षता को भी दिखा चुका है। लेकिन "आम" अमरीकी ने अब भी सोवियत "सुतरे" और "कम्युनिस्ट पद्धत" के बारे में ही पढ़ा और सुना है। अकेला फर्क सिर्फ यह है कि अब, नवे दशक के आरंभ में, इस प्रचार का मुर न केवल जनमत को बनाने-बिगाड़ने में माहिर पेशेवर कम्युनिज्म-विरोधियों द्वारा, बल्कि अमरीकी राष्ट्रपति, विदेश मंत्री और रक्षा मंत्री द्वारा भी बाधा जाता है। यह तो मैं नहीं जानता कि उन्हें भी जॉर्ज वाशिंगटन सम्मान पदक प्रदान किया गया है या नहीं, मगर उनकी "दलीले" उतनी ही ताज़ा, सटीक और कायलकारी हैं, जितनी ओझाकर्म गिरजाधर की पुस्तिका में दी हुई "दलीले"।

वाशिंगटन के मौजूदा सोवियतविरोधी अभियान की अकेली "मौलिकता" यह है कि इस बार "कम्युनिस्ट पद्धत" को "अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद" के रूप में पेश किया जा रहा है। इस अभियान का ममारम भूतपूर्व विदेश मंत्री एलैक्जेंडर हेग ने २८ जनवरी, १९८१ को किया था। उन्होंने एक पत्रकार सम्मेलन में कहा था कि सोवियत सघ आज ऐसी नीति, ऐसे कार्यक्रमों पर अमल कर रहा है, जिनमें अंतर्राष्ट्रीय















मुरागो को बड़ी होशियारी से छिपा देता है।

जहाँ "मानवाधिकारों की रक्षा" के पाण्डुपूरी अभियान के दौरान वाशिंगटन ने कम से कम वस्तुपरकता का तो आभास देने की कोशिश की थी और किसी में बर्बर शासन की, दक्षिण कोरिया में दमन व और कुछ अन्य "ग्वानग राष्ट्रीय" में व्यापक उत्पीड़न व अनिच्छापूर्वक निदा तक की थी, वहाँ इन बाह्य नफागो को इस बार बिल्कुल आरम्भ में ही तिलांजलि दे दी गयी - गारा दौर घूमी तरह से, शुरू से सेब आगिर तरह मोदियों और उनके मित्र देशों के मन मड दिया गया और भीधे-भीधे इस आदिम दलील व माप रि वे तो नागुदा "कम्प्यूनिस्ट" है। निरों लोगों की जान लेनेवाले बमबाजों के दोषी वे हैं और हजारों जहाजों को हाईसेर करने और लोगों को बधा बनाने के दोषी भी वे ही हैं। वाशिंगटन के "अनारिस्ट्रीय आनकवाद के विरुद्ध मध्यांतरियों" का मर्वोर्गि मध्य मोदियन मय को दुनिया की आगों में गिराता समाजवादी समुदाय और सभी साम्यवादी शक्तियों के विरुद्ध मनोवैज्ञानिक युद्ध को लेड करना और लोगों को समाजवाद में विमुख करना है।

इसका मध्य राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों को माजिज करना है। इसमें भी मोदियन मय को ही मुख्य अगवाओं की तरह गेज दिया जाता है। मांको और उसके 'अनुचरों' इस "धमकावे" का ही गाने चालिकाई का कारण बनता जाता है। जैसा कि निम्न

४ १८० म आरुह इन्डम (राष्ट्रपति भवन)







करनेवाले इसराएली आक्रांताओं को सर्वतोमुखी सहायता देने का "अधिकार" है ; नमलवादी दक्षिण अफ्रीका के साथ साठ-गाठ करने और अफ्रीका के दक्षिण में स्वाधीनता आंदोलनों को कुचलने में उसकी मदद करने का "अधिकार" है , निकारागुआ और सल्वादोर : देशभक्तों के खिलाफ प्रच्छन्न और खुला युद्ध चलाने अनेक लातीनी अमरीकी देशों को भून में डुबानेवाले तानाशाहियों को वित्तीय सहायता देने और शस्त्रसज्ज्य करने का "अधिकार" है ।

"आतंकवाद के जननस्थलों" की श्रेणी में वाशिंगटन सर्वोपरि फिलिस्तीनी मुक्ति संगठन, लीबिया निकारागुआ के सैडीनिस्टी नेतृत्व और स्वापो ( दक्षिण पश्चिम अफ्रीकी जन संगठन ) के नाम लेता है लेकिन वास्तव में अमरीकी राजनीतिज्ञों ने जनगण के अवहेलना करते हुए और उनके अधिकारों तथा आकांक्षाओं का तिरस्कार करते हुए सारे ही राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन पर यह लेबल चस्पा कर दिया है ।

इन आंदोलनों के प्रति वाशिंगटन का रवैय रैगन प्रशासन के अधीन स्पष्टतः बदल गया है । आठों दशक के उत्तरार्ध में, अपनी वियतनामी मुहिमबाजी के ढेर होने के बाद, वाशिंगटन ने विकासमान देशों के सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन को सीधे ही न नकारने बल्कि उमे मयुक्त राज्य अमरीका को स्वीकार्य दिशा में मोड़ने का "सखीनाम" दिखलाने की कोशिश की थी । लेकिन ईरान और निकारागुआ में प्रांियों ने इस "विभेदित नीति" का बटाधार कर दिया ,







रूपांतरणों को रोकने के लिए सोवियन सभ पर सैनिक घेष्टता प्राप्त करने की तत्काल प्रत्यावर्तन का औचित्य-स्थापन और समर्थन करना। लक्ष्य “सोवियन खतरे और अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के खतरे को कम करके आकनेवाले” जनमत को बदलना, इन सारे अद्भुतदर्शी उदारों और युद्धविरोधी आंदोलनकारियों की जवान बंद करना और इस तरह से समुक्त राज्य अमरीका की आक्रामक विदेश नीति के लिए व्यापक समर्थन प्राप्त करना भी है।

यहां भी नफरत और खौफ के घंघे से लाभ उठाने की ही बात है। बिलकुल ओज्जाकर्म गिरजाधर के कठमुल्ला ज्ञानविरोधियों की ही तरह अमरीकी राजनेता अमरीकियों से अपने धीसे खाली करने की अपील कर रहे हैं—हथियारों की अभूतपूर्व होड़ के लिए, बढ़ती हुई सेना के लिए, नये फौजी अड्डों के लिए, गुप्तचर सेवाओं के लिए और घोरतम प्रतिक्रियावादी शासनो को करोड़ों डॉलर की आर्थिक सहायता देने के लिए। अगर नहीं चाहते कि सोवियत अमरीका को जीत लें और कम्युनिस्ट सारी दुनिया पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर ले, तो धीसे खाली करो।

इस कुत्सापूर्ण शोर-शराबे का एक लक्ष्य और है—दोष दूसरे के मत्थे मढ़ना। सामान्य रूप में अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद की समस्या है या नहीं? निस्संदेह है। आतंकवाद की दो किस्में हैं—सरकार और उसके अधिकारियों का अथवा सरकार द्वारा समर्थित आतंकवाद, और प्राइवेट व्यक्तियों या उनके समूहों का



के साथ यह कहने का हर कारण है कि राजकीय आतंक-  
 वाद खासे बड़े अरसे से अमरीकी साम्राज्यवाद की  
 विदेश नीति का एक अंग बन चुका है, जिसने जगत  
 धानेदार की भूमिका ग्रहण कर ली है। राजकीय  
 आतंकवाद प्रातिकारी तथा राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन के  
 विरुद्ध उसके सघर्ष के लगभग मुख्य साधन का अधिका-  
 धिक रूप ग्रहण करता जा रहा है। साम्राज्यवाद के  
 पास स्वाधीनता तथा सामाजिक प्रगति का मुकाबला  
 करने के लिए कोई राजनीतिक, वैचारिक अथवा  
 आत्मिक मूल्य नहीं है, उसके पास राष्ट्रों को आकर्षित  
 करने के लिए कुछ भी नहीं है। यही कारण है कि वह  
 हिंसा पर ही सब दाव लगाता है और आर्थिक प्रति-  
 गोष्ठात्मक कार्रवाइयों, राजनीतिक हत्याओं, अतर्ध्वस  
 और बलात सत्ता-परिवर्तनों द्वारा औरो पर अपनी  
 लष्ठा को थोपता है। अमरीकी केन्द्रीय गुप्तचर एजेंसी  
 सी० आई० ए०) प्रातिकारी तथा प्रगतिशील शक्तियों  
 के विरुद्ध इस ध्वंसकार्य में मुख्य हथियार का काम  
 करती है।

लेकिन हम वाशिंगटनी राजनीतिज्ञों का अनुकरण  
 ही करेंगे, जो प्रमाण की अवहेलना करते हैं। आइये,  
 हम से कम विकासमान देशों में सी० आई० ए० की  
 कार्रवाइयों के प्रमाण पर नज़र डालें।

जनवरी, १९८१ तक अखण्डनीय रूप में प्रमाणित



हो चुका था कि निम्नलिखित अंतर्राष्ट्रीय अपराध सी० आई० ए० की सहभागिता से या उसके निदेशन में किये गये थे ईरान में राज्य-परिवर्तन और मुस्लिम सरकार का उलटा जाना (१९५३) ; ग्वाटेमाला में सैन्य राज्य-परिवर्तन और आर्बेस सरकार का उलटा जाना (१९५४) ; मिस्र के राष्ट्रपति नामिर की हत्या का पड़्यत्र (१९५८) ; सीलोन ( अब श्रीलंका ) के प्रधान मंत्री सोलोमन भंडारनायक की हत्या (१९५९) ; भारत के प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू के विरुद्ध पड़्यत्र ; कागो लोकतांत्रिक गणराज्य ( अब जाइर ) के प्रधान मंत्री पन्थीस लुमुबा की हत्या ; डोमिनिकन गणतंत्र में बलात् राज्य-परिवर्तन (१९६१) ; मोझाबीक मुक्ति मोरचा ( फ़ेलीमो ) के अध्यक्ष एडुआर्दो मोदलाने की हत्या (१९६६) , गिनी तथा केप वर्द द्वीप समूह की अफ़्रीकी स्वतंत्रता पार्टी के महामन्त्रि आमीसकार कन्नल की हत्या (१९७३) ; चिली में जन एकता सरकार का उलटा जाना और राष्ट्रपति सल्वादोर अल्येदे की हत्या (१९७३) ; बांग्लादेश के पहले राष्ट्रपति शेख मुजीबुर्रहमान की हत्या (१९७५) ; कागो लोक गणराज्य के राष्ट्रपति एम० नूआबी की हत्या (१९७७) ।

बेशक, यह पूरी सूची नहीं है—इसमें और नाम भी जोड़े जा सकते हैं, लेकिन अगर विश्व जनमत को ज्ञात सारी ही सी० आई० ए० कार्रवाइयों का भी उल्लेख कर दिया जाये, तो भी यह समुद्र में तैरते हिमखंड के दिखायी देनेवाले ऊपरी सिरे के समान







लेकिन जहा सी० आई० ए० अब भी छिने-छिने की काम करती है, वहा राष्ट्रपति रैगन के सत्ता में आने के बाद से ह्वाइट हाउस अंतर्राष्ट्रीय मंच पर अधिकाधिक खुले तौर पर राजकीय आतंकवाद का प्रयोग कर रहा है। लगता है कि प्रभुसत्तासपन्न राष्ट्रों के आंतरिक मामलों में अप्रच्छन्न हस्तक्षेप और प्रति-जाति के निर्यात की नीति को अमरीकी इतिहास में पहली बार राष्ट्रीय नीति का दर्जा दे दिया गया है।

१९७८ के वसंत में ही सी० आई० ए० ने अफगानिस्तान की वैध सरकार के विरुद्ध लड़ने के लिए गहनतम गोपनीयता की अवस्थाओं में तोड़फोड़ करनेवाले गिरोहों को प्रशिक्षित और हथियारबंद करना शुरू कर दिया था। आज रैगन प्रशासन सामाजिक प्रगति और राष्ट्रीय पुनरुत्थान का पथ उन्मुक्त करनेवाली सामतवादविरोधी राष्ट्रीय जनवादी अफगान घाति के विरुद्ध अपौरुषेय युद्ध में अपनी सक्रिय सहभागिता को छिपाने की सोचना भी नहीं है। यही नहीं, वाशिंगटन आतंकवादी बार्-बाइबा और तोड़फोड़ करने के लिए मुख्यतः पारिस्तान में अफगानिस्तान में भेजे जानेवाले अफगान प्रतिजातिवादी गिरोहों को हथियारबंद करने और आर्थिक सहायता देने रहने के अपने इरादों को खुले तौर पर घोषित करता है।

जैसे ही किसी देश की वैध सरकार अमरीकी प्रशासन की आंखों में "रखाइ बाधक" हो जाती है, जैसे ही वह वैदेशिक मामलों में स्वतंत्रता दिखाने लगती या अन्तर्राष्ट्रीय सामाजिक व्यवस्था माने लगे







अमरीकी हथियारों से लैस, अमरीकी प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षित, अमरीकी "सलाहकारों" द्वारा निर्देशित और अमरीकी पैसे पर जीनेवाले प्रतिव्यावादी सत्वा-दोरी हुता (सैनिक शासक गुट) के सैनिक अपनी ही जनता के विरुद्ध अधन्य युद्ध चला रहे हैं। दमियों हजार शान्तिकामी निवासी आतंक के राज के शिकार हो चुके हैं, हत्यारों के हाथों मारे जा चुके हैं। उधर वाशिंगटन इस खूनी शासन को अपनी सहायता में निरंतर वृद्धि करता जा रहा है और अधिकाधिक उद्‌डना-पूर्वक देश के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करता जा रहा है।

उन्हे से निकारागुआ के विरुद्ध आतंकवादी कार्रवाइयों का एक पूरा सिखसिला शुरू कर दिया गया है। सारा घटनाक्रम वाशिंगटन के क्लासिकी नमूने पर चला है। पहले, प्राति के फौरन बाद, अमरीकी प्रशासन ने निकारागुआ के नये नेताओं के साथ सौदा करने की, उन्हे सही, "पारंपरिक लातीनी अमरीकी" रास्ता दिखलाने की पूरी-पूरी कोशिश की। लेकिन इसमें कुछ हुआ नहीं—प्रातिकारी जनता ने स्वयं अपना रास्ता चुनने, निर्धनता और शोषण से मुक्त समाज का निर्माण करने का निश्चय किया। देश के भीतर निकारागुआ अमरीकी इजारा के प्रभुत्व को समाप्त करने की और लक्षित सामाजिक-आर्थिक रूपांतरण करने लगा; विदेश नीति के क्षेत्र में उसने स्वतंत्र साम्राज्यवाद-विरोधी रवैया अपनाया और क्यूबा के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित किये।







के विरुद्ध प्रचलित गतिविधियों की योजना को अनुमोदित किया। जिसके अनुसार मी० आई० ए० को मूल्य सामग्री और कपड़ा तथा अन्य प्रतिवस्तुओं के अर्थनैतिक भारों के दमने व्यापित करने का अधिकार प्रदान किया गया। इन भारों के सैनिकों को हाइड्राम में निकारागुआ में महत्वपूर्ण स्थानों — पुनो, बिबो-घरो, बायो और औद्योगिक उद्यमों — पर हमले करने और सीमानवर्ती इलाकों पर छात्रे मारने थे। १०० लोगों के इन दमों को संगठित करने के लिए पूरे १६० लाख डॉलर की रकम विनियुक्त की गयी।

निकारागुआ के विरुद्ध ध्वमकार्य में समुक्त राज्य अमेरिका ने उसके पड़ोसी देशों को भी खींच लिया। अमेरिकी "सलाहकारों" के निदेशन में हाइड्रानी सेना सीमा पर लगातार भड़कावे की कार्यवाही करती रहती है। हाइड्राम और कोलंबिया की सरकारों के साथ उनके देशों में नये सैनिक अड्डे कायम करने और पुरानों का आधुनिकीकरण किये जाने के बारे में बार्ताएँ हुईं। फौजी हैलीकॉप्टरों द्वारा पनामा नहरक्षेत्र से छतरीधारी सैनिक कोस्टा रीका पहुँचाये गये और वहाँ युद्ध अभ्यासों का मिलसिला शुरू किया गया।

सभी तरफ से दबाव बढ़ाया गया। हाइड्राम से लगे निकारागुआ के उत्तर-पूर्वी सीमात पर भड़के शुरू हो गयीं। अमेरिकी प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षित आतंकवादियों ने निकारागुआ में दो पुलों को उड़ा दिया और राजधानी में अनेक उद्यमों को उड़ाने और गणराज्य के नेताओं की हत्या करने की कोशिशें कीं



और निकारागुआई हवाई जहाजों में बम रखे। देश के सबसे बड़े अल्पमूल्यक समुदाय, मिस्कीतो इंडियनों (आदिवासियों) के कबीले को आतंककारी सरकार के खिलाफ विद्रोह करने के लिए उकसाया गया। अमरीकी जाम्बूजी हवाई जहाजों ने निकारागुआ के वायुक्षेत्र का और अमरीकी नौसैनिक पोतों ने उसकी जलसीमा का बारबार उत्खनन किया। संयुक्त राज्य अमरीका द्वारा प्रत्यक्ष सैन्य हस्तक्षेप — जैसे ग्वाटेमाला और होमीनिकन गणराज्य में हुआ था — का खतरा लगातार बढ़ता जा रहा है।

और अंत में, शरद, १९८३ में संयुक्त राज्य अमरीका द्वारा अंतर्राष्ट्रीय कानून को बलाये ताक रखकर ग्रेनाडा पर सशस्त्र आक्रमण, जिसने विश्व जनमत को हिला डाला। क्या यह भी अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद का स्पष्ट उदाहरण नहीं है?

अमरीकी साम्राज्यवाद को स्पष्टतः "स्वतंत्र विश्व का नाबुदा कम्युनिस्टों से बचाव" करने के बहाने की आड़ में अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद में लगने के लिए कोरा परवाना चाहिए। सातीनी अमरीका के जनगण के लिए यह "बचाव" क्या मानी रखता है, इसका एक पनामाई सार्वजनिक कार्यकर्ता ने बहुत ही सजीव शब्दों में वर्णन किया है -

"... विलीयाई नदिया ऐसे लोगों की सैकड़ों लाशें बहाकर प्रशांत महासागर में पहुँचा रही हैं, जो शांतिपूर्वक काम करते थे और जिन्होंने कभी किसी हथियार को हाथ भी नहीं लगाया था। सीवरों में डूबा



दिये गये, दंतचिकित्सकों के बरमो और धमन ज्वानको  
 से सता-सताकर मारे गये, प्लास्टिक के बोरो में दम  
 घुटने से मरे, हेलीकॉप्टरो से समुद्र में या ज्वालामुखियों  
 के मुहों में फेंके गये लोग। कलाइयाँ और पैर बटे  
 हुए, आँखें निकाले हुए और जबानें काटे हुए दसियों  
 हजार शरीर। माएँ, जिनकी आँखों के आगे उनके  
 बेटों को बिजली से यंत्रणा दी जाती है और काँच  
 के टुकड़ों पर पड़े अपने बच्चों के ऊपर चलने की  
 मजबूर किया जाता है ( "नहीं तो हम उनके सिर  
 काट देंगे" )। अपने परिवार में सभी वयस्कों के मार  
 डाले जाने और उनकी लाशें कूओं में फेंक दिये जाने  
 अथवा डायनामाइट से उड़ा दिये जाने के बाद विदेशों  
 में बेचे गये दुधमुह बच्चे। यंत्रणा से पागल हुए हजारों-  
 हजार लोग। अपने घरों के भीतर जला दिये गये  
 परिवार। स्कूली बच्चे, जिनकी छातियों को छुरों  
 में चीरकर उनके दिलों को निकाल लिया गया था।  
 हवा में ऊपर उछाले गये और गडामों की धार पर  
 गिरे शिशु "

ये सभी नृशम कांड, जिनमें से प्रत्येक किसी एक  
 आतीनी अमरीकी देश या अनेक देशों में पटा है,  
 यू.एस. प्रेस से निये गये हैं और पूर्णतः प्रत्येक्ष-  
 प्रमाणित है, वे उन्हीं ही प्रत्येक्ष-प्रमाणित हैं कि  
 अतिनी यह पुस्तक, जो अंतर्राष्ट्रीय आनंदवाद के  
 उपकरण के नामे मी० आई० ए० के इतिहास की  
 अपेक्षा प्रस्तुत करती है और दक्षिण-पूर्वी एशिया,  
 आतीनी अमरीका, अफ्रीका, पश्चिमी यूरोप और







खिलाफ लड़ने के लिए गोरे भाड़े के सैनिकों का बारबार उपयोग किया है। ये भाड़े के हत्यारे जहाँ भी गये हैं, वहाँ-वहाँ — कांगो ( जाइर ), नाइजीरिया, रोडेसिया ( जिम्बाब्वे ), अंगोला, मदागास्कर, मोजम्बीक, मारीशस, कॉमरो द्वीपसमूह, सेदील्ड द्वीपसमूह — उन्होंने अपने गूनी पदचिह्न छोड़े हैं। इन लोगों में सबसे आगे-आगे 'संयुक्त राज्य अमरीका में निर्मित' भाड़े के सैनिक रहे हैं — वास्तव में यह इतालवी पत्रिका 'स'एम्प्रेसो' में छपे एक रिपोर्ताज का शीर्षक है, जिसके सवादशता ने स्कॉट्सडेल ( ऐरीडोना राज्य ) में एक वार्षिक सम्मेलन में कुछ भाड़े के मित्राहियों से बातें की थी। यह सम्मेलन 'मोन्जर ऑफ़ फॉर्च्यूर' पत्रिका द्वारा आयोजित किया गया था, जिसकी बिन्नी की तादाद अब २ लाख के ऊपर जा चुकी है।

विनियम टी० "बिल" सफ़ेट, जो २७ मान सेना में सेवा कर चुका है, अमरीकी वायुसेना में सेनटीनेंट-बर्नर था और विघननाम, क्यूबिया तथा साओम में देशभक्तों के गिराफ़ मर चुका है, अपने मौते पर एक चटखीना बिन्दा लगाये रहता है, जिस पर लिखा है " मैं बड़ी होना पसंद करता हूँ, जहाँ कम्युनिस्टों को मारा जाना है "। बिन्ड करता है " मैंने इसे इमरिटल लगा रखा है कि वह मेरे विचार को व्यक्त करता है। मुझे कम्युनिस्टों को मारना पसंद है। मेरी सम्झ में यह सही है — कम्युनिज्म दुनिया को पीले की लकड़ से बनने का लक्ष्य लेता करता है "।

जून अर्वा १० लाख अमरीकी सेना के फ़ौज







के लिए ही उपयोगी है, जिसका कोई भविष्य नहीं है और जो इतिहास की गति को धीमा करने और अपने अंत को रोकने की निरर्थक चेष्टा में जघन्यतम और निम्नतम कारसाजियों से बाज नहीं आता। यह पुस्तक इसी के बारे में है—यह अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद और उसके सूत्रधार तथा संगठक अमरीकी केंद्रीय गुप्तचर एजेंसी के विरुद्ध विश्व जनमत का अभियोगपत्र है।

बिताली सितोकोम्बो







के अंतर्गत १९४७ में की गयी थी, जब चीतबुद्ध ने जोर पकड़ना अभी शुरू ही किया था। इसके बावजूद कि आसूचना संग्रहण ही इस नये अभिकरण का मुख्य कार्य माना गया था, प्रच्छन्न कार्रवाइयों का उसके काम में आरम्भ से ही महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

यह दृष्टव्य है कि राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम में प्रच्छन्न सक्रियाओं का कोई उल्लेख न था। लेकिन उसका एक प्रावधान सी० आई० ए० को "राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद द्वारा समय-समय पर निर्दिष्ट राष्ट्रीय सुरक्षा को प्रभावित करनेवाली आसूचना से संबद्ध अन्य कार्यों तथा कर्तव्यों का निष्पादन" \* करने में समर्थ बनाता था।

१९४७ के राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम के रचनाकारों में एक, भूतपूर्व अमरीकी प्रतिरक्षा मंत्री क्लार्क एम० क्लिफर्ड ने इस प्रावधान के बारे में यह कहा है:

"यह तय किया गया कि केन्द्रीय गुप्तचर एजेंसी को स्थापित करनेवाले अधिनियम में अप्रत्याशित सम्भावनाओं की व्यवस्था के लिए एक 'सर्वग्राही' धारा रहनी चाहिए... इसी धारा के अंतर्गत १९४७ के अधिनियम के प्रचलन में आते ही प्रच्छन्न-कार्रवाइयों की मजूरी दी गयी थी। मुझे याद आता है कि ऐसी पहली कार्रवाइया १९४८ में हुई थी और यह तर्क संभव है कि १९४७ के अंत में ही कुछ योजना हो

\* *Final Report of the Select Committee to Study Co-Operations With Respect to Intelligence Act-Senate, Book 1, US Government Printing Office, 1976, p. 512.*







रा० सु० प० निदेश म० ४/अ ने मनोवैज्ञानिक युद्ध को इस प्रकार परिभाषित किया था :

“ प्रचार से लेकर अर्थ-मैतिक कार्रवाइयों तक, आर्थिक कार्रवाई से लेकर विदेशी राजनीतिक पार्टियों, सूचना-साधनों और श्रमिक मगठनों को आर्थिक महायुद्ध और समर्पण तक प्रच्छन्न कार्य प्रविष्टियाँ, ... विदेशी राजनीतिक पार्टियों को अमरीकी समर्पण, ‘आर्थिक युद्ध’, अतर्ध्वस, शरणार्थी मुक्ति दलों को सह्यता ” \*

जून, १९४८ से मार्च, १९५५ तक राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद ने सी० आई० ए० की प्रच्छन्न स क्रियाओं के बारे में निदेशों की एक पूरी शृंखला जारी की। १८ जून, १९४८ को रा० सु० प० निदेश म० १०/२ ने तथाकथित १०/२ परिषद का गठन किया जो राष्ट्रपति फोर्ड के अधीन स्थापित तथाकथित “विदेश गुप्तचर्या कार्य परामर्शदातामंडल” की पहल पूर्वगामी थी। इस परिषद के अधिदेश में प्रस्तावित प्रच्छन्न कार्रवाइयो पर विचार करना सम्मिलित था २३ अक्टूबर, १९५१ को रा० सु० प० निदेश सं० १०/५ जारी किया गया, जिसने प्रच्छन्न कार्रवाइयों के सारे दुनिया में और अधिक प्रसार की व्यवस्था को \*\* और उनके समन्वित किये जाने के ढंगों में सु

\* *Final Report ...* pp. 142, 144.

\*\* इसके पहले सी० आई० ए० का प्रच्छन्न कार्य अधिकतम मनोवैज्ञानिक युद्ध से ही संबद्ध था और लगभग पूरी तरह से उन सूचना साधनों से जुड़ा हुआ था, जिसमें जाली प्रकाशनों और “स्वाइ







निष्क्रमण उपाय भी आते हैं, विरोधी राज्यों के विरुद्ध ध्वसकार्य, जिसमें छाषामार तथा शरणार्थी मुक्ति दलों को सहायता भी शामिल है और स्वतंत्र विश्व के सकटग्रस्त देशों में स्थानीय कम्युनिस्टविरोधी तत्वों का समर्थन।” \*

प्रच्छन्न सचियाओं के विस्तारित पैमाने के लिए न केवल अतियोग्यताप्राप्त ध्वसकार्य विशेषज्ञों का ही बल्कि इन कार्यवाहियों का दुनिया भर में समूहों और संचालन करने के वास्ते एक विशेष निकाय का होना भी आवश्यक था।

ठीक इन्हीं उद्देश्यों से पाचवे दशक के अंत में अर्धस्वायत्त नीति समन्वयन कार्यालय ( नी० म० का० ) की स्थापना की गयी, जो राजनीतिक स्वरूप में निदेश सीधे विदेश विभाग और प्रतिरक्षा विभाग में प्राप्त करता था। नी० म० का० की संस्थापना करने वाले निदेश में “ सोवियत ध्वसकार्य ” के उल्लेख और “ सोवियत खनरे ” के बारे में लंबे परीक्षण मकसदों के निदेश के रचयिताओं के विचार में यह नी० म० का० को राजनीतिक, आर्थिक तथा विचारधारात्मक ध्वसकार्य सहित विभिन्न प्रकारों के प्रच्छन्न कार्यों के लिए हमी भंडी दिमाने का पक्का आधार प्रदान करता था।

१९८६ में नी० म० का० में कुल ३०२ बर्से थे, १९५२ में उनकी संख्या बढ़कर २,८१२ हो गयी

\* Final Report pp 131-132











द्वारा एक ऐसे महत्वपूर्ण स्थानीय अधिकारी को अपने पक्ष में लाने के प्रयास से पैदा हुआ था, जिसके नी० स० का० के साथ घनिष्ठ संबंध थे।

१९५० और १९५१ के बीच सी० आई० ए० के निदेशक, जनरल वाल्टर चैडेल स्मिथ ने दोनों सेवाओं के बीच समन्वयन सुधारों के लिए कई कदम उठाये। अगस्त, १९५२ में, नी० स० का० और बि० स० का० का योजना निदेशालय में विलयन कर दिया गया। इस विलयन के परिणामस्वरूप ध्वसात्मक सक्रियताओं की संख्या सहसा बढ़ गयी और प्रच्छन्न आमूचना संग्रहण कार्रवाइयों की क्षति पहुची। एजेंट ध्वसकार्य को अकारण ही तरजीह नहीं देते थे, क्योंकि उनके परिणाम जल्दी ही प्रत्यक्ष हो जाते थे, जब कि अपने लिए भेदियों को भरती करना लंबा, धीमा और थमसाध्य काम था, जो कोई तात्कालिक परिणाम नहीं उत्पन्न करता था।

१९५३ तक सी० आई० ए० ने समूचे तौर पर यह आकार प्राप्त कर लिया, जो अगले २० साल लगभग अपरिवर्तित बना रहा। कोरियाई मुहिमबाजी और शीत युद्ध के तीव्रीकरण ने सी० आई० ए० की तीव्र वृद्धि में योग दिया - १९४७ की तुलना में उसका आकार छः गुना अधिक हो गया।

सी० आई० ए० में तीन निदेशालयों की स्थापना की गयी। बजट, कर्मियों तथा अन्य माध्यमों का सबसे बड़ा हिस्सा योजना निदेशालय को मिला। १९५२ में सी० आई० ए० के बजट का ७४% और उसके



कमीशन का ६०% गुन आगूचना मण्डल और ध्वमा-  
ग्मर कार्यों के लिए ही विनियुक्त था।

छठे दशक के मध्य तक प्रच्छन्न मन्त्रियाएँ मॉन्टिगन  
मध तथा गमाजवादी बिरादरी के दूमेरे देशों के साथ  
"स्थायी द्वन्द्व" का अभिन्न अंग बन चुकी थी। मिनबर,  
१९५४ में प्रच्छन्न मी० आर्द० ए० मन्त्रियाओं के बारे  
में एक गुप्त रिपोर्ट राष्ट्रपति आइज़नहावर के सामने  
पेश की गयी। रिपोर्ट की प्रस्तावना में प्रच्छन्न कार्रवाई  
की आवश्यकता का अन्धन कुटिल औचित्यस्थापन किया  
गया था।

"जब तक यह (प्रच्छन्न कार्रवाई-अनु०) रा-  
ष्ट्रीय नीति बनी रहती है, एक ऐसा आक्रामक प्रच्छन्न  
मनोवैज्ञानिक, राजनीतिक तथा अर्द्ध-नैतिक मगडन स्था-  
पित करना बहुत जरूरी है, जो अधिक कारगर,  
अधिक अनन्य, और अगर आवश्यक हो, तो अधिक  
निर्मम भी हो। इस लक्ष्य की तत्काल, सफल और  
सुनिश्चित सिद्धि में किसी को भी बाधक नहीं होने  
देना चाहिए।

"अब यह स्पष्ट है कि हमारा एक दुर्दम शत्रु  
से सामना है ऐसे खेल में कोई नियम नहीं होते।  
इसमें मानव अचरण के अब तक स्वीकार्य मानक लागू  
नहीं होते .. हमें कारगर जासूसी और जासूसीविरोधी  
सेवाएँ विकसित करनी चाहिए और अपने शत्रुओं का  
उच्छेदन, अतर्ध्वंस और नाश करना सीखना चाहिए।

२ आवश्यक हो जा सकता है कि अमरीकी लोगों

२ मूलतः अप्रीतिकर दर्शन से अवगत कराया







को प्रोत्साहन देना और ऐसे राष्ट्रों तथा राज्यों की अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिज्म का प्रतिरोध करने की क्षमता और इच्छा को बढ़ाना।

“सुस्थापित नीतियों के अनुसार और जहां तक व्यवहार्य हो, उन इलाकों में भूमिगत प्रतिरोध विकसित करना और प्रच्छन्न तथा छापामार कार्रवाइयों में सहायता पहुंचाना, जहां अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिज्म का प्रभुत्व है अथवा उसकी आशंका है” \*.

निर्देश के एक विशिष्ट हिस्से में इन तथ्यों की सिद्धि में सहायक उपायों और विधियों की चर्चा थी।

“विशिष्ट रूप से, ऐसी प्रच्छन्न सत्रियाओं में प्रचार, राजनीतिक कार्रवाई, आर्थिक युद्ध, अतर्ध्वस, अतर्ध्वसविरोध, ध्वंस, पलायन, बचाव और निष्क्रमण उपायों सहित निरोधक सीधी कार्रवाई, विरोधी राज्यों अथवा दलों के विरुद्ध भूमिगत प्रतिरोध आंदोलनों, छापामार तथा शरणार्थी मुक्ति दलों की सहायता सहित ध्वंसकार्य, स्वतंत्र विश्व के सकटस्थ देशों में स्थानीय तथा कम्युनिस्टविरोधी तत्वों का समर्थन, छल योजनाएं तथा सत्रियाएं और पूर्वोन्निहित की सिद्धि के लिए आवश्यक सभी मंगत कार्रवाइयां सम्मिलित हैं।” \*\*

निर्देश ने प्रच्छन्न सत्रियाओं के नियंत्रण और अनुमोदन में महत्वपूर्ण परिवर्तन किये। कार्रवाई मध्य-

\* *Final Report* p 51

\*\* *Ibid*







आरम्भ में विशेष दल की बैठकें कभी-कभी होती थीं - सी० आई० ए० निदेशक एलेन डलेस, उनके भाई और तत्कालीन विदेश मंत्री जॉन फॉम्टर डलेस और राष्ट्रपति आइज़नहॉवर के अंतरंग संबंधों के कारण निर्णय लेने के लिए औपचारिक प्रक्रिया की आवश्यकता नहीं थी।

१९५६ से विशेष दल की बैठकें नियमित हो गयीं। इससे प्रच्छन्न सत्रिया योजनाओं के बारे में विशेष दल के अधिकार निर्धारित करने के मानदंड को और विकसित करने में सहायता मिली।

जनवरी, १९६१ में राष्ट्रपति कैंनेडी के सत्तारोहण के साथ विशेष दल की बैठकें ह्वाइट हाउस में होने लग गयीं। अब वे राष्ट्रपति के राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए विशेष सहायक मैकजॉर्ज बडी की अध्यक्षता में होती थीं (कुछ समय तक राष्ट्रपति के विशेष सलाहकार जनरल मैक्सवेल टेलर अध्यक्ष रहे थे, मगर उनके संयुक्त स्टाफ-अध्यक्ष समिति के प्रधान बना दिये जाने के बाद यह पद बडी को फिर मिल गया)।

क्यूबाई प्रतिभातिकारियों की कोचीनोस की छाड़ी (वे ऑफ पिग्ज) की कार्रवाई की घोर विफलता के बाद प्रच्छन्न कार्रवाइयों पर सरकारी नियंत्रण को दृढ़ करने के लिए कदम उठाये गये। विशेष दल ह्वाइट हाउस में अपनी साप्ताहिक बैठकें करता रहा, और राष्ट्रपति कैंनेडी को प्रस्तावित प्रच्छन्न कार्रवाइयों के बारे में अधिकाधिक प्रायिकता से सूचित किया जाने लगा। साथ ही अनुमोदन तथा नियंत्रण व्यवस्था को



तीन भागों में विभक्त कर दिया गया। विशेष दल के अलावा दो अधिशासी निकायों का गठन किया गया — एक विशेष ध्वसकार्यविरोधी दल और एक सर्वाधिक विशेष दल।

नये-नये निदेशों का सतत मिलमिला चम पड़ा। अपने अंतर्गत की दृष्टि से वे सभी एक समान थे — सभी का लक्ष्य प्रच्छन्न कार्रवाइयों की सफलता को सुनिश्चित करना था।

दिनांक १८ जनवरी, १९६३ के एन० एम० ए० ए० निदेश नं० १२४ ने एक विशेष दल की स्थापना की, जिसका मुख्य कार्यभार अर्द्ध-सैनिक स्वरूप की सक्रियाओं का संचालन था। इस निदेश ने ध्वसात्मक कार्रवाइयों के बारे में पूर्ववर्ती रा० मु० प० निदेशों का स्थान नहीं ले लिया — हुआ सिर्फ यह कि कुछ कार्य, जो पहले विशेष दल के क्षेत्र में थे, अब नवस्थापित विशेष दल २ को अंतरित कर दिये गये। इस दल के अध्यक्ष जनरल मैक्सवेल टेलर थे और मैकजॉर्ज बडी तथा मीनेटर रांडर्ट कैंनेडी उसके सदस्यों में थे।

जॉनसन प्रशासन के अंतर्गत भी विशेष दल जिसका नाम अब 'समिति ३०३' हो गया था, की

---

\* जून, १९६४ में एन० एम० ए० ए० एम० निदेश नं० ३०३ जारी किया गया। इस निदेश ने विशेष दल के गठन कृत्यों और अधिकारों में कोई भी परिवर्तन नहीं किया। अगर उसका नाम बदलकर 'समिति ३०३' कर दिया, क्योंकि उसका रेविड वाइज और टॉमस रॉस द्वारा लिखित पुस्तक *The Invisible Government* ('अदृश्य सरकार') में रहस्योद्घाटन हो गया था।



अध्यक्षता राष्ट्रपति के विशेष राष्ट्रीय सुरक्षा सहायक द्वारा ही की जाती थी। लेकिन प्रच्छन्न कार्रवाइों की योजनाओं के बनाने में मुख्य भूमिका अब हाउस हाउस में पारंपरिक मजदबारीय "सच" (मध्याह्न भोजन) अदा करने लग गये—इन "सचों" ने राष्ट्रपति जाँचगन, विदेश मंत्री डीन रस्क, प्रतिरक्षा मंत्री रॉबर्ट मैकनमारा और राष्ट्रपति के विशेष राष्ट्रीय सुरक्षा सहायक मैकजार्ज बडी की अनौपचारिक बैठकों का रूप में लिया था। कार्यालय में इन बैठकों में राष्ट्रपति के प्रेम मधिय, मी० आई० ए० निदेशक और मधुल स्टार-अध्यक्ष समिति के प्रधान भी भाग लेने लग गये जिनमें विषयनाम के विरुद्ध मी० आई० ए० की प्रच्छन्न कार्रवाइयों में मरधिन योजनाओं पर विचार किया जाता था।

१७ फरवरी १९७० को एन० एम० ए० एम० निदेश म० ६० जारी किया गया, जिनमें 'मर्मि-६०' की स्थगना की। इस निदेश ने प्रच्छन्न कार्रवाइों के बारे में सभी पूर्ववर्ती रा० मु० ए० निदेशों का स्थान में लिया। इसमें कहा गया था कि प्रचोटी सरकार के प्रत्यक्ष अन्तर्देशीय कार्यों की प्रविश्य में जो प्रच्छन्न कार्रवाइयों में अनुमति होती रहती थी।

एन० एम० ए० एम० निदेश म० ६० ने प्रच्छन्न कार्रवाइों के नियंत्रण तथा मधुलपन का पुनर्स्थापन की० बडी० ए० के निदेशक का दे दिया। वेबो के काम का अन्वेषण किया गया मुद्र नीति के साथ के प्रत्यक्ष प्रच्छन्न कार्रवाइयों की योजना बनाने की







साथ ममन्वित किये जाने चाहिए और, सामान्यतया, सबद देश में (अमरीकी) राजदूत की सहमति आवश्यक होगी।” \*

इस तरह से तीस साल से अधिक समय तक प्रचलन सक्रियता तब को बनाया और तोड़ा जाता रहा, जो अमरीकी राजनीतिक व्यवस्था का एक मूलभूत तत्व बन गया। केन्द्रीय गुप्तचर एजेंसी की गैरकानूनी और आपराधिक पहलु पर अमरीकी राष्ट्रपतियों और उनके उच्चस्तरीय सहायकों के अनुमोदन के “ठपे” लग जाते थे।

तथापि यह सोचना गलत होगा कि प्रचलन कार्रवाई अमरीकी विदेश नीति की सिर्फ अनुपूरक ही थी। बल्कि अधिक ठीक कहे, तो वे ही उसे सक्रियतापूर्वक रूप देती थी। लेग्ली के चानाक विश्लेषकों द्वारा “अदूरदर्शी” राजनीतिज्ञों को उल्लू बनाये जाने की सारी बात कल की तरह आज भी सर्वथा अविश्वमनीय प्रतीत होती है। पूरे के पूरे देशों और राष्ट्रों के विरुद्ध सी० आई० ए० द्वारा चलाया जानेवाला गुप्त युद्ध, जिसे राष्ट्रपति आइजनहॉवर द्वारा एक रिपोर्ट में “बिना नियमों का खेल” कहा गया है, अमरीकी विदेश नीति का एक अभिन्न अंग रहा है और अब भी है।

१९७५ में ह्यूड्ड हाउस में अपने को सी० आई० ए० की आपराधिक गतिविधियों से सार्वजनिक रूप







हैं और कौनसे गुप्त रखने होंगे।

इसके बारे में टीका करते हुए 'न्यूयॉर्क टाइम्स मैगेज़ीन' ने लिखा, "रिपोर्ट कोई बहुत बड़ी खबर नहीं बनी और उसने कोई जोरदार बहुत-मुदाहमा नहीं पैदा किया। उसमें सी० आई० ए० के प्रतिनिधियों की ही चली और उन्होंने ऐसी कोई बात सामने नहीं आने दी, जो किसी भी तरह से प्रच्छन्न कार्रवाइयो में कोई भी दिलचस्पी जगा सकती थी।" पत्रिका ने चर्च समिति की कार्रवाइयो को अकारण ही "अपूर्ण और अपूर्ण" नहीं कहा।

लेकिन अत्यंत सावधानीपूर्वक चलाये प्रचार अभियान के बावजूद ह्वाइट हाउस जनता को यह विश्वास दिसाने में नाकाम रहा कि प्रशासन को सी० आई० ए० के अपराधों की कोई जानकारी न थी। तथ्यों ने साबित कर दिया कि सैग्ली के कुचक्री कार्य विशेषज्ञ और ह्वाइट हाउस में रहनेवाले असल में एक ही पैती के चटे-बटे हैं।

**"मिस्टर डेथ" की आत्मस्वीकृतियाँ और मृत्यु**

याद दिला दे कि सी० आई० ए० के भीतर प्रच्छन्न कार्रवाइयो का पहला उपकरण — पिछले अध्याय में वर्णित नीति समन्वयन कार्यालय — १९४८ में स्थापित किया गया था, जिसे और कामों के अलावा "अन-गण्यार्थी मूक्ति दलों को सहायता और अधिगम



अथवा सकटस्थ इलाकों में कम्युनिस्टविरोधी दलों का समर्थन" \* भी करना था। बाद में, सी० आई० ए० की आंतरिक संरचना के विकसित होने के साथ-साथ ये हत्य अमरीकी गुप्तचरी कार्रवाई कार्यालय के हाथों के भीतर स्थापित एक विशेष प्रभाग के सुपुर्द कर दिये गये।

बुदरती तौर पर इस तरह के "नाजुक" कार्यों को क्रियान्वित करने के लिए सी० आई० ए० को सुशिक्षित कर्मियों की आवश्यकता थी और उसने इस आवश्यकता को अविलंब पूरा किया। संयुक्त राज्य अमरीका में, और बाद में, विदेशों में, आतंकवादियों, अंतर्ध्वंसकों और हत्यारों को प्रशिक्षित करने के लिए विशेष अट्टे और शिविर स्थापित किये गये। उनमें विशेष सक्रिया प्रभाग के नियमित कर्मियों और इसी प्रकार तथाकथित अर्द्ध-सैनिक सक्रियाओं अथवा अन्य "नाजुक" कार्यों में इस्तेमाल किये जानेवाले विदेशी जेदों तथा भाड़े के सैनिकों को भी प्रशिक्षण दिया जाता था। \*\*

ऐसे ही एक शिविर में प्रशिक्षित भूतपूर्व सी० आई० ए० एजेंट फिलिप एजी ने अपनी पुस्तक 'कपनी राज सी० आई० ए० की डायरी' में उसका इस प्रकार वर्णन किया है

\* *Final Report* --, p. 144

\*\* Victor Marchetti and John D. Marks *The CIA and the Cult of Intelligence* Alfred A. Knopf, New York, 1974, p. 124



“ प्रशिक्षण केंद्र घने जंगल में है और ऊंची जमीरदार बाड़ों और बाटेदार तारों में घिरा हुआ है, जिन पर जगह-जगह आमानी में दिखायी देनेवाले 'सरकारी आरक्षित क्षेत्र। अनधिकार प्रवेश वर्जित' के चेतावनी पट्टे लगे हुए हैं। केंद्र की उत्तरी सीमा न्यूयार्क नदी है और वह स्वयं कठोर नियंत्रणाधीन क्षेत्रों में विभाजित है, जिनमें हवाई... तथा समुद्री सक्रियाओं में प्रशिक्षण देने की अलग-अलग स्थनियां हैं।

“ किसी निपिद्ध क्षेत्र में सुरक्षित घुसपैठ कर सैन्य के बाइ अवेले एजेंट या पूरी टोली को कई तरह के काम करने पड़ सकते हैं। अक्सर घुसपैठिया टोली का कार्यभार किसी गुप्त स्थान में हथियार, संचार उपकरण अथवा अतर्ध्वंस सामग्री छिपाना होता है, जिसे बाद में वहां पहुंची कोई दूसरी टोली खोज निकालेगी और उसका प्रयोग करेगी। अथवा घुसपैठिया टोली तटस्थस्थली पर कई दिन, सप्ताह या महीनों बाद शियाशील होनेवाली दाहक अथवा विस्फोटक युक्तियों को रखकर अतर्ध्वंस कर सकती है। अतर्ध्वंस आयुधों में मोटर-गाड़ियों को जाम करनेवाले तेल तथा पेट्रोल संप्रुपक, छपाई मशीनों को ठप्प करनेवाले संप्रुपक, जहाजों को डुबोने वाली मुरगे, विस्फोटक तथा दाहक यौगिक भी सम्मिलित हैं। अतर्ध्वंस प्रशिक्षकों अथवा 'जनाने-उड़ानेवालों' ने अपनी क्षमताओं के प्रभावोत्पादक प्रदर्शन किये हैं, जिनमें से कुछ कार्रवाईया इतनी चतुराई की हैं कि वे अपने पीछे मुश्किल से ही कोई



गुप्त छोड़नी है।” \*

ऐसे ही विनोब पाट्यक्रम के एक और ‘स्नातक’ ने अपने प्रशिक्षण के बारे में ‘रैपर्दम’ पत्रिका को विचार से इस प्रकार बताया है

“अर्द्ध-सैनिक विद्यालय का घोषित लक्ष्य हमें उन शर्मण कमानों के शिक्षक बनने के लिए प्रशिक्षित और सज्जित करना था, जो छापामारों से अपनी रक्षा करना चाहते थे। मैं इसमें विश्वास कर सकता था ..

“लेकिन फिर हम सी० आई० ए० के ध्वंसकार्य प्रशिक्षण मुख्यालय में जा पहुँचे और यही हमें ऐसी युक्तियों तथा कामों में प्रशिक्षित किया गया जिनकी जेनीवा सम्मेलन से शायद ही कोई संगति थी।

“हमें जिन अनेक विधिवर्जित शस्त्रों से परिचित कराया गया, उनमें लगते ही फट जानेवाली गोलियाँ, आवाज न होने देनेवाली युक्ति से सज्जित मशीनगने, हस्तनिर्मित विस्फोटक और नपाम भी थे

“और फिर एक ऐसी डैनानी ईजाद भी थी, जिसे लघु तोप कहा जा सकता है। यह युक्ति एक मुनम्य विस्फोटक से भरे इस्पात के नतोदर टुकड़े से बनी थी। उसे पेट्रोल की टकी के साथ इस तरह से जकड़ दिया जाता था कि दाहक गोला टकी को

\* Philip Agee, *Inside the Company CIA Diary*, Penguin Books, Baltimore, 1975, pp 45-46, 83-84



फाड़ दे और दहकते पेट्रोल को बस की पूरी लंबाई में फैला दे, जिससे भीतर हर कोई आदमी भस्म हो जाये। यह शेष कक्षा को मुझे ही दिखाना था कि ऐसा कितनी आसानी से किया जा सकता है..

“मैं वहाँ खड़ा सपटो को बस को निगलते देख रहा था। मेरे खयाल में यही सत्य को जानने की घड़ी थी। जलते हुए लोगो से भरी इस बस का स्वतंत्रता से क्या संबंध हो सकता है? लोकतंत्र और सी० आई० ए० के नाम पर मुझे यह तय करने का क्या अधिकार है कि यो ही लोग मौत का शिकार बने?”\*

अपनी पुस्तक ‘कंपनी के राज’ में फिलिप एग्नी इमी का विस्तृत चित्र प्रस्तुत करते हैं कि विदेशों में कार्यरत और अमरीकी गुप्तचरो द्वारा निदेशित आतंकवादी गुटो को सी० आई० ए० किस सदस्यो से और किस प्रकार सम्बन्धित करती है:

“अर्द्ध-मैत्रिक सक्रियाओं से ही घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई वे विष्वक्मकारी कार्रवाइयाँ हैं, जो सारा कार्रवाई के नाम से जानी जाती हैं। गुटो के विरोध गठित करने और उनकी महायत्ना में, जिनमें विमान के लिए कभी-कभी ह्यूटी में मुक्त पुलिसवाले या मित्र राजनीतिक पार्टियों के उपवादी लोग होते हैं, बंड कम्युनिस्टो और दूसरे चरम वामपंथियों को उनके जर्म-जर्मनो और प्रदर्शनो को भग्न करने उठाने की कोशिश करने हैं।

\* Victor Marchetti and John D. Marks op. cit. pp. 111-112.







आज प्राविधिक सेवा प्रभाग इन्ही कृत्यों का निष्पादन सी० आई० ए० के विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी निदेशालय के अन्तर्गत करता है।

इस निदेशालय में कोई १,३०० लोग काम करने हैं और इसका वार्षिक बजट १२ करोड़ डालर तक है। यह निदेशालय सिर्फ सी० आई० ए० की अन्य शाखाओं के लिए आवश्यक अधिक महत्वपूर्ण सामग्रियों को समाहित ही नहीं करता है, बल्कि विशेषकर जटिल अर्द्ध-सैनिक कार्रवाइयों के लिए नये तरीकों और प्रविधियों की खोज भी करता है। सी० आई० ए० के ढाचे में तथाकथित आपूर्ति अनुभाग भी विशेष महत्वपूर्ण है। वह साज-सामान और "औजार", अर्थात् विभिन्न सत्रियाओं के लिए हथियार तैयार करता है।

अमरीकी गुप्तचरों द्वारा विदेशी नेताओं के विरुद्ध की जानेवाली आतंकवादी कार्रवाइयों से सबड अनेक विशेष मामलों की अपनी तहकीकात के दौरान सीनेट प्रवर समिति ने यह स्थापित किया कि साठ के दशक के आरम्भ में सी० आई० ए० ने सामान्य सत्रिया कार्यों के ढाचे के भीतर हत्याओं का सपठन और क्रियान्वयन करने के लिए एक विशेष प्रभाग का गठन किया था। प्रभाग का कूटनाम ZR/RIFLE था। "सामान्यरूपेण, ZR/RIFLE को हत्याओं से सबड प्रश्नों का निर्णय करना था और उसके लिए आवश्यक आधार केंद्र तैयार करना था। अधिक सुस्पष्ट शब्दों में, उसे भावी हत्यारों को प्रशिक्षित करना था और







आज प्राविधिक सेवा प्रभाग इन्ही कृषो का निपा-  
दन मी० आई० ए० के विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी  
निदेशावय के आर्गन करना है।

इस निदेशावय मे कोई १,३०० लोग काम करो  
है और इसका वार्षिक बजट १२ करोड खरब तक  
है। यह निदेशावय मिन० मी० आई० ए० की अग  
शाखाओं के लिए आवश्यक अधिक महत्वपूर्ण मापदणों  
को समाहित हो रही करण है। वार्षिक निवेदन  
वर्षिक अर्द्ध वार्षिक वार्षिकों के लिए तय तरीके  
और प्रविधियाँ की मात्र भी करण है। मी० आई० ए०  
के इतर मे सप्ताहवित्त आगुर्ति अनुभाग भी विशेष  
महत्वपूर्ण है। यह माह मासिक और "प्रोड्यूस"  
अपने विभिन्न मापदणों के लिए हयिपार मीन







आज प्राविधिक सेवा प्रभाग इन्ही कृत्यों का निष्पादन सी० आई० ए० के विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी निदेशालय के अंतर्गत करता है।

इस निदेशालय में कोई १,३०० लोग काम करते हैं और इसका वार्षिक बजट १२ करोड़ डॉलर तक है। यह निदेशालय सिर्फ सी० आई० ए० की अन्य माग्राओं के लिए आवश्यक अधिक महत्वपूर्ण मामलों को समाहित ही नहीं करता है, बल्कि विशेषज्ञ जटिल अर्द्ध-सैनिक कार्रवाइयों के लिए नये तरीकों और प्रविधियों की खोज भी करता है। सी० आई० ए० के दांचे में तथाकथित आपूर्ति अनुभाग भी विशेष महत्वपूर्ण है। वह माइ-मामान और "ओडार", अर्थात् विभिन्न मन्त्रियाओं के लिए हथियार तैयार करता है।

अमरीकी गुप्तचरों द्वारा विदेशी नेताओं के विरुद्ध की जानेवाली आतंकवादी कार्रवाइयों में सबसे अनेक विशेष मामलों की अपनी तहकीकात के दौरान सीनेट प्रकर मसिमि ने यह स्पष्टित किया कि माठ के शाक के आरम्भ में सी० आई० ए० ने सामान्य सचिव कार्यों के दांचे के भीतर हथ्याओं का मरदन और बियाम्बयन करने के लिए एक विशेष प्रभाग का गठन किया था। प्रभाग का कूटनाम ZR/RIFLE था।

सामान्यभोज, ZR/RIFLE को हथ्याओं में मरद प्रयोगों का निर्णय करना था और उसके लिए आवश्यक कष्टाकर केंद्र तैयार करना था। अधिक गुप्ततः एल्फे में इस भारी हथ्याओं को प्रसिद्धित करना था और







आज प्राविधिक सेवा प्रभाग इन्हीं कृत्यों का निष्पादन सी० आई० ए० के विज्ञान तथा प्रौद्योगिक निदेशानुसंधान के अन्तर्गत करता है।

इस निदेशानुसंधान में कोई १,२०० लोग काम करते हैं और इसका वार्षिक बजट १२ करोड़ डॉलर का है। यह निदेशानुसंधान मिर्क सी० आई० ए० की अनुशासनों के लिए आवश्यक अधिक महत्वपूर्ण सामग्रियों को ममायित ही नहीं करता है, बल्कि विशेष जटिल अर्द्ध-मैकैनिक्स कार्रवाइयों के लिए नये तरीकों और प्रविधियों को खोज भी करता है। सी० आई० ए० के ढाँचे में तथाकथित आपूर्ति अनुभाग भी विशेष महत्वपूर्ण है। वह माऊ-सामान और "औजार" अर्थात् विभिन्न सक्रियाओं के लिए हथियार तैयार करता है।

अमरीकी गुप्तचरों द्वारा विदेशी नेताओं के विषय की जानेवाली आतंकवादी कार्रवाइयों से सबूत अने विशेष मामलों की अपनी तहकीकात के दौरान सीने प्रवर समिति ने यह स्थापित किया कि साठ के दश के आरम्भ में सी० आई० ए० ने सामान्य सक्षिप्त कार्यों के ढाँचे के भीतर हत्याओं का सगठन प्रक्रियान्वयन करने के लिए एक विशेष प्रभाग का गठन किया था। प्रभाग का कूटनाम ZR/RIFLE था। "सामान्यरूपेण, ZR/RIFLE को हत्याओं में मदद प्रदानों का निर्णय करना था और उसके लिए आधार केन्द्र तैयार करना था। अधिक में, उसे भावी हत्यारों को







उत्तर: मैंने समय-समय पर कम से कम आधा दर्जन डार्ट पिस्तौले देखी होगी, क्योंकि मैं या तो प्राग्नेपिकी की परीक्षा करता था या विपाक्तीकरण विधियों की। चर्च समितिवाली उस पिस्तौल को बिजलीचालित कहा गया है। मुझे इसमें बहुत शक है। मैंने जो विद्युत पिस्तौले देखी हैं, वे चुबकीय गोलियाँ इस्तेमाल करती थी और आकार में अधिक बड़ी थीं। ..

प्रश्न: . आपने कहा था कि आपका काम बियो से ताल्लुक रखता था। यह किस तरह का काम था?

उत्तर: बुनियादी तौर पर सी० आई० ए० ने मुझसे हत्या की कई विधियाँ और युक्तियाँ निकालने के लिए कहा था। मैंने जिन भी चीजों पर काम किया, लगभग वे सभी लोगों को मारने के लिए थीं। मेरा जिन तीन मुख्य हत्या-प्रविधियों से सरोकार था, वे गोली से मारने, जहर से मारने और विस्फोटक युक्तियों से मारने की प्रविधियाँ थीं।

प्रश्न: क्या आप हमें किसी ऐसे हथियार की मिसाल दे सकते हैं, जो जहर का उपयोग करता था?

उत्तर: हाँ। छठे दशक के मध्य में मुझमें सदर्फ़ रखनेवाला सी० आई० ए० का एक एजेंट एक समस्या लेकर मेरे पास आया, जिसे वह हल करवाना चाहता था। ये बातें हमेशा परिकल्पनात्मक रूप में रची जाती थीं। मिसाल के लिए, मान लीजिये कि आप किसी को हवाई जहाज पर बिना बहुत ध्यान आकर्षित किये मारना चाहते हैं। खैर, इसका सबसे सीधा







उत्तर: जिस अवेले मौके पर उसे मुझे यह  
 "मान लीजिये" के बजाय कुछ निश्चित रूप से  
 कहना पड़ा, वह तब था, जब वह एक बाले आदमी  
 को हटाना चाहता था जो जैगुआर कार चलाया  
 करता था।

प्रश्न: हटाना ?

उत्तर: जी हाँ यह बाल को मीठी बनाने का  
 उनका भंडारा था बहरहाल, इस बाले आदमी  
 को अपनी यात्रा में एक निश्चित घड़ी पर, यह लीजिये  
 कि स्टार्ट करने के आठ मिनट बाद, माना था -  
 क्यों - यह मैं नहीं जानता फिर भी मुझे बाली  
 कुछ जानता जरूरी था - उसका बदन, वह मझा  
 तो नहीं है, लंगी ही मारी बाले। आखिर उन्होंने  
 मुझे एक जैगुआर कार का स्टीयरिंग सायर दिया और  
 कार चलाने एक आदमी का पोटी भी, जो गिर्ल  
 स्टीयरिंग पर उसके हाथों का ही था। इसी से मैं  
 जाना कि वह काया है। जाना नहीं क्यों, मगर मुझे  
 यह अर्थ हो गया।

बहरहाल मैंने एक सेल पैसा दिया और उसे  
 बस पर चढ़ा दिया। मैंने उसे को बसा, बस वह बस  
 और वह जाना जगह गया करता था। मैंने साधा लंगी  
 क्यों कि कि कि आठ मिनट में, या जो भी समय था  
 कि उसने अपना काम कर दाने। मगना है कि वे  
 समय बस हुए।

अब मैं यह कहने के कि वे बस हुए  
 बस यह है कि एक आदमी ने दिया है







उत्तर: जिस अबेले मौके पर उसे मुझमें महज "मान लीजिये" के बजाय कुछ निश्चित रूप में कहना पड़ा, वह तब था, जब वह एक काले आदमी को हटाना चाहता था, जो जैगुआर कार चलाया करता था।

प्रश्न: हटाना?

उत्तर: जी हाँ, यह बात को मीठी बनाने का उनका अंदाज था। बहरहाल, इस काले आदमी को अपनी यात्रा में एक निश्चित घड़ी पर, वह सीजिये कि स्टार्ट करने के आठ मिनट बाद, मरना था—क्यों—यह मैं नहीं जानता। फिर भी मुझे बारी कुछ जानना जरूरी था—उमका वजन, वह मझा तो नहीं है, ऐसी ही मारी बातें। आखिर उन्होंने मुझे एक जैगुआर कार का स्टीयरिंग लाकर दिया और कार चलाते एक आदमी का फोटो भी, जो गिर्ल स्टीयरिंग पर उमके हाथों का ही था। इसी से मैंने जाना कि वह काया है। पता नहीं क्यों, मगर मुझे यह अजीब लगा।

बहरहाल मैंने एक खेप तैयार किया और उसे चक्के पर बटा लगा देने को कहा, जहाँ वह आम नीर पर अपने हाथ रखा करता था। मैंने माया ऐसी रखी थी कि बिना आठ मिनट में, या जो भी समय रहा हो, उममें अपना काम कर दाने। लगता है कि वे उममें मृत हुए।

प्रश्न: आप कैसे यह मचने हैं कि वे मृत हुए?

उत्तर: बात यह है कि एक आदमी ने, जिसे मैं







यह पक्का विश्वास हो जाये कि वह मर गया है। बहरहाल, मुझे यही लगा कि मुझे विप प्रणालियों के साथ अच्छे काम का इनाम दिया जा रहा है। मुझे ऐसा इनाम नहीं चाहिए था। बाद में मैंने उस आदमी से, जिसने मुझे निमंत्रित किया था, पूछा कि यह सब क्या है। उसने बस चकित भाव से मेरी तरफ देखा और कहा, "क्या तुम्हें इसमें मजा नहीं जाया?"

प्रश्न: अभी तक हम रासायनिक प्रणालियों के बारे में ही बातें करते रहे हैं। क्या आपने उस डार्ट पिस्तौल जैसी जुगतें भी डिजाइन की थीं?

उत्तर: बिल्कुल वैसी ही तो नहीं, मगर उस किस्म की कई और चीजें। मोटरकार कांड के बाद मेरा परिचित मेरे पास एक और परिकल्पनात्मक समस्या लेकर आया: "मान लीजिये कि आप ऐसी स्थिति में हैं, जिसमें कमरे में कोई भी आग्नेयास्त्र या ऐसी कोई भी चीजें लाना असंभव हो, जो सदेह पैदा कर सकती हैं। आप कमरे में मौजूद लोगों से कैसे निपटेंगे?" कुदरती तौर पर मैंने पूछा है: "'निपटने' का मतलब क्या है?" मेरा मतलब है कि क्या आप उन्हें हटाना चाहते हैं, या अस्थायी रूप में कार्यक्षम बनाना? जान के साथ बलात्कार? जरा अश्लील होने पर भी यह फिकर मुझे हमेशा से पसंद है। खैर, इस विशेष प्रसंग में मेरे संपर्क आदमी ने कहा, "हम उन्हें हटाना चाहते हैं, पूरे ही तौर पर। पर वे औसत आकार के कमरे में खासी बड़ी समस्या में होंगे।" और मैं

तैयार की गयी दुष्टतम जुगतों में से एक















उस जगह पर जो उन सभी कामों में लगा हुआ था,  
 वहाँ से उसे निकाला जा सकता है। मस्थान में मेरी  
 पहली परीक्षाओं में एक मिनिएचर डिटोनेटर (लघु  
 डिटोनेटर) डिजाइन करना और उनकी परीक्षा  
 करना था। मुझे मालूम था कि वहाँ एक निशोरी  
 है, जिसे इन कामों की रिपोर्टें रखी जाती हैं और  
 वे निश्चित रूप से उन्हें पढ़ने के लिए जाया करता था,  
 मूँड इत्यादि कि वे मुझे दिलचस्पी लगती थी। नाभि-  
 कोन सुक्तियों से लेकर तोप प्रौद्योगिकी तक सभी कुछ  
 मेरे इस काम करने के समय प्रयोगशालाएँ तत्पर  
 में थीं और वहाँ सुमज्जित चादमारी मैदान भी था,  
 जिनमें मिनिएचर गोलियों से लेकर २२ मि० मी०  
 गोवों तक तरह-तरह के गोली-गोलों के प्रयोग किये  
 जा सकते थे। मैं छद्मदर की तरह काम करता।  
 कामकर सरदियों में मैं अलग सवेरे ही नीचे चला  
 जाता, जब अंधेरा ही होता था, और रात गये ही  
 ऊपर आता, जब फिर अंधेरा ही होता। मैंने दिन की  
 रंगनी कभी देखी ही नहीं।

क्या यह कोई गुप्त मस्थान था ?

मध्य मस्थान गुप्त नहीं था। मैं  
 था, उसका अधिकांश गुप्त था,  
 विभाग खुले अनुमोदन के लिए







के जाने के उद्देश्य द्वारा मजिद कर लेती थी।  
 दूसरा उद्देश्य यह था कि हवाई जहाजों द्वारा विशाल  
 नगरों में उन्हें बिगड़कर किसी इलाके को गन्ध के  
 लिए प्रदूषित बना दिया जाये। ये मुरये आदमी की  
 जान नहीं लेती थी। लेकिन अगर उस पर कुदम पड़े  
 तो वह फट जाती थी और पैर की एक-एक हड्डी को  
 धूर-धूर कर देती थी। दर अमल, मेरा काम उनके  
 लिए एक प्रतिक्रिया पद्धति विकसित करना था  
 और मैं भी इसलिए कि एक बैठक में मैं दो से  
 कुछ बैठ था 'भाई, अगर आप कहीं आरबो-मुम्बो  
 देखन मुरये गिरा देने हैं और बाद में उन इलाके को  
 मर करने के लिए जाने हैं, तो आप वहाँ क्या करेंगे'  
 यह हम दोस्तानो पर १९७७?







मैंने उनकी परीक्षा होने देया है, जो मचमुच एक भयानक दुन्य है।

प्रश्न: उनकी परीक्षा कैसे की जाती थी?

उत्तर: इसके लिए हमें सागो में बड़ी टांगों को लेना होता था, जो, प्रसंगिक, विद्यननाम में मारे जानेवाले लोगों की लाशें थी। उनके परिवारों से यह कह दिया जाता था कि उनकी टांगें लड़ाई में जाती रही थी। बहरहाल, हम पैर को फौजी मोझे में घुमाने और उसे फौजी बूट में डाल-देते और इनके बाद उसे एक युक्ति से जोड़ देते, जो उसे सेबल सुरंग पर १७० पाउंड (लगभग ८५ किलोग्राम) वजन के आदमी जितने बल के साथ रख देती थी।

प्रश्न: आपने शुरुआत यह कहने के साथ की थी कि आपका मुख्यतः जान लेने के तीन बुनियादी तरीकों से सरोकार था। चर्च सभिति की तहकीकात के दौरान औषधों और मादक द्रव्यों की काफी चर्चा चली थी। आपने कभी ऐसी चीजों पर काम किया?

उत्तर: जहां तक मुझे याद है, सिर्फ दो बार। मेरा संपर्क आदमी मेरे पास एक-दूसरी के भीतर रखी २७ बोतलों में बंद आधा ग्राम एल० एस० डी० लाया। मुझे यह सामान संस्थान के भोजनालय में दिया गया था। आम तौर पर उसका तौर-तरीका बड़ा रुखा-सा और सीधा हुआ करता था। मगर इस

• वह जरा उद्भिन्न था। यह छठे दशक की बात है एल० एस० डी० क्या होता है, इसके बारे में कुछ भी मालूम नहीं था। मुझे उससे कुरेद-कुरेदकर







ऐसे मैनिफो की, जिन्हे बी० जेड० दिया गया था, कुछ बहुत ही दहमानेवाली फिल्में देगी हैं। वे लोग चिलकुल कैंटेडोनी मूर्च्छाग्रस्तों (पेशियों की स्तब्धता के साथ इन्द्रियज्ञाननून्यता में प्रवृत्त) की तरह हो गये थे। वे लोग मार चुआने हुए बुनो की तरह बैठे हुए थे, जिनका अपने दैहिक कृत्यों पर कोई नियंत्रण न था। अगर कोई उन्हें "खड़े हो" या "हेलमेट पहनो" जैसा आदेश भी देता था, तो वे आपसे बाहर हो जाते थे और आदेश देनेवाले को जान में ही मार देने की कोशिश करने लग जाते थे। मैंने सुना है कि इस पदार्थ का असर हफ्तों बना रहता है।...

प्रश्न: आपने देश में आंतरिक उपयोग के लिए भी कुछ ईजाद किया?

उत्तर: मैं सोचता था कि एल० एस० डी० के काम तक मैंने लगभग जो कुछ भी तैयार किया था, वह, और हो सकता है कि वे सर्पविष कलम भी, मयुक्त राज्य में उपयोग के लिए नहीं थे। लेकिन अब मेरे खयाल में उन कलमों का यही उपयोग किया गया। मुझे यह न पूछिये कि क्यों, मगर मुझे कुछ ऐसा लगा कि उनका कोई स्थानीय उपयोग ही था।

प्रश्न: बी० जेड० के साथ आपने अब काम किया?

उत्तर: पचास के दशक के अंत में।

प्रश्न: सस्थान छोड़ने के लिए आपको किस बात ने मजबूर किया?

उत्तर: १९६० के आसपास मुझे नफरत होने लगी।... मैं बेहद दुखी था।... मेरा परिवार







मा। भालको वैसे माधुम हुआ कि वह मी० आर्टी० ए०  
का है ?

उत्तर : उमरे मुझे मी० आर्टी० ए० प्रत्यक्ष  
दिखाया था। यह एक मछ का पट्टा बना था। इसने  
अपना एक पट्टा मे असाव भी हो जाता है कि वे  
मोम देखने में वैसे लगते हैं। जब वह शम्भ आया  
तो वह ऐसा अजीब लग रहा था कि मेरी मेकेंडरी  
में रहा, 'कहा एक आदमी आया है, जो शायद  
पुनिम का है।' और वह निश्चय ही पुनिमवाला  
लगता था - पीछे जवहा, बटोरनापूर्ण आर्षे।

प्रश्न : आप इन लोगों को उनके हजिये में ही  
पहचान करने से ?

उत्तर : गैर कुछ और भी करने से। जब वह  
शम्भ आया, तो उसके साथ एक बहुत ही बुरा आदमी  
था, जो देखने में कुछ-कुछ तिम-काग जैसा लगता था।  
जब वह कुरमी पर बैठा, तो कुछ भनभनाया, तिम पर  
मैंने कुछ ऐसी टिप्पणी की थी, "आपकी परतनी  
पेटी में जो भी है, वह कोई देखने लायक चीज होनी  
चाहिए।" वह बस मुसकराया और उसने अपना  
कोट खोला और वहा ०४४ इंची मैग्मम पिस्तौल  
थी। मैंने उसके पहले या बाद में कभी कोई ऐसा  
आदमी नहीं देखा कि जो इतना बड़ा हो कि ऐसी  
पिस्तौल को परतनी पेटी में छिपा सके। बहरहाल,  
मैंने उसे देखना चाहा - उसने उसे निकाला और मेरे  
हाथ में दिया। उस पर कोई नंबर नहीं था। नंबर  
मिट गया नहीं गया था, क्योंकि कोई नंबर ही नहीं







जिसे कालीन के नीचे छिपाकर रखा जा सकता था।

प्रश्न : ऐसी चीज भला किस काम में लायी जा सकती थी ?

उत्तर : कौन जाने ? शायद विदाई पार्टियों को सजीव बनाने के लिए। जैसे कि मैं कह चुका हूँ। मुझे मरमरुच इसकी कोई सीधी जानकारी नहीं है कि इन युक्तियों में से किसे कैसे इस्तेमाल किया गया।

प्रश्न : आपने मी० आर्द० ए० के लिए काम करना कैसे शुरू किया था ?

उत्तर : जब मैं कोई १७ साल का था, मेरी एक महपाटी में दोस्ती थी, जो आग्नेयवाधों के मामले में उन्नाद था। उमे बूढ़ो-पिम्लीनो थी, मामरुच नाम्नी हथियारों की विनक्षण जानकारी थी। यह पक्का फागिम्न था। और एक दिन उमने मुझे बताया कि वह मी० आर्द० ए० के लिए काम करता है। प्रगमन, वही वह नाम था जो मुझे कराकम से गया था।

प्रश्न : क्या आप यह कहना चाहते हैं कि मी० आर्द० ए० ने आपको तब भरती किया, जब आप १७ साल के थे ?

उत्तर : लगभग उमी समय। तब मैं हाई स्कूल में था।

प्रश्न : क्या यह आम तरीका है ?

उत्तर : मुझे पता नहीं। मुझे बस इतना मायूम है कि उनके लिए हमारे भी पढ़ने में काम कर रहा था। अगर आप इस पर सौर करें कि १७ साल बितने ही छोटे विषयनाम में और हमारे लिए



मुँड में लड़े थे, तो यह उम्र कोई इतनी कम है भी नहीं। जामूसों की लोग हमेशा चालीस साल के प्रौढ़, जेम्स बॉंड किसिम के लोगों के रूप में ही कल्पना करते हैं। छोड़िये भी, वह साइक्लि पर जाता छोकरा भी अपनी बैल्ट में स्वचालित पिस्तौल खोसे हो सकता है—तो भी राष्ट्रीय सुरक्षा के बहाने। बहरहाल, मेरा दोस्त मुझे एक रविवार पाठशाला ले जाया करता था। वहाँ एक गिरजाघर था, जिसे हम आड की तरह इस्तेमाल करते थे और हम वहाँ जाकर बुनियादी शिक्षण, विचारधारात्मक शिक्षण, आग्नेयास्त्रों और विस्फोटकों, आदि में शिक्षण पाते थे।

प्रश्न : किनसे ?

उत्तर : मैं नहीं जानता कि वे कौन थे, अलबत्ता पारदर्शियों, चाटों, साहित्य, आदि से वे अवश्य अच्छी तरह से लैस थे।

प्रश्न : जब आप इतने छोटे थे, तब सी० आई० ए० आपसे क्या काम कराती थी ?

उत्तर : अधिकांशतः सायलेसर बनाने का मेरा दोस्त समय-समय पर मेरे पास आता और कहता कि उन्हें ऐसी-ऐसी पिस्तौल के लिए सायलेसर चाहिए और मैं उसे तैयार कर देता। वे इस तरह के बनाये जाते थे कि आसानी से अलग-अलग किये जा सके जिससे इस्तेमाल के बाद फेंके भी आसानी से जा सके और इसलिए भी कि आप उन्हें हवाई जहाज पर अपने सामान में ले जा सकें और कोई देखे, तो शक भी न हो सके। तैयार करने के बाद वे सायलेसर बनाने वाले को देकर चले जाते।



गाड़ियों के मायनेमरों जैसा ही होना है . एक बार मैंने एक ऐसा मायनेमर तैयार किया, जिसके पुरजे गले में पहनने की भाँसा पर लटके हुए थे, जिसमें देखने में वह आधुनिक किस्म के जेवर जैसा लगता था। सचमुच वह ख़ासा आकर्षक था। एक और साय-लेसर मैंने छेददार जापानी सिक्को से बनाया था ..

प्रश्न : और हाई स्कूल के बाद आप उस संस्थान में गये ?

उत्तर : हा, विस्फोट करके चीजों को उड़ाने रहने और ऐसी ही और शरारतों के कारण हाई स्कूल से निकाल दिये जाने के बाद। पहले मैंने संस्थान में काम किया, फिर दगा-नियंत्रण साधन बनाने की कंपनी में, उसके बाद खुद अपनी फर्म में, और, आखिर में, आग्नेयास्त्र निर्माता के यहाँ।

प्रश्न : लेकिन आपने कहा था कि जब आपने आग्नेयास्त्र कंपनी में काम शुरू किया, तो उस समय आपका सी० आई० ए० से कोई संपर्क नहीं था।

उत्तर : शुरू में नहीं। लेकिन एक दिन कंपनी में काम करनेवाला एक आदमी मेरे पास आया, जिसने कहा कि मेरी “एक दिलचस्प भेंट” होगी। और मेरे पास पाँच लोगों का एक दल आया और हमने बातचीत की। उन्होंने अपना परिचय नहीं दिया, मगर जो कहा जा रहा था, उससे मैं समझ गया कि वे सी० आई० ए० के हैं। बहरहाल, वे ज्यादातर नए हैं। बातों की ही टोह ले रहे थे : “आप क्या रहे हैं ?” “कहा काम कर रहे हैं ?” एक नये



प्रकार के सपकों की स्थापना हुई। असल में ज्यादा  
 औपचारिक। इस बीच मेरे अनुरोध पर मेरे काम में  
 एक जनरल मैनेजर को भी सम्मिलित किया गया।  
 सारे काम को मैं अकेला ही नहीं कर सकता था।  
 मैं सिर्फ अनुसंधान ही करना चाहता था। मुझे  
 स्पष्ट निर्देश दिया गया कि किसी भी और को इस  
 तरह के काम के बारे में हरगिज पता नहीं चलना  
 चाहिए। सी० आई० ए० का दिया हुआ पहला ही  
 कार्यभार सास्ता बड़ा था। मुझे एक गुटका तैयार करनी  
 थी, जिसे मैंने 'शैतान की छाया' का नाम दिया।  
 यह गुटका हाथ से गढ़े जानेवाले हथियारों से संबंधित  
 गुटका का ही सिलसिला था, मगर उसमें विस्फोटक  
 और गोला-बारूद के तत्त्वों के बजाय विशेषकर  
 रासायनिक तथा जैविक अस्त्रों और प्रणालियों के  
 इस्तेमाल के बारे में बताया जाना था। यह ऐसे लोगों  
 के लिए लिखी जाती थी, जिन्हें हाई स्कूल स्तर के  
 अधिक रसायन का ज्ञान नहीं है। मैं आपको ईमानदार  
 से अभी ही बता दू कि मैं इस सारे विचार के बहुत  
 पक्ष में नहीं था। मैं यह महसूस करने लगा कि एक  
 जगह सग्रहीत करने के लिए यह सचमुच खतरनाक  
 जानकारी है। मतलब यह है कि ऐसी गुटका, जो  
 अगर कहीं बाहर चली गयी और आतंकवादियों के  
 किसी टोली के हाथ लग गयी, तो वह उन्हें बहुत  
 कम ही समय और कम से कम धन लगाकर बड़े  
 बड़े शहरों को नियंत्रण में ले लेने और बरखाद त



मिला, " निधिये। एक ही प्रति। कोई कार्बन प्रतिलिपि नहीं। "

इसलिए पहले मैंने जो किया, वह था पादप विषों का सर्वेक्षण। पादप विष इतने सारे हैं कि गिन चकरा जाता है। सबसे आम पौधे भी, जिन्हें आप अपने घर के अहाते में ही पा सकते हैं, उचित समाधान किये जाने पर बहुत घातक विष उत्पन्न कर सकते हैं जिनका आमांसी में पता नहीं चलाया जा सकता मेरे सपाज में मैंने गुटका में कोई ६० पौधों भी उनको उपयोग में लाने में संबंधित निर्देशों का समावेश किया था। एग्जम्पल उममें बहुत मुश हूई।

इसके बाद मैं जैविक प्रणालियों पर आया मैंने कई सकारक लोगों के जैव उत्प्रेरक गुणों पर जि जिना किमी नाम दिक्कत के उत्पन्न किया जा सक है। इसकी सख्या मामी बड़ी है। बेशक अपने बच के लिए कुछेक सख्त पूर्वोपाय करने होंगे है, नहीं आप अपना ही सफाया कर बैठेंगे। यह बहुत सख्त सखा है।

बहरहाल, मैंने यह सब विष इकट्ठा और भेज दिया और वे बेहद मुश हुए। फिर उन्होंने यह 'अब आप सामाजिक हिम्मे और प्रणालियों का सकते हैं।' और सब मैंने अत्यंत साधारण मामी का उपयोग करने हुए उन पदार्थों का बनाने पर काम किया।

प्रश्न: अगली कुछ पता है कि उन्हें यह इकट्ठा किए कार्रवाई हो?







एक नाव बड़ी डाँटगन भी, माम माफिया के लोगों जैसी ही, जिसकी कुल लंबाई १८ इंच (लगभग ४६ सेंटीमीटर) थी और जो वही उपकरण फलक के नीचे छिपी हुई थी।

प्रश्न: सी० आई० ए० का अगला अनुरोध क्या था ?

उत्तर: मैंने बैठे-ठाले यो ही एक विशेष २२ इंची ( ५६ मि० मी० ) रिम-फायर गोली\* विकसित करने की बात कही थी। सी० आई० ए० ने इसमें बहुत दिलचस्पी ली और कहा, "क्या आप ऐसी गोली विकसित कर सकते हैं, जो विस्फोटक क्षमता को बहुत ज्यादा बड़ा दे?" यह विशेष २२ इंची गोली वास्तव में एक अतिलघु विलंबित क्रिया बम थी।... इन गोलियों के पहले बैच को खुद मैंने सायोनिक सायलेसर लगी हाई स्टैंडर्ड पिस्तौल से चलाया था। मेरा संपर्क एक २००० पन्ने की टेलीफोन डायरेक्टरी को पिछले आगन में ले गया और मैंने उस पर कोई १५ फुट की दूरी से गोली चलायी। और गोली ने उसमें इतना बड़ा छेद कर दिया कि आप अपनी मुट्ठी घुसा ले। उसने कोई ज्यादा शोर भी नहीं किया—वस, धप्प की सी अजीब आवाज। गोली में ऐसा मसाला भरा गया था कि उसकी गति अवध्वनिक रहे, ताकि कम शोर पैदा करे। "हे भगवान, हैरत की चीज है!" मेरे

---

\* रिम-फायर ( विस्फोटक ) गोली—ऐसी गोली है, जो निगाने पर पड़ने पर विस्फोट पैदा करती है।—सं०















गदगी पैदा करती है।" इसलिए मैंने कुछ ऐसी गोली तैयार की, जिनमें बहुत ही कम मनाला था और बहुत ही कम आवाज करती थी। उनकी गति बड़ी कम थी। जब ऐसी गोली प्रवेश करती, तो उन एक सिरा फट से घुन जाता और आप जो भी वह शरीर में इंजेक्ट हो जाता। इनमें से कुछ गोली हिमशुष्कित नागविष भरा हुआ था। कुछ में ब्यास सर्पविष भी था। मैं यह विलकुल भी नहीं समझ रहा था कि सी० आई० ए०-वाले विषयुक्त गोली आखिर चाहते क्यों हैं। मुझे लगा कि मेरा जेम्स बॉन्ड सरीसृह लोगो से पाला पड़ा है, जो बस नयी-नयी जुगतें ही चाहते हैं। उन्हें वह गोली बहुत पसंद आई और बहुत सुविधाजनक लगी।

प्रश्न: बहरहाल, वह खासा परिष्कृत हथियार था। क्या आपने उससे भी अधिक परिष्कृत हथियार बनाये ?

उत्तर: हा। सवाल फिर परिकल्पना रूप में रखा गया था "अगर कही आप किसी ऐसी जगह में जा फंसे, जहां आप शत्रु, कामोन्मत्त अत्यान्वी बीतो से या बेरहम जंगली भीड़ से घिर जाये, तो आप क्या करेंगे?" मैंने खासी अक्ल दौड़ायी। आखिर मैंने कहा, "शोनाफेक हथियार मनोवैज्ञानिक दृष्टि से बहुत कारगर होने हैं। जेवी आकार का शोनाफेक बनाने का भी कोई तरीका निकाला जा सकता है।"

यह विचार उन्हें बहुत दिलचस्प लगा। लेकिन हमारे पास इस तरह के जो रूढ़ साधन थे, उनके







का आरम्भ तब हुआ, जब मैंने आग्नेयास्त्र बपनी के लिए काम करना शुरू किया। .. मेरी लोगों को, जिनमें मैं खुद भी आ जाता हूँ, जान से मारने की चीज़ें बनाने की बनिस्वत जीने में कहीं ज्यादा दिलचस्पी थी। कुछेक अवसरों पर मैं अपने को करीब-करीब उड़ा ही बैठा था।

प्रश्न: यह सोचकर कि हो सकता है, यह कोई संयोग न था, आप कभी पैरानाईड (मनोविभ्रमप्रसन्न) तो नहीं हुए?

उत्तर: बेशक, मगर अपना ध्यान रखना जरूरी है, नहीं तो आप पागल हो जायेंगे। बहरहाल, मैं शारीरिक और मानसिक रूप से इस हद तक निश्चिंत हो गया था कि किसी न किसी चीज़ का जवाब दे जाना अवश्यभावी था और तभी मुझे दिन का दीर्घ पड़ा। एक मान बाद लगभग उमी दिन मुझे दिन का दूसरा दीर्घ पड़ा। तीन महीने बाद मैं काम पर वापस गया, मगर अत्यंत ही जाने के पक्के इरादे में ही।

मेरे खयाल में यह मेरे औपचारिक रूप में काम में अत्यंत होने के कुछ ही दिन बाद की बात है कि पा कोन आया और मैं एक सी० आई० ए०-खाने में मिला। और कहने की यह वक़्त मेरे स्वास्थ्य के बारे में ही कुछ-नाउ कर रहा था। मगर उनकी दिव्यवणी मेरे सामाजिक जीवन में थी। जानने है न, बहुत अगाध, अनीतिवार्तिक-में प्रश्न, मगर यह सब अगमामन्य था। सो मैंने कह दिया वक़्त, मैं हथियारों का काम और







प्रश्न : उनके साथ आपकी आगिरी मुनाफ़ा कौनमी थी ?

उत्तर : आगिरी मुठभेड़ तब हुई , जब मेरी बीबी का ध्यान इस तरफ़ गया कि उनका पीछा किया जाता है। यह पहली बार था कि जब उमने महसूस किया कि कोई हर वक़्त उनके पीछे लगा रहता है और वह डर गयी। बस , इसी ने सब कुछ तय कर दिया। मैंने फोन किया और दो सी० आई० ए०-वालों से.. एक रेस्तरां में भेट निश्चिन की। मैं अंदर गया और बैठ गया। उन्होंने पीने के लिए कुछ मयवांस और मुझसे पूछा कि क्या मैं भी पीना चाहता हूँ। मैंने कहा , "शुक्रिया , नहीं ; मैं बस एक बात कहने यहाँ आया हूँ , जो यह है अत्यंत सन्धेप में—अगर आप . मुझे निगरानी में रखना और इस तरह का आचरण करना जारी रखते हैं कि जैसे मैं किसी राजनीतिक बकवास में शामिल हूँ , सासकर अब , जब कि आपने मेरे परिवार को भी उसमें घसीट लिया है , तो मैं आपको अब यहाँ खरे-खरे बता रहा हूँ कि मैं लेगली की सैट्रल एयर कडीशनिंग प्रणाली में छिपाये YX के कनस्तर को उड़ा डालूंगा। . अगर मेरे साथ या मेरे परिवार के साथ कोई भी असाधारण बात होती है , तो मैंने व्यवस्था कर रखी है कि यह बिस्फोट हो और वह होकर रहेगा। " और मैं उठा और बाहर निकल आया।

प्रश्न : आप भासा दे रहे थे ?

उत्तर : नहीं , मैं सच कह रहा था। मैं जीवरासायनिक







स्तम्भ में आतंकवाद का यह लोमहर्षक और उत्तेजक खुला आह्वान सी० आई० ए० द्वारा पिछले पचीस वर्षों में पैदा किये गये और पोषित एक छोटे से, मगर घातक गुट द्वारा किये जानेवाले दुष्कृत्यों में सिर्फ सबसे ताजा ही है," अमरीकी पत्रिका 'वॉर्ल्ड एक्शन इन्फॉर्मेशन बुलेटिन' ( 'प्रच्छन्न कार्य सूचना पत्रिका' ) ने इंगित किया।

"दो दशकों से," पत्रिका ने आगे कहा, "क्यूबाई निर्वामित-अतिवादी पश्चिमी गोलार्ध में लगभग प्रत्येक और यूरोप तथा अफ्रीका में भी अनेक सनसनीखेज आतंकवादी कार्रवाइयों के केंद्र में या केंद्र के निकट रहे हैं। पुलिस सूत्रों का विश्वास है कि इस दल के केंद्र में कोई १०० लोग हैं, जो न्यूयॉर्क, न्यूजर्सी, मिचिगन और प्लेटो रोको में निर्वामित समुदायों के भीतर बिछे हुए हैं। मगर वे ऐसे लोग हैं, जो एक-दूसरे को पचीस साल में जानने हैं, उनमें घुमपैठ करना बहुत मुश्किल है। उन्होंने वेनीज़ो के साथ चार महाद्वीपों पर हमला किये हैं और लोगों को अपाहिज रिया और जान में मारा है। .

"मानवें दशक भर और आठवें दशक में भी बारी समय तक इस क्यूबाई निर्वामित जागसूत्र ने सी० आई० ए० और उसके सहयोगियों के लिए न केवल क्यूबा पर अमध्य हमलों में, जिनमें कोबीनोस की बारी ( वे आतंक निम्न ) का विफल हमला सबसे उल्लेखनीय है, बल्कि बार्गो और विषयनाम में भाटे के मैजिरो की तरह, वाटरगेट के प्लांटों की तरह, और बिने



की दीना (DINA) तथा ऐसी ही अन्य गुप्त सेवाओं के, जो सभी कभी न कभी सी० आई० ए० द्वारा काम की गयी थी और उसकी कठपुतलिया है, भाड़े के हत्यारों की तरह काम किया है।

"लेकिन सी० आई० ए० और एफ० बी० आई० (फेडरल ब्यूरो ऑफ इन्वैस्टीगेशन - सघीय अन्वेषण कार्यालय) तक को यह अनुभव हो गया है कि उन्होंने एक फ्रैक्साइन दानव\* को पैदा किया है। विदेशों में आतंकवाद की निंदा करने में तनिक भी कोताही न करनेवाली अमरीकी सरकार दुनिया के एक सबसे दुष्ट आतंकवादी संगठन को आश्रय दे रही है। ये लोग खतरनाक, पेधेबर मुजरिम, किराये के हत्यारे और मादकद्रव्य विप्रेता हैं। वे न सिर्फ क्यूबा के लिए ही जो वास्तव में पूर्णतः सुरक्षित है, बल्कि समुक्त राज्य अमरीका में क्यूबाई समुदाय की भारी बहुसंख्या के लिए भी, जो उनसे कोई सरोकार नहीं रखना चाहते और उन अमरीकी तथा विदेशी नागरिकों के लिए भी खतरनाक हैं, जिनका क्यूबा के साथ कारबार हो सकता है।

"साठ के दशक के आरम्भ से इन आतंकवादियों ने एजेसी की छत्रछाया में अपने विस्फोटक पदार्थों के उपयोग में, ध्वंस और चम-निर्माण में और एजेसी के

\* फ्रैक्साइन - अपेक्ष से अधिक मेरी बीबी के १८१० में लिखे एक उपन्यास का नामक, जिसके बिब के आधार पर परिवर्तन बहुत सी दहशत फिल्में बनी हैं। भस्मासुर की ही भांति फ्रैक्साइन



कथा गण्य भाने मारिजा मकड़ों के डगिअ अड्डाग और  
हमता की बचाओ में मरगल पायी। उन्होंने वाणिज्य,  
अर्थोना इटमी और अन्य राजनयिकों की हत्या  
की है। उन्होंने बार्बेटो में एक क्यूबार्ड पाकी विमान की  
आराध में ध्वज किया है, जिस पर मवार मनी लें  
मर गये थे।

“और हान के मशीनों में उन्होंने क्यूबा के मर  
किमी भी तरह के मार्क के विन्द मीथा हन्ना बेन  
दिया है। उन्होंने न्यूयॉर्क में क्यूबार्ड मयुक्त राष्ट्र निगम  
और वाशिंगटन में क्यूबार्ड रिज विभाग पर बम फेंके  
हैं, उन्होंने इसी कारण यात्रा एजेंसियों पर बम फेंके  
हैं; उन्होंने क्यूबा के बारे में सहानुभूतिपूर्ण कथनों के  
लिए अभिचारों पर बम फेंके हैं, उन्होंने क्यूबा की  
दवाइयों के भेजे जाने का विरोध करने के लिए  
न्यूजसी में एक औपचारिक तक पर बम फेंके हैं।”

पत्रिका आगे लिखती है, “उनकी अकेली ग्वनी  
यह धृष्टतापूर्ण विश्वास था कि वे वाशिंगटन तक  
में, जो परंपरा से राजनयिकों के लिए एक निरापद  
आश्रयस्थल रहा है, बेसीफ हत्याएं कर सकते हैं।  
सितंबर, १९७६ में ओरलादो सेतेलियेर और उनके  
सहायक रोनी मोफित्त की वाशिंगटन के केंद्र में हत्या  
ने न्याय मंत्रालय को इस जालमूच के खिलाफ बरा  
सक्रिय कार्रवाई करने को विवश कर दिया। क्यूबार्ड  
आतंकवादियों ने दिखाया दिया था कि अमरीकी सरकार  
का अपने द्वारा ही सर्जित दानव पर अब कोई नियंत्रण  
नहीं था। चार छूटभेये पकड़े गये और दंड के भागी







हवाई मोर्चों को खसकी दी। तुमने कहा, 'इन आन्दोलनों को जल में नदी मानने का मत जो कबूतर मानने हम वग उनही दिशों को इशारा कर देते।

स्वातंत्र्य आन्दोलनात्मक तत्कार - जैह स्ट्राइन ने न्यूयार्क राष्ट्रिय मीटिंग्स में कहा है वे अज्ञान एवं भ्रम में इन आन्दोलनों का, विशेषकर उनमें न्यूयार्क में रहनेवालों का, मुख्य विशेषण दिया है। युनियन गिटी, न्यूयार्क, में एक सत्र में क्यूबाई राष्ट्रवादी आन्दोलन का मार्चरनिज मुख्यालय स्थित है। मीटिंग्स में मोर्चों मागेव इमी दल का मदम्य था। उनमें १९६४ में कमीन्स, न्यूयार्क, में ईस्ट नदी के पार मयुक्त राष्ट्र मण भवन की एक छिदकी पर बहुरा से मोना पेरा था, जब बहा से गेवारा मौजूद थे। इस मण्डन के मदम्यों की बड़े मादकद्रव्य व्यापार के साथ और पिछले कुछ वर्षों के दौरान लगभग सभी अनमुक्तभी क्यूबाई आन्दोलनादी कार्रवाइयों के साथ जोड़ा गया है। यद्यपि इन कार्रवाइयों में से अधिकांश को दो दलों, 'ओमेगा-७' और 'कमांडो-७' ने अपनी कार्रवाइयाँ बताया है, फिर भी अधिकारियों को पक्का विश्वास है कि ये दोनों ही क्यूबाई राष्ट्रवादी आन्दोलन के महज दूसरे नाम हैं। वस्तुतः 'कावर्ट एक्शन' में स्ट्राइन ने इसके पर्याप्त दस्तावेजी सबूत पेश किये हैं और इस सिलसिले में सघीय तथा स्थानीय अधिकारियों को भी उद्धृत किया है, जो उनसे सहमत हैं।

"यह सारी सूचना उपलब्ध होने पर भी अधि-







‘कॉवर्ट एक्शन इन्फॉर्मेशन बुलेटिन’ ने ज्ञान बताया, “अमरीकी अधिकारी कोई दृढ़ कदम उठाने का इरादा नहीं रखते—क्यूबाई प्रतिशक्तिकारियों की बड़ी पूछ है और यदि राष्ट्रपति तथा विदेश मंत्री के वक्तव्यों को ध्यान में रखा जाये, तो अमरीकी प्रशासन ने क्यूबा के संदर्भ में एकदम शत्रुतापूर्ण रवैया अपनाया हुआ है। सैग्ली के लोग, जिन्होंने क्यूबा के विरुद्ध आतंकवादी कार्यों की योजना बनायी है, भविष्य में काफी व्यस्त दिनों की अपेक्षा कर सकते हैं।... विना में अमरीकी राष्ट्रपतियों ने फीदेल कास्त्रो की हत्या के प्रयासों में किसी भी तरह से अमरीकी सरकार का हाथ होने से साफ इन्कार किया था, यद्यपि उन्हें निस्संदेह, बहुत कुछ मालूम था। वर्तमान प्रशासन अपने धुले तौर पर आश्रामक क्यूबाविरोधी वस्तुओं पर गर्व करता प्रतीत होता है।” \*

पहले यह सब ऐसा लगा करता था। (हम यह उद्धरण ‘न्यूयॉर्क टाइम्स’ से दे रहे हैं) :

“सीनेटर फ्रैंक चर्च ने आज बतलाया कि सैम्युअल ईटैलीजेंस एजेन्सी ने तीन राष्ट्रपतियों के प्रशासनो में प्रधान मंत्री फीदेल कास्त्रो की हत्या करने के वास्तविक प्रयास किये थे।

“सीनेट की गुप्तचर्या विषयक प्रवर समिति के अध्यक्ष ने कहा कि समिति के समक्ष ... इवाइट हाउस







नेताओं की हत्या के प्रयासों के बारे में तूटन बरत कर एक सैन्य प्रकाशित हुआ था। हम उसे यहाँ कुछ स्रोतों में दे रहे हैं।

“अमेरिकी मॉनिटर की प्रवर ममिति के अनुसार ब्यूरोई शानि के नेताओं की हत्या करने की कई कोशिशें की गयी हैं। लेकिन हमारे पास फ़ॉरेन के विस्मय कम से कम २० हत्या प्रयासों का, और उनके मैट्रन इंटेलीजेन्स एजेंसी द्वारा निदेशित किये जाने वाले एक-एक करके दिये जाने और सज्जन के तब







मोरचा नामक प्रतिशक्तिकारी संगठन के एक एजेंट का क्यूबा में चोरी से आगमन हुआ, जो अपने साथ प्रधान सेनापति फीदेल कास्त्रो की हत्या करने के सी० आई० ए० के आदेश को लेकर आया था।

यह आदेश हुआन बर्मीगालुपी होर्नेदो, हिगीनीओ मेनेदेस बेलवान, गीलेर्मो कोऊला फेरर तथा अन्यो द्वारा कार्यरूप में परिणत किया जाना था।

उन्होंने कल्जादा-दे-राचो-बोयेरोस और साता-कतलीना सड़को के चौराहे पर हत्या करने की योजना बनायी। इस काम में इस चौराहे पर स्थित एक मोटरकार धुलाईखाने के मालिक को उनकी सहायता करनी थी। इसके लिए कई कारे, एक छोटा ट्रक, दो बजूकाएँ, फ़ैगमेटशन बम\*, मशीनगने और दूसरे हथियार मीके पर पहुँचा दिये गये, इनमें से ज्यादातर धुलाईखाने के पास ही जमीन के एक खाली टुकड़े में छिपाकर रक्खे गये थे।

पकड़े जाने पर गीलेर्मो कोऊला और हिगीनीओ मेनेदेस ने कबूल किया कि षड्यंत्र को सी० आई० ए० द्वारा निदेशित किया जा रहा था। षड्यंत्रकारी सी० आई० ए० अधिकारियों के साथ संपर्क रखते थे, जो उन्हें गुआनतानेमो स्थित अमरीकी नौमैनिक अट्टे और क्यूबा में एक पूजीवादी देश के दूतावास के जरिए निर्देश और माज-सामान पहुँचाते थे।

४. जुलाई, १९६१ के उत्तरार्ध में तीस नवंबर,

\* फटने पर छोटे-छोटे टुकड़ों में बट जानेवाला बम। - सं०







५. कोचीनोस की खाड़ी की मुहिमबाजी की विफलता के बाद सी० आई० ए० ने हमारे देश के विरुद्ध अपनी प्वसात्मक कार्रवाइयों को बढ़ाया और तेज किया और बिखरे हुए प्रतिशानिकारी समूहों का प्रतिरोध मध्य नामक समूहों के इर्द-गिर्द पुनर्गठन करना शुरू किया।







अधिकारियों ने इन योजनाओं के कार्यान्वयन के लिए पड़्यत्रकारियों को बड़ी मात्रा में सैनिक साहज-नामक और गोला-बारूद मुहैया किया।

अंड्रे में मौजूद अमरीकी अधिकारियों ने कई हथियार भेजे जाने में सक्रिय भाग लिया था, जो पड़्यत्रकारियों की गिरफ्तारी के समय उनसे बरताने किये गये।

६. अक्टूबर, १९६१ में एस्केब्रे का दूसरा मोर्चा और जातिकारी पुनर्स्थापना आंदोलन नामक प्रति-जातिकारी संगठनों ने सी० आई० ए० के निदेशन में क्यूबाई राजधानी में अतर्ध्वस करने की एक नवुन योजना बनायी, जो जानबूझकर नगरवासियों में नाराजी पैदा करने की ओर लक्षित थी, जिनका राष्ट्रपति ओस्वाल्दो दोर्तीकोम की समाजवादी देशों की यात्रा से वापसी के अवसर पर उनका स्वागत करने के लिए बड़ी मस्या में एकत्र होना अवश्यभावी था।

प्रतिजातिकारियों की योजना भूतपूर्व राष्ट्रपति ग्रामाद के मामले स्वागत मभा के दौरान फीदेल रात्रो तथा जातिकारी सरकार के दूसरे नेताओं पर बहूराए बनाना था। इस योजना को पूरा करने का दायित्व सी० आई० ए० एजेंट अतोनीओ बेसीआना (विक्टर) पर था।

यह योजना ४ दिसंबर को कार्यान्वयन की जानी थी। हमने पहले २६ दिसंबर को तोडफोड की कई चार्जवाइया की जानी थी, मगर यह माडिन







७ १९९३ के आरम्भ से मी० आई० ए० के गुप्तानुमाननमो नीमैनिक अट्टे में निर्देश गकर प्रविष्टिगर्णित होई मूर्द्धम गुप्तों काव्यों में तथाकथित कथित रक्षाई गप की स्थापना करने के उद्देश्य में कुल प्रविष्टिगर्णित रक्षा और गगदनों का पुनर्गठन कर गुरु किया।

गुप्तों काव्यों कार्य-योजनाओं को तैयार करने और हथियार तथा मात्र-मान्यता प्राप्त करने के बल नीमैनिक अट्टे में कायम रिये गये मपकों के बारे में सूचित करने के लिए उबेनों सोमेम पेना, राऊन के हेनरिग, राऊन केय हिम्पन तथा और सोमो से निरा

मी० आई० ए० क्यूबाई जाति के नेता की हत्या करने और गुप्तानुमाननमो नीमैनिक अट्टे पर हमने के लिए भडकावा देने की अपनी योजनाओं में विरत नहीं हुई। उसके आदेशों पर चलते हुए कुएवों काव्यों ने तीन अन्य संगठनों से संपर्क स्थापित किया और तथाकथित जेड योजना को तैयार करना शुरू किया।

योजना यह थी कि क्यूबाई जाति के नेताओं में से एक की हत्या कर दी जाये और उसके बाद सारे ही नेताओं की, जो स्वाभाविकतया भूतक की कतोल कब्रिस्तान की तरफ शवयात्रा में शामिल होते, एक साथ हत्या कर दी जाये।

हत्या प्रयास के पहले लक्ष्य के रूप में विदेश मंत्री







बपानीभोनी उसमे घुड़ना है कि बरा सब है  
फोड़ने बाम्बो होइये से अमर भावा करने है।  
कहना है कि उसके पास चाँद के देवा की हवा हवा  
की ' बोट बटिया भीत्र ' है।

मनचय ? " दूसरा प्रतिक्रियाशील गुण है।  
यह भीत्र है पापक विपक्षे बंगमय। "

और अगर वे अगर न को, तो ? "

" दूसरा मरणा ही नहीं उठना ' बपानीभोनी  
बपानी है मृते से अमरीतियो ने दिये है। "

और वह जीवन से बंगमय देवे को बरा  
ही बपानी है चाँद वह अमर विरा है  
सब ।







इसके अन्तर्गत सामग्रीयों सहक पर गिनाए  
 किये जाने पर भी हमारा किया जाना था और ऐ  
 कर के लोड-फोड की कई कार्रवाइयों की जाती थी।  
 इस मामले की तकलीफ और हिरामन में नि  
 र्देशों से गुप्त-नाम से यह गिना हुआ कि इस दौरान  
 के लोड, आर्द, ए.० का अनुमोदन प्राप्त था और क  
 उत्तर सामग्रीयों गिनाए और गृहानामों में मौजूद  
 होने की कमान की जानकारी में निगरानी की गयी थी।  
 इस मामले में गिरफ्तार किए जानेवाले में सर्व  
 प्रमुख थे मुईन खोद खोदीगम मन्नादेन - राष्ट्रीय  
 मन्नेर, कारिगरी गुनम्पानना आशोयन सीटने  
 ...नेने मोरना - राष्ट्रीय मन्नादेन मोदीनी







इस प्रयास में रेने मिगलर साचेस एबीब्रान, हेसूस माताने दे ओका कूज, ओस्कर सिबीता सोटीअ और एलीसर रोडीगेस स्वारेस के नेतृत्व में चार गुप्त को भाग लेना था। इग्रहीम माचीन हेनदिस इन सभी गुटों का नेता था।

गिरफ्तारी के समय इन लोगों से बहुत बड़ी मात्रा में सी० आई० ए० द्वारा मुहैया किये गये हथियार और गोला-बारूद बरामद किये गये।

१२. सितंबर, १९६३ में राजकीय सुरक्षा विभाग को पता चला कि आतंककारी एकता के आंतरिक मोरचे और "तीन ए" संगठनों के सदस्यों ने आतंक रक्षा समितियों की स्थापना जयन्ती समारोह सभा में मंच को विस्फोट द्वारा उड़ा देने की योजना बनायी है। इस कार्य के लिए ६० पाउंड प्लास्टिक विस्फोटकों (सी-४) का प्रयोग किया जाना था।

सुरक्षा विभाग के अधिकारियों ने पड़ोसियों को तुरंत गिरफ्तार करने का आदेश दिया। ओर्नादो मार्तीनीआनो दे ला कूज साचेस, हुआन इसराएल कसान्यास लेओन, हेसूस प्लासिदो रोडीगेस मोस्वेरा, लुईस बेल्वान आरेनसीबीआ पेरेस, फ्रासीस्को अनातो दे लास कुएतोम, इजीनियर फेदेरीको हेनदिस मजानेम तथा अन्य प्रतिआतंकियों को गिरफ्तार कर लिया गया। इन लोगों का हमारे देश में निवास करनेवाले फ्रासीसी नागरिक, सी० आई० ए० एजेंट पियरे आबेन दीएम दे ऊरे में संपर्क था, जिन्होंने कबूल किया कि







पर सैन्यी के नये कार्यभारों की पूर्ति करने के लिए आपस में वित्तीयकरण हो गया। ये मगडन सी० आई० ए० के लिए आर्थिक और सैनिक सूचनाएं एकत्रित करने लगे।

सी० आई० ए० के निदेशानुसार नेमैन्सो कूबील्यास पेरेस, एन्हेन मीग्वेल आरेनमीबीआ विदास, रोलादो गाल्दोस रासोला, अल्फोंसो तोर्केमादा तेदेरो, मरिनो बैलाक वाल्देस तथा अन्य प्रतिशक्तिकारियों ने फीदेल कास्त्रो की हत्या करने की तैयारियां करना शुरू किया।

यह प्रयास ११ वीं सड़क पर किया जाना था, जहां राष्ट्रपति के सचिवालय की प्रधान और मन्त्रिपरिषद् की सचिव सेसीया साचेस का निवास था।

पकड़े जाने पर इन लोगो ने पूरी तरह से इकठ्ठा कर लिया और सी० आई० ए० के साथ अपने सपनों को स्वीकार किया।

१५. जनवरी, १९६५ के आरंभ में हूलीओ ओमार फूज सेसीलीस, फेर्मीन गज्जालेस कार्बान्ते और हिराल्दो रेनाल्दो दीएगो सोलानो नामक प्रतिशक्तिकारियों ने, जो राष्ट्रीय मुक्ति सेना के सदस्य थे, सांतीआगो दे लास वेगास में फीदेल कास्त्रो की हत्या की एक और योजना को अंतिम रूप देना शुरू किया।

कुछ समय बाद उन्होंने पुरानी योजना को त्याग दिया और एक नयी योजना तैयार की, जिसे ३१ जनवरी को, लातीनो-अमेरिकानो स्टेडियम में बेसबॉल







बरामद हुए। एक टॉमसन सबमशीनगन, एक ३८ पिस्तौल, एक ६ मि० मी० स्टार पिस्तौल, एक दूरदर्शी लक्ष्यदर्शीयुक्त रेमिंग्टन राइफल और कार्ट्रिज और सगठन के कागजों से भरे तेरह बक्से।

१७. राजकीय सुरक्षा अभिकरण १९६२ से राष्ट्रीय पुलिस के भूतपूर्व प्रधान और रामोन घाऊ सान मार्तेन की सरकार के समय शत्रुतापूर्ण गतिविधि कार्यक्रम के प्रमुख मारीओ सलाबारीआ अगिलार पर नजर रखे हुए था।

मई, १९६५ में पता चला कि सलाबारीआ ने एक टेलीफोन कंपनी से एक ट्रक खरीदने की बोझिल की है और वह उसके लिए १०-१२ हजार पेसो देने को तैयार था।

उसकी योजना यह थी कि ट्रक पर ३० या ५० मि० मी० व्यास की मशीनगन लगा दी जाये और पहला मौका मिलते ही उसमें प्रधान सेनापति फीदेल काम्रो की हत्या कर दी जाये।

मारीओ सलाबारीआ सी० आई० ए० में उसके एजेंट डॉक्टर बेर्नार्दो मीनानेस सोपेस के जरिए, जो एक आतंकवादी गुट का प्रधान था, संपर्क रखता था। जब डॉक्टर सोपेस मरे गया, तो सलाबारीआ ने उसमें अपने भाई हुनीओ ने, जो मीयामी में रहता था, संपर्क करने का अनुरोध किया, ताकि वह ( ) मारुतो बरोना से सान करे और फीदेल के लिए आर्थिक सहायता मांगे।







जब यह योजना विफल हो गयी, तो सी० आई० ए० ने फीदेल कास्त्रो की हत्या के एक और प्रयत्न के लिए प्रतिक्रांतिकारी टोनी बरोना को बहरा के कैपस्यूलो का एक और पैकट दिया।

पोलीता को सी० आई० ए० से इसी प्रयोजन के लिए इसके अलावा विशेष कारतूसों सहित सायलेंटगन विभिन्न हथियार भी प्राप्त हुए थे। ये हथियार उन्हें तब बरामद हुए, जब वह जून, १९६५ में पकड़ी गयी।

राजकीय सुरक्षा अभिकरणों ने इन योजनाओं के समय रहते ही परदाफाश कर दिया और पड़्यनर्शादि को गिरफ्तार कर लिया।

१६. सी० आई० ए० के निदेशन में कमांडोन-एक और तीस नवंबर आदोलन नामक प्रतिक्रांतिकारी संगठनों को, जिनके समुक्त राज्य अमरीका में अपने प्रतिनिधि थे, विशेष सशस्त्र जहाज तैयार करने का काम दिया गया, ताकि उनकी सहायता से १९६५ के मध्य में क्यूबा में घुमपैठ करके ध्वसात्मक कार्रवाइयों की जा सके।

लेकिन बाद में योजना को बदल दिया गया और ध्वसात्मक कार्रवाइयों के लिए लोगों की घुमपैठ कराने के बजाय जहाजों से देश के राष्ट्रपति साधी ओम्बान्दो दोन्तीकोम के निवास, छात्रों के मीरामार भट्टने और रिबीएरा होटल पर गोलाबारी करने का निश्चय किया गया। इस अपराधिक कार्य को मगन्न करने के







हत्या की इस योजना की तैयारी में मैट्टि के क्यूबाई दूतावास के कर्मचारी होसे लूईस परते गत्यारेता और आल्वेर्तो ( "एल लोको" ) नाम के भी शामिल थे।

आर्तीमे ने क्यूबेला से अपनी मुलाकात में जे प्रधान सेनापति फीदेल कास्त्रो की हत्या के बाद अगले घंटे के भीतर शुरू होनेवाले आक्रमण के लिए उद्धार हथियार और लोग मुहैया करने की गारंटी दी।

हवाना लौटने के पहले गजालेस गत्यारेता ने क्यूबेला को दूरबीनी लक्ष्यदर्शी और सायनेमरकुस रायफल दी, जो उसके पकड़े जाने के समय बंद और हथियारों और गोलाबारूद के साथ उससे बरामद हुई।

गत्यारेता और आल्वेर्तो ब्लाको को भी गिरफ्तार कर लिया गया।

२१- १७ मार्च, १९६७ को क्यूबाई सैनिक प्रहरियों ने फेलिक्स अस्मेन्मीओ त्रेप्पो, विल्फेदो मार्तिनिज दीआस और गुस्तावो अरेसेस अल्वारेस नामक प्रतिक्रान्तिकारियों को घर दबोचा, जिन्होंने मद्रास राज्य अमरीका से आकर कायो-फागोमी के इलाके में चोरी में घुमने की कोशिश की थी।

उनका मुख्य कार्यभार क्यूबा के प्रधान मंत्री की हत्या करना और प्लास्टिक विस्फोटकों का उपयोग करके बाकायदा तोंटफोड अभियान छेड़ना था।

इन सभी कार्यों का उद्देश्य विदेशों में यह छाप देना करना था कि देश में अवरुद्ध व्यवस्थाविवर्धन























देहानो के 'प्रशमन' की नीति का ही विवर्तन था। यह 'प्रशमन' प्रांतीय निरीक्षण दल नामक टोर्नमें द्वारा किया जाता था, जिनमें अनियमित दक्षिण वियतनामी गैरिक काम करने थे, जो आवाद इराजों पर ताजीरी हमले किया करते थे। इन दलों (अर्थात् अधिक सटीक शब्दों में बहे, तो मगसत्र चरम दक्षिण पथी गिरोहों) की सहायता के लिए ४४ प्रांतीय जंक पडताल केन्द्र (प्रत्येक प्रांत में एक) थे, जिनके ईर्ष्याचारी अपने सदिग्ध देशवासियों को व्यवस्थित तरीके से यंत्रणाएँ देने थे।

“लेकिन कुछ लोग इन उपायों को बर्दाश्त हो कारगर समझते थे। इसलिए कोल्बी ने नेतृत्व और रणनीतिक योजना के पहलुओं पर सावधानीपूर्वक सोच-विचार करने के बाद फीनिक्स कार्यक्रम तैयार किया। कार्यक्रम में दक्षिण वियतनामी पुलिस और गुप्तचर सेवाओं और इसी प्रकार दक्षिण वियतनामी और अमरीकी सैन्य दलों की भी शिरकत सन्निहित थी। १९७१ में सीनेट समिति के सामने साक्ष्य देते हुए कोल्बी ने स्वीकार किया कि फीनिक्स कार्यक्रम के क्रियान्वयन के दौरान २०,५८७ 'सदिग्ध व्यक्ति' मारे गये थे। साइगोन सरकार यह संख्या ४०,६६४ बतलाती थी। वास्तविक संख्या चाहे कुछ भी हो, तथ्य फिर भी यही रहता है—२०,००० का मारा जाना—यह हर सूरत में जनसहार ही है। साथ ही अमरीकी सशस्त्र सेनाओं और उनके दक्षिण वियतनामी सहयोगियों द्वारा नागरिक आबादी के विरुद्ध नेपाम, श्वेत फॉस्फोरम,







यह प्रश्न सैनिक गुप्तचर सेवा के एक सेना \* पूछा गया था, जो युद्धबंदियों से पूछ-ताछ करने के लिए इकाई में मन्तव्य था। इस राज्य ने हजारों विपक्षनामियों को यशना देने और उनकी हत्याओं के हिस्सा लिया था।

कम से कम १८ लोगों ने इस सैनिक गुप्तचर इकाई से संबंधित जाच के दौरान गवाही दी। उन सभी ने स्वीकार किया कि उन्होंने नागरिकों और

---

\* रणक्षेत्र में प्रयुक्त होनेवाला पीप्री टैलीफोन। - ४०

\*\* *Counterspy*, Vol 3, No. 2, 1976, p. 61.







इस कायाधर्म में इस मी० गु० दम्ते के दो बच्चे  
 भगवान् थे - कप्तान नार्मन और कप्तान राँवर्ट। कप्तान  
 नार्मन को मी० गु० दम्ते को यह आदेश देने कहा  
 गया है कि "कैदियों से गुप्तता पाने के लिए जो भी  
 मन में आवे करो, क्योंकि यह रणक्षेत्र में जीने  
 के लिए महत्वपूर्ण है। भिन्न कोई निशान मत छोड़ो।"  
 कई मी० गु० सदस्यों ने इसकी गवाही दी कि उन्होंने  
 स्वयं नार्मन को कैदियों को घबरा देने देखा है। कप्तान  
 नार्मन मी० गु० दम्ते का अकेला सदस्य था, जिसे  
 गवाही देने से इन्कार किया। कप्तान राँवर्ट ने... "उबानी  
 स्वीकार किया कि उसने विषतनामी कैदियों के साथ  
 दुर्व्यवहार करने में भाग लिया था" ... और कहा  
 उसने विषतनामियों के विरुद्ध पूछ-ताछ के बटोर  
 १ का उपयोग करने की अनुमति दी थी।







क्या था। वे विनाश भवन थे, जिन्हें मी० आर्० ए० ने गूँथ-गाँठ कर्माँ, हवापानी अमरीनी और विनाशक कर्मचारियों के कार्यालयों, आदि के साथ ग्रंथेंक रूप में बनाया था। भेदधर्मा में गिवाय कुछ शब्दों के, जो बाल करनेवाले मी० आर्० ए० कर्मों की पद्धति को प्रकट करने हैं, कुछ भी नहीं बदला गया है।

“मी० आर्० ए० कर्मों: मैंने खुद नैतिकता के अर्थों में कभी नहीं सोचा। मुझे आदेश मिलना कि यह किया जाना है, और मेरे काम का आख्यान तो सदियों की मिट्टि से होता था। सो मैं उसे बरबाद ही रहता। लेकिन अगर किसीने किसीको जान से मारने का कार्यभार मेरे सामने रखा होता, तो बेझक







होने थे, क्योंकि इन लोगों के माथ बाव यह है कि उनकी मानमिकता हमारे मानमिकता में भिन्न है। वे लोग विनम्र बहणी हैं। वे इन प्राणीय पूछ-ताछ केंद्रों का, जो हमारे क्षेत्राधिकार और नियंत्रण में थे, गारे विनम्रनाम में दिंदोरा पीटा करते थे... वेन आधा वक्त एक प्राणीय पूछ-ताछ केंद्र से हमारे से जाने में लगता था, और, कमम भगवान की, मैं यह सारा काम बेदाडा, सफाई में और सनीके में करवाता था। एक बार किसी प्रात में कुछ विनम्रनामियों का पीट-पीटकर मलीदा बना दिया गया। इसके लिए कभी कोई मजूरी या आज्ञा नहीं दी गयी थी। हम दुनिया भर का तूफान सडा कर देते, पर सब बेनूर था, पत्थर की दीवार से बात करने जैसा था।

“इन लोगों (विनम्रनामियों) की मानमिकता ही यह है कि वस डडे और जवरदस्ती से सब ठीक हो जाता है। इसके अलावा वे आपस में एक-दुसरे से नफरत करते हैं और, ज्यो ही मौका मिलता है, पीट-पीटकर एक-दुसरे का मलीदा बना डालते हैं। सी० आई० ए० को बहुत अधिक दोष का भागी बनना पड़ा। मगर हम पर अकेली जवाबदेही इस बात की है कि हमने इन केंद्रों को स्थापित किया। बेशक, प्राणीय पूछ-ताछ केंद्रों को, जिन्हे विशेष शाखा पुलिसवाले चलाते थे, पैसा और परामर्श देना हमारे कार्यात्मक क्षेत्राधिकार में था। विशेष शाखा पर भी हमारा कुछ नियंत्रण था, क्योंकि हम उसे आयता और पैसा देते थे। मगर जहां तक यंत्रणा







इसकी व्याख्या है वह उम हिम्म का आदमी है जिसे अधिकार और प्रभाव की जगहों में उतर कर दिया जाना चाहिए। वह उम हिम्म का आदमी है, जो किसी भी मीनेट ममिनि के सामने सब को बोलेंगा। फिर भी वह साफ़ ऐसा आदमी है, जो अपने बच्चों को प्यार करता है, जो अपने मतों को करीने में सकारना है। आप उसमें बातचीत करें तो आपको वह सामा मोहक भी लगेगा। हमारे दम में, वह कोई मन्निष्कहीन स्वचालित सब नहीं जीना-जागना इन्मान है। लेकिन वह सी० आई० ए० के लिए अपने काम को व्यक्तिगत नैतिकता के सिद्ध भी अहमाम में पूर्णतः अनग रखना है।

“वह समय आ गया है कि हम सब इन सब के कामों के लिए, जो दुनिया भर में हमारे नाव में किये जा रहे हैं, अपने को भी उत्तरदायी माने। हम अपने रेडियो की आवाज को चाहे कितना ही ऊँचा क्यों न कर दे, आश्चर्यकर हमें लोगों की चीखों को सुनना ही पड़ेगा। समय आ गया है कि सी० आई० ए० के गुप्त कार्यों का अंत किया जाये और संयुक्त राज्य अमरीका को अंतर्राष्ट्रीय कानून और शालीनता का कम से कम न्यूनतम मानदंड तो मानने को विवश किया जाये।

“संयुक्त राज्य अमरीका इस तरह की कार्यवाहियों से ही जल्दी अलग हो जाये, उतना ही बेहतर







देगुने में भी बड़ा बर्तन, अघ्यातक, पादरी, ईसा  
 डाक्टर ही लगने हैं। यानी मित्रा उनके और मंड कु  
 जो यह अंगन में है - देन के प्रधान जामून, र  
 तक मी० आई० ए० के गुप्त अथवा 'अवैत र्व  
 निदेशानुय के उपनिदेशक ।

"मैनिक अफमर एवरिज कोन्वी की एन  
 सतान विनियम कोन्वी के जामूमी कैरिब  
 सबसे विवादाम्पद अथ उनकी वियतनामी प्रशमन कर्  
 वम में महभागिता में सबद्ध है। . इस कार्यक्रम  
 एक हिस्सा यह मन्त्रिया है, जिसे फीनिक्स का बूटल  
 दिया गया था. , जिसमें वियतनामियों को एना  
 जाना, कैद में रखा जाना, स्वपञ्चत्याग और शा  
 जाना शामिल था।

"कट्टर रोमन कैथोलिक, ४२,००० डॉलर  
 सालाना पानेवाले परियामी सरकारी कर्मचारी, अपने  
 चार बच्चों के स्नेही और कर्तव्यपरायण पिता  
 वकील की हैसियत से वह नागरिक जीवन में अपने  
 तीन गुना अधिक कमा सकते थे, जितना सरकारी  
 नौकरी में पाते हैं। 'मगर', वह कहते हैं, 'इसने  
 मुझे वह सतोष न मिल पाता, जो यह काम मुझे  
 देता है।" \*

कोल्बी को जो काम "सतोष" देता था, वह  
 किस तरह का था, इसकी भूलक 'सी० आई० ए०  
 फाइल' नामक पुस्तक में उद्धृत सीनट समिति की  
 १) के विवरणों से पायी जा सकती है:







में स्थानीय मुख्या सेनाओं का निर्माण, आत्मरक्षा दलों में उपयोग के लिए दक्षिण के लोगों को गाना माग हथियारों का दिना जो एक ऐसा कार्य है कि जिसे करने का मह मेरे गयाम में, कई सरकारें शायद ही बटोर पाए।

"इसमें गावों और ग्रामों को विकसित करने प्रांतीय चुनावों का और उनके निर्वाचित अधिकारियों गता सौपने का कार्यक्रम भी शामिल था। इसने स्व अधिकारियों को इन्नाको में आर्थिक विकास के में निर्णय लेने का अधिकार दिया। इस तरह के ही कार्यक्रम थे, जिनमें, प्रसंगत ऐसे एक-दो त में अधिक वियतनामियों के प्रलोभन, अंगीकरण पुनर्वासन का कार्यक्रम भी था। जो वियतनाम साथ रहे थे और जिन्होंने सरकार के पक्ष में जाने फैसला किया था और जिन्हें अंगीकृत किया गया उन्होंने जो कुछ भी किया था, उसके लिए दक्षि नहीं किया गया। इस कार्यक्रम में लाखों शरणार्थियों का अंगीकरण और पुनर्वासन और सुरक्षा व्यवस्था के सुधारने के साथ उन्हें अतः गावों को लौटाना भी शामिल था। और इसमें फीनिक्स कार्यक्रम भी था, जिसे उस कम्युनिस्ट तंत्र के नेताओं का पता चाने की दृष्टि से तैयार किया गया था, जो दक्षिण वियत

---

\* शब्द- वियतनामी कम्युनिस्ट। यह शब्द दक्षिण वियतनाम । आंदोलन और उसके छापापारों के लिए प्रयोग में था। -सं०







हमी) . और दूसरे, इसलिए कि बिना किसी मूल प्रदान कर सकता है, जब कि मुग्धा लग कुछ दे नहीं दे सकते। " \*

बिना कैदियों में मूलना किम तरह में उनका जानी थी. यह फीनिक्स कार्यक्रम के एक विशेष विक्टर मार्चनी ने 'पेट्टाउम' परिवार को एक श्रेष्ठ में बनाया है।

" प्रश्न : कोन्ची कैसे आदमी है ?

" उत्तर : कोन्ची बहुत ही खतरनाक आदमी है। मेरे खयाल में उनकी मानसिकता हाइनरिख हिमर" जैसी है. वह उस तरह के आदमी हैं कि जो मैं आई० ए० जैसी एजेसी नहीं, बल्कि यचना निर्ण के संचालन के लिए ज्यादा अधिक उपयुक्त है।

" प्रश्न : वियतनाम में जवाबी आतंक कार्यक्रम उन्होंने ही ईजाद किया या न ?

" उत्तर : हा, वे लोग दूसरे गांव में जाने और वियतकांगो - अथवा सदिग्ध वियतकांगो - का पता बनाने और उन्हें मार डालते अथवा पकड़ लाते, मचना देते, उनसे पूछ-ताछ करते और उनके हमदर्दों के दिनों में दहशत बैठाते थे ..

" एजेसी से निकल आने के बाद मैंने वियतकांग से लौटकर आनेवाले लोगों से सुना कि हम ऐसी-ऐसी चीजे किया करते थे कि जैसे कैदी के कान में

\* *The CIA File*, Ed by Robert L. Borosage and John Marks, Grossman Publishers, New York, 1976, pp. 188-190.

\*\* हिटरसाही जर्मनी में श्रेष्ठ प्रमुख। - सं०







रूप में कोई अपराध किया है। वे हमेशा इतने व्यस्त होते हैं कि औरों के जरिए काम करें। आम तौर पर काम जितना ही ज्यादा गंदा होता है, उमरे उत ही ज्यादा हाथों में बंटने की संभावना होती है। प्रश्न सैनिक सक्रियताओं में आपको आम तौर पर एग्जैम्पल सवमशीनगने लिये हवाई जहाजों से बूदकर निराल नहीं दिखायी देंगे। आम तौर पर यह काम करनेवाले हमेशा कोई भूतपूर्व मैरीन सैनिक, कोई मुहिमवाला या कोई भाड़े का सिपाही ही होगा, जो किसी इन्फैन्ट्री सक्रियता के बाद बचा रह गया था... इसलिए हम जैसी चीजों, इन बेहद गंदी चीजों के साथ बातचीत है कि यह साबित करना लगभग असंभव है कि उसे एग्जैम्पल ने किया है।

“प्रश्न: क्या विलियम कोल्बी फीनिक्स कार्सन के अंतर्गत हुई हत्याओं के लिए अपने नैतिक उत्तरदायित्व का अनुभव करेंगे?”

“उत्तर: नहीं, बेशक नहीं। फीनिक्स कार्सन के प्रति उनका दृष्टिकोण सत्त्वन वही होगा, जो मिमाल के लिए, उस जनरल का होगा, जो हर दिन बी-५२ बमवर्षकों को भेजकर गांव के बाद गांव को नेमननाबूद कर हावता है और सैकड़ों लोगों को बी-५२ के धाड़ उगार देता है। इस तरह का आदमी प्रत्येक नियम-धरम बगैरह करेगा। वह अपने बच्चों को भुट न खोलने या घोषा न देने की शिक्षा देगा। प्रश्न आप गुंटे, ‘आप कैसा काम करते कर गाने हैं?’ से कह करेगा, ‘मे आदिशो का गायन कर रहा हूँ।’







द्वीप-समूह में हुआ, जहाँ उन्हें पचास के दशक के आग में फिलीपीन के रक्षा मंत्री रमोन मैगासैस के सलाहकार की तरह भेजा गया था। अमेरिकी सरकार की सुरक्षा निधियों के लाखों डॉलरों के बूते पर लैमडेन के काम में लग गये और जल्दी ही उन्होंने छात्रों से लड़ने के लिए एक छोटी सी, सुप्रशिक्षित सेना बना कर दी। इसके अलावा उन्होंने फिलीपीनी नागरिक कार्य कार्यालय की भी स्थापना की, जिसका विद्रोहियों के विरुद्ध मनोवैज्ञानिक युद्ध के क्षेत्र में उपयोग करने का इरादा रखते थे। यह मनोवैज्ञानिक युद्ध कैसा था, इसके बारे में लैमडेन ने १९३९ स्टैनले कार्नोव नामक पत्रकार को स्वेच्छया बताया था।

“एक मनोवैज्ञानिक सन्ध्या में फिलीपीनी देश में अधविश्वासजन्य भय-असुभाग नाम के पौराणिक पिशाच के भय-का उपयोग किया गया। उस देश में एक मनोयुद्ध टुकड़ी आती और इस आशय की अपवाहों फैला देती कि त्रिग जगह कम्युनिस्टों का अड्डा है, वहाँ एक असुभाग रहता है। अपवाहों का दृष्ट\* समर्थकों में गूँव फैल जाने देने के बाद मनोयुद्ध टुकड़ी बागियों के लिए घात लगाकर बैठ जाती। जब दृष्ट गन्धी दल उधर में गुजरता, तो घात के बैठे लोग उनमें से आखिरी आदमी को दबोच लेते, उसकी गन्धन में दो छेद कर देते, उसे हिटलर

\* निर्भीकी छलाकार। - म.







प्रस्ताव सबूत पड़े थे। इस कुत्सित काल में  
 योजना — अर्थात् इन दम्पाद्वयों को इस तरह से दान  
 कि त्रिगमे के बनेछो को उपभोग — का समय दिवस  
 है। अभी कुछ ही महीने पहले 'न्यूयार्क टाइम्स' के  
 'पैदागान दम्पाद्वय' प्रकाशित की थी। इन दम्पाद्वयों  
 के 'टाइम्स' में प्रकाशित रूप में, त्रिमे पैदागान से  
 ही आया बनाया जाना था, १९६३ की गरमियों के  
 उत्तरार्ध में, दीएम बंधुओं के मारे जाने के ठीक पहले,  
 जो कुछ हुआ था, उसका एक विस्तृत और उपजा  
 हुआ विवरण था। इन दम्पाद्वयों को ध्यान से पढ़ने  
 वाले किसी भी व्यक्ति को आसानी से पता चल जाता  
 कि सी० आर्दी० ए० इस योजना से अनिच्छित सबूत

\* म्वालेरीशा भादोनेस, पूर्वोक्त रचना, पृ० ६३।





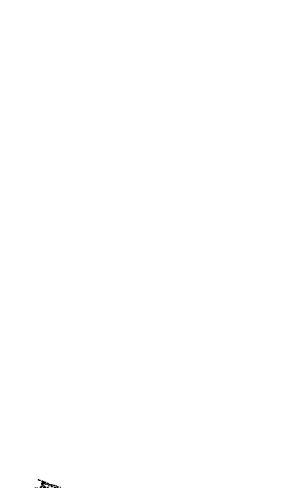


की कोई टिप्पणी या वर्गीकरण मझ्या नहीं थी और उन्हें एक 'गूँचीय' व्यक्ति में हमारे 'मूचनों' व्यक्ति को हाथ में गढ़ाया जाना था... इन बातों में ऐसी-ऐसी बाने गुनकर बही गयी थी कि 'दीएम' में हम भर पाये' और 'दीएम परिवार से पीछा छुड़ाने का कोई रास्ता निचाला जाना चाहिये'।

“इन बातों के परिणामस्वरूप वाशिंगटन में सी० आई० ए० कार्यालय में इस दृष्टि से माइगोन से जरूरी पूछ-ताछों का मिलमिना चला कि दीएम के विरोध का जायजा लिया जाये, यह जाना जाये कि उसकी शक्ति कितनी है और सम्भाव्य नेत्रों में से कोई बेहतर रहेगा या नहीं।

“सी० आई० ए० में, जिसने दीएम को सत्ताश किया था और एक दशक से ज्यादा तक दीएम के लिए 'देश के पिता' की छवि बनाने की कोशिश की थी, इसके बारे में जबरदस्त मतभेद था कि उनके साथ क्या किया जाये। एक पक्ष उन्हें बनाये रखना और उनकी भागों को समर्थन देना चाहता था। दूसरा पक्ष इसके लिए तैयार था कि उनसे पीछा छुड़ाया जाये और किसी और के साथ फिर गुह्राण की जाये। निकटवर्तियों को यह लगता था कि जनरल दुओंग वान मीन्ह दीएम परिवार के बाद सबसे अच्छा विकल्प रहेगा। और लोग अपेक्षाकृत शांत और सम्भव अधिक विश्वसनीय जनरल न्गूएन स्यान्ह के पक्ष में थे। वाशिंगटन में इन दो जनरलों को तरजीह दी जाती थी। साइगोन में भी कई लोग उनके पक्ष में थे। इस







सभाध्य नये नेताओं से अधिकाधिक घनिष्ठ संपर्क स्थापित करने का आदेश दिया।... इस स्थिति में दीएम के प्रवर रक्षा दल के विघटन को और भी त्वरित किया। फिर, हवाई अड्डे तक चले जाने के बाद, दीएम बंधु किन्हीं कारणों से, जिन्हें कभी स्पष्ट नहीं किया गया है, अचानक लौटकर अपनी कार में बैठ गये और महल की तरफ वापस खाना हो गये। उन्होंने खेल के नियमों को नहीं समझा होगा।..

“वे ऐसे महल में लौटकर आये, जो मुश्किल शहर की तरह खाली था। कुदरती तौर पर उनके रक्षा दल के सभी लोग अपनी जान बचाने के लिए भाग गये थे। कुछ मिनटों के लिए दीएम बंधु अपने कक्षों में जाकर कुर्सियों पर बैठे। मगर आखिर उन्होंने महसूस कर लिया कि क्या होनेवाला है और एक भूमिगत सुरंग की तरफ चले। कुछ ही समय के भीतर वे दोनों मर चुके थे।” \*

वाशिंगटन ने अपने एक कठपुतले को इस तरह से राजनीतिक रंगमंच से अलग कर दिया। दीएम बंधुओं को बुहार फेंकने के बाद सी० आई० ए० ने ह्वाइट हाउस के सभी आदेशों का बिना चूंचपड किये पालन करने को तैयार नये, अधिक उपयुक्त उम्मीदवारों को तलाश करना शुरू किया। लेन्गी के सर्वज्ञाना विदेशों को अभी यह नहीं मालूम था कि इसमें निर्णायक भूमिका निभानेवाली जनता का होगा, कि इस राष्ट्र को पुनर्जन्म







अमरीकी सेनाओं के सदा-मदा के लिए हटाये गये की माग को लेकर आंदोलन छेड़ दिया। मार्च, १९७१ में नयी थाई ससद में समाजवादी पार्टियों के वृत्त ब्लॉक ने कई प्रस्ताव पेश किये, जिनमें कम्युनिस्ट पार्टी को वैधता प्रदान करने की और मुख्य उद्योगों का राष्ट्रीयकरण करने की अपील भी शामिल थी।

धीरे-धीरे थाइलैंड में अधिकाधिक लोग अमरीकी राजनीतिक विस्तारवाद के लिए उत्तरदायी अमरीकी अभिकरणों के देश से निकाले जाने के आंदोलन में अधिकाधिक सक्रिय होते जा रहे थे। अनेक जनसंगठनों और विशेषकर छात्र संगठनों ने थाइलैंड में अमरीकी शांति कोर की मौजूदगी का यह आरोप लगाते हुए विरोध किया कि उसके सदस्यों का सी० आई० ए० के साथ घनिष्ठ संबंध है ... सामान्य जनवादी और अमरीकाविरोधी आंदोलन के विराट् पैमाने ने थाइलैंड के दक्षिणपंथी हलकों को बेहद आगर्षित कर दिया। अक्टूबर, १९७६ में सेना में प्रतिस्निग्धवादियों और बूर्जुआजी के अमरीकासमर्थक अंगों की सहायता से दक्षिणपंथियों ने सरकार का तख्ता उलट दिया और देश में सैनिक अधिनायकत्व स्थापित कर दिया।

१९७६ का साल, जब थाइलैंड में प्रतिस्निग्धवादियों ने अपना हमला शुरू किया, देश के इतिहास में एक त्रासक मोड़ का चोक्क है। चरम दक्षिणपंथी अंगों और संगठन प्रतिस्निग्ध के एक दशतम उपांग के रूप में आया। इसके सदस्यों ने प्रगतिशील







सक्रिया कमान ( जिसे बाद में आंतरिक सुरक्षा कर्तव्य कमान का नाम दिया गया ) की स्थापना की गई थी।\* इस कमान का मुख्य विभाग सक्रिया निदेशन था, जो सैयद केंद्रपोल के अधीन था। यह निदेशन आंतरिक उपद्रव नियंत्रण विशेषज्ञों के एक छोटे दल से बना था। ये लोग कम्युनिस्टविरोधी परमाणु गुटों की स्थापना में सक्रिय थे। बाद सरकार में ही की प्रमुख हैमिपल उसके अमरीकियों और विशेष गी० आर्डी० ए० के साथ चनिष्ठ संबंधों की बनी ही थी। उसका सर्क आदमी फिर ही मिला था जो मार्टिन का विप्लवविरोधी मामलों का विशेष सहायक और उच्चस्तरीय गी० आर्डी० ए० अधिकारी था। विगत में वह विभिन्न देशों में गी० आर्डी० ए० केंद्रों का प्रमुख और विप्लवनाम में अमरीकी राष्ट्रपति विप्लवविरोधी मामलों का महायुक्त रह चुका था।

१९६६-१९६८ में ही मिल्वा ने अनेक घाम गल मण्डलों को घाम-गुरुता बल नामक एक मण्डल में एकीकृत कर दिया था। जो बाद में सैयद की इच्छा के अन्तर्गत गी० आर्डी० ए० निधिओं में समा जाने लगे। हमारे अन्तर्गत सैयद और ही मिल्वा ने रिमानों के मित्रों की बाह्य सेने के लिए राष्ट्रपतिविह बने टोर्निया भी बनायी। रिप्लवनाम की ही आर्डी० ए० इस तरह की टोर्निया गी० आर्डी० ए० के कर्तव्य

\* रक्त George K. Tanham, *Trust in Thailand Crisis*  
A Co., Inc., New York 1974







आतंक-अभियान की गभीरता को घटाने की कोशिश करते हुए कहा, "हिंसा तो दोनों ही पक्षों की तरफ से हो रही थी। मुझे तो यह कभी भी स्पष्ट नहीं हो पाया कि कौन क्या कर रहा है।" \*

यह उल्लेखनीय है कि अमरीकी दूतावास के कुछ अधिकारी नवबल पार्टी और अरुण गौर में अपनी हमदर्दी को बिल्कुल भी नहीं छिपाने के लिए और उनका खुला समर्थन तक करते थे। दिनांक १६७५ में एक ऐसी ही घटना हुई। एक युवा सैनिक कप्तान से, जो अमरीकी कांग्रेस के प्रतिनिधित्व की लुप्त व्यक्ति विषयक प्रवर समिति की बैठक के समय सुरक्षा अधिकारी की हैमियन में बंधा हुआ था, जो ही अरुण गौरों के बारे में पूछा गया, तो उसने अप्रच्छन्न सतोष के साथ जवाब दिया कि अरुण गौर नेताओं ने उसे बतलाया है कि वे २० मार्च (अमरीकी सेनाओं की वापसी की अतिरिक्ति) के पहले-पहले १०० धाड़ कम्युनिस्टों की हत्या कर देने का इरादा रखते हैं।

सत्ता-परिवर्तन के कुछ ही सप्ताह पहले में प्रमोत्र सरकार के एक उच्च अधिकारी ने एक विदेशी प्रतिनिधि को बतलाया कि नवबल और अरुण गौर, दोनों ही को सी० आई० ए० से पैदा किया गया है। यद्यपि उगने इगका कोई धीमा नहीं है कि यह पैसा किम तरह से दिया जाता है, पर प्रत्यक्ष







## वाशिंगटन-रचित पट-कथा के अनुसार

सैगली के पेनेवर कालिल सातीनी अमरीका को र्ण  
मे अपना निशाना बनाये हुए है। सातीनी अपने  
राष्ट्रो के विरुद्ध अमरीकी गुप्तचर सेवाओं के क  
का कारण यह है कि अमरीकी एकाधिकारी  
की इस क्षेत्र में बहुत समय से विशेष दिखली  
है, जो उसके प्राकृतिक साधनों और जार्जि  
निर्मम शोषण में अपार मुनाफे बढ़ोत्तरी धारी  
सातीनी अमरीका को अपने घर के गिल्लाई  
ही सम्भलते हुए अमरीकी इजारे उसके सत्त र  
उत्पाद के २० प्रतिशत और उगकी निर्यात में ३  
आय के लगभग ३० प्रतिशत को इजारे करने  
सातीनी अमरीका में प्रत्यक्ष अमरीकी गुप्त वि  
\_\_\_\_\_







राज्य अमरीका के भूतपूर्व वित्त मंत्री - १९७०) ने पिनोशेट को चिलीआई जनता के लिए 'अर्थ-स्वतंत्रता' लाने के वास्ते बधाई दी। यह एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था की विशेषकर सुविधाजनक मर्यादा है, जिसमें 'आर्थिक स्वतंत्रता' और राजनीतिक आतंक एक-दूसरे को स्पर्श किये बिना सहअस्तित्व में है। . तर्कानुसार तो यह आशा की जाती है कि . . जो लोग असीमित 'आर्थिक स्वतंत्रता' मानते हैं, उन्हें तब उत्तरदायी माना जायेगा कि उन नीति को लागू करने के साथ-साथ अनिवार्य रूप से दमन, भूख, बेरोजगारी और स्थायी निर्मम पुनर्निर्माण का भी आगमन होता है। " \*

४ सितंबर, १९७० को राष्ट्रपति निर्वाचन में जन-एकता ब्लॉक के उम्मीदवार सल्वादोर अलेंडे विजयी हुए थे। वामपक्षी पार्टियों के सहमेस की विजय ने सिद्ध कर दिया था कि राजनीतिक सत्ता को लोकतांत्रिक साधनों से सफलतापूर्वक प्राप्त किया जा सकता है।

"१९७० में चिलीआई जनता की विजय," चिलीआई काम्युनिस्टों ने इंगित किया, "सामाजिक शांति के सभी मोरचों पर प्रचुर जन-मण्डलों के दौर में परिणति थी। और यह विजय इस कारण महत्वपूर्ण पायी कि जनता चिलीआई क्रांति के स्वरूप का स्वीकार निर्धारण करनेवाली नीति के आधार पर होगा

\* *Contemporary*, Vol. 3, No 2, 1976, p. 33







१५ सितंबर, १९७० को राष्ट्रपति निम्न उनके राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार हेनरी किनिंग सी० आई० ए० निदेशक रिचर्ड हैल्म और एंटी जनरल ( महान्यायवादी ) जॉन मिचेल की द्वा- हाउस में बैठक हुई। सी० आई० ए० प्रमुख ने बातों और राष्ट्रपति के निर्देशों का सख्तिपन विव- रणा।

“ हो सकता है कि हमारे पास दम में एक ह- मौका हो, मगर हमें चिली को बचाना है। इस मामले में कार्रवाई पर खर्च का कोई महत्व नहीं। जोखिम की परवाह मत कीजिये। दूतावास को अलग रह- चाहिए। १०० लाख डॉलर नकद विनियुक्त कर दीजिये और जरूरत हो, तो ज्यादा। दिन-रात काम कीजिये। अच्छे से अच्छे एजेंटों को लगाइये। सक्किया बोंबों को जल्दी से जल्दी तैयार कीजिये।... रण तैयार करने के लिए आपके पास ४८ घंटे हैं

जन-एकता सरकार के विरुद्ध संयुक्त राज्य रीका के गुप्त युद्ध को, नवंबर, १९७० में मिन १९७३ तक चलनेवाले इस युद्ध को, दो चरण विभाजित किया जा सकता है। कानिगटन के रणनी- लक्ष्य - अल्पेदे सरकार का तख्ता उलटना - में परिवर्तन नहीं आया; परिवर्तन मिके अमरीकी गु- सेवाओं की कार्यनीति में ही आया। पहले चरण

“सी० आई० ए० पर्यवेक्षक”, मासिक, १९७६, १ ( जमी में )।















नीतिगत स्थिति के बारे में सूचना एकाग्र करने के लिए  
 केन्द्र के अधिकारी सामान के विरोधियों में से लगे  
 हैं एक व्यापक जाग को स्थापित करने, प्रतिस्पर्धा  
 कारी नेताओं के साथ मार्ग स्थापित करने, देश की  
 राजनीतिक और मार्क्सवादी संगठनों के नेतृत्व में  
 पुनर्गठित करने और आन्तरिकी कार्यों तथा प्रशासन  
 की योजनाएँ तैयार करने में भी लगे हुए हैं। इन  
 कार्रवाइयों का प्रयत्न की रचना हिन्दू शास्त्रों के अनुसार  
 भी। आर्द्ध। ए० केन्द्र के प्रमुख नेतृत्व वाले हैं। उन्हें  
 स्वायत्तता में स्वयंसेवा का प्रमुख प्रभाव है।  
 हिन्दू का जन्म वर्ष १९५६ में एक मध्यम  
 आर्द्ध। ए० कार्य की हैसियत में जन्म था।

हिन्दी में प्रचलित राजदूत नेतृत्व वाले हैं।  
 भी भी। आर्द्ध। ए० कार्य के स्वायत्तता में प्रमुख हिन्दू  
 हिन्दू हुए एक और स्थापित थे। स्वायत्तता में प्रमुख  
 मध्यमस्तर के बाद उन्हें राजकीय क्षेत्र में  
 हिन्दू में प्रचलित प्रभाव का प्रमुख बना दिया था।







प्रतिक्रियावादी सी० आई० ए० ने प्रतिष्ठित करने हुए बंदम-ब-बंदम मूरेजों की तन्त्र बारी रखे थे। दुश्मानको की हड्डान ने बिचोई में छावम्हा को भारी हानि पहुचायो - देश भर में स की दुनाई टप हो गयी, जिसने देश भर में देश के काम को मनरे में डाल दिया और मुद्रान्दीन के बेतरह बढ़ा दिया। २६ जून को प्रतिक्रियावादी सैनिक अफमरो के एक दल ने सत्ता पचटने और विरोध मेना के प्रधान मेनापनि, जनरल कार्नेन इव की हत्या करने का प्रयास किया।

प्रतिक्रियावादियों की पहली साक्ष्य नाकाम रही। पात्रीआ-इ-लीबरताद के नेताओं ने मानकर लिखे दूतावासों में या विदेशों में शरण ली। सरकार ने सरकारी तौर पर गैर-कानूनी करार दिया था। लेकिन प्रतिक्रियावादियों ने हथियार नहीं डाले। उनके प्रयासों को सी० आई० ए० के साथ समन्वित करने हुए और वाशिंगटन की आर्थिक सहायता के मिलने से सत्ता पर्युत्क्षेपण की तैयारी में फिर लग पड़े। इस पद्यत्र का नेतृत्व चिली के उच्चतम सैनिक अधिकारी को करना था। सितंबर, १९७३ में अभूतपूर्व नृशमता के परिपूर्ण फाशिस्त-सैनिक विद्रोह फूट पड़ा। सत्ता को हथिय कर सैनिक तानाशाही ने धामपक्षीय शक्तियों के विरुद्ध निर्मम प्रतिशोध का अभियान छेड़ दिया।

लानीनी अमरीका में पिछले कुछ दशकों के इतिहास का अध्ययन सी० आई० ए० द्वारा इस या उस देश में वाछित धामनों को अधिष्ठापित करने के



अमरीका में जब भी कोई ऐसी समस्या सामने आती, जिसका कार्यक्रम हम क्षेत्र में मयुक्त राज्य अमरीका के 'दुनियादी हितों' के प्रतिकूल जाता था, अर्थात् उन बड़े एकाधिकारों के हितों को प्रभावित करता था, जिनका सलाहीनी अमरीका पर एकच्छत्र राज्य था, तो तैयारी हर बार अपनी प्रच्छन्न क्रियाओं की संभावना को जानू कर देता था। और हर बार बिलकुल उन्हीं उपायों को अपनाया जाता था - धमकियाँ, घूस, ब्लैकमेल, साधन-अभियान, आतंक की कार्रवाइयाँ और अंतर्ध्वंस। हर बार हम सबका अंत एक सत्ता-परिवर्तन में होता था, जो वाशिंगटन के कठपुतलों को सत्ताहृद् कर देता था और वे फिरन ही वामपंथीय और देशानुरागी शक्तियों के विरुद्ध आतंक का दौर शुरू कर देते थे।

सी० आई० ए० ने इस प्रतिरूप की सबसे पहले १९५३ में ईरान में आजमाया था, जहाँ एलेन डलेस के दाहिने हाथ केमिट रुजवेल्ट के नेतृत्व में एक विशेष टोली ने मोहम्मद मसहिक की विधिसम्मत सरकार



प्रतिक्रियावादी सी० आई० ए० में घनिष्ठ सहयोग करते हुए, कदम-ब-कदम यूरेजी की तरफ बढ़ने लगे थे। टुकचालको की हड़ताल ने चिलीआई अर्थ-व्यवस्था को भारी हानि पहुंचायी - देश भर में मान की दुलाई ठप हो गयी, जिसने देश भर में बोआई के काम को घनरे में डाल दिया और मुद्रास्फीति को बेतरह बढ़ा दिया। २६ जून को प्रतिक्रियावादी सैनिक अफसरो के एक दल ने सत्ता पलटने और चिलीआई सेना के प्रधान सेनापति, जनरल कार्लोस प्रान्स, की हत्या करने का प्रयास किया।

प्रतिक्रियावादियों की पहली माझिश नाकाम रही। पात्रीआ-इ-सीबरताद के नेताओं ने भागकर विदेशी दूतावासों में या विदेशों में शरण ली। संगठन को सरकारी तौर पर गैर-कानूनी करार दिया गया। लेकिन प्रतिक्रियाकारियों ने हथियार नहीं डाले। अपने प्रयासों को सी० आई० ए० के साथ समन्वित करते हुए और वाशिंगटन की आर्थिक सहायता के भरोसे वे सत्ता पर्युत्क्षेपण की तैयारी में फिर लग गये। इन पड़्यत्र का नेतृत्व चिली के उच्चतम सैनिक अधिकारियों को करना था। सितंबर, १९७३ में अभूतपूर्व नृशक्ता से परिपूर्ण फाशिस्त-सैनिक विद्रोह फूट पड़ा। सत्ता को हथियार कर सैनिक तानाशाही ने वामपंथीय शक्तियों के विरुद्ध निर्मम प्रतिशोध का अभियान छेड़ दिया।

लातीनी अमरीका में पिछले कुछ दशकों के इतिहास का अध्ययन सी० आई० ए० द्वारा इस या उस देश में वांछित शासनों को अधिष्ठापित करने में







मध्य अमरीका के उत्तर-पश्चिम में स्थित छोटों से अल्पविकसित देश में बड़ी दमकी में नृत्य राज्य अमरीका की युनाइटेड फ्रूट कंपनी का है मिश्रण जमा हुआ था, जो केना बागानों, रेशों और खदरगाहों की मानिक थी, और यही नहीं, उन्हें अपनी पुनिप्त तक थी। दूसरे अमरीकी द्वारा खदेला की तेज सपना पर आगे बढ़ाये हुए थे और शीर्षकालिक प्रभुत्व प्राप्त करने की आशा कर रहे थे।

१९५० के अंत में जब राष्ट्रपति आर्बेन के नेतृत्व में नयी प्रगतिशील सरकार ने किसानों और मजदूरों को जमीन के हस्तांतरण सहित अनेक अवसरों मुधारों को कार्यान्वित करने के अपने इरादे की घोषणा की, तो ग्वाटेमाला में अमरीकी एकाधिकारों के लिए एक गभीर खतरा पैदा हो गया। नयी सरकार के जमींदारियों का, जिनमें युनाइटेड फ्रूट कंपनी की जमींदारिया भी थी, स्वामित्वहरण करने के निर्णय ने ह्वाइट हाउस को विशेषकर रुष्ट किया। ग्वाटेमाला के आंतरिक मामलों में प्रत्यक्ष हस्तक्षेप करते हुए अमरीकी विदेश विभाग ने आर्बेन सरकार को उसकी सुनि नीति के विरुद्ध एक विरोधपत्र दिया।

१९५३ में राष्ट्रपति आइजेनहॉवर ने आर्बेन सरकार का तत्त्वा उलटवाने का फैसला किया। अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद की इस कार्रवाई का औचित्य-स्थापन करने के लिए प्रचार साधनों ने मध्य अमरीका के बारे में बड़ा जोरदार अभियान चलाया। सी० आई० ए० के निदेशक एलेन







सी० आई० ए० और पैटर्न में उनका सबसे बड़ा  
 उद्देश्य उम्मीदारी है। उन्होंने विदेशियों के नि-  
 र्देशकों में चंद दो जगह हाकिम और नौकराने  
 भेजे। इसके अलावा सी० आई० ए० ने अक्सर के  
 वर्ष के लिए अर्मास को लगभग १० लाख डॉलर में  
 दिये।

आने के सेवकों को नौकराने में मोसोलेने  
 टाउ पर मामोला के पशुपालन कार्य पर और पर्व  
 कांसमस के निकट एन मूनरुई हवाई अड्डे पर प्रशिक्षण  
 किया गया। प्रशिक्षण अमरीकी वर्नन कर्ल स्ट्रा  
 के निदेशन में दिया जा रहा था, जो युवाओं  
 होने का दिवावा कर







में से लिया गया। अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के धर्मशास्त्रों का मार्गदर्शन करनेवाले साम्प्रदायिक प्रेरक क्या थे, इसका अनुमान इन तथ्यों में भी लगाया जा सकता है। ग्वाटेमालाई सत्ता-परिवर्तन के दोनों मुख्य सूत्रधार, अमरीकी विदेश मंत्री जॉन फॉर्स्टर डलेस और उनके भाई, सी० आई० ए० निदेशक एलेन डलेस सतीवन एड जॉमवेल नामक कंपनी के भागीदार थे, जो युनाइटेड फ्रंट कंपनी के कानूनी मामलों की मजदूरी करती थी; और अतः अंतर-अमरीकी मामलों में जॉन फॉर्स्टर डलेस के सहायक जॉन कैबट युनाइटेड फ्रंट कंपनी के शेयरहोल्डर थे। प्रकटतया अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद मुनाफादायी धंधा है और मुनाफा भी भरपूर देता है।

ग्वाटेमाला में अंतिम सत्ता-परिवर्तन ८ अगस्त, १९८३ को हुआ। राष्ट्रपति की गद्दी भूतपूर्व प्रतिरक्षा मंत्री ब्रिगेडियर-जनरल ओस्कार उबर्तो मेहिया विन्तोरेम ने हथिया ली, जिन्हें निकारागुआई समाचारपत्रों ने घोर कम्युनिस्टविरोधी, "बाइरो मे भी बाइरो" और देशभक्त शक्तियों के निष्ठुरतम दमन का समर्थक बताया था। वह "कम दक्षिणपंथी" जनरल रिओस मोन्त की जगह पर आये थे, जिन्हें कुछ ही समय पहले तक राष्ट्रपति रैगन "सच्चा जनवादी" कहा करते थे। इस "जनवादी" के ४६३ दिवसीय सत्ताकाल में देश में १५ हजार लोग मौत के घाट उतारे गये थे। किंतु वाशिंगटन को ऐसा पैमाना भी शायद पर्याप्त न लगा और सी० आई० ए० की मदद से सत्ताहट







के तने से पटक-पटककर मार डाला गया। रस्सियाँ खींच करने की ज़रूरत नहीं समझी गयी। दुश्मन बच्चों को भी नहीं बर्खास्त किया।

इसके बाद सिपाहियों ने कुछ समय आराम लि और फिर मड़ों पर दूट पड़े। उन्हें एक-एक कर अज्ञात की इमारत के बाहर लाया गया और ह पीठ पीछे बांधकर ज़मीन पर औंधा लिटाया गया जिगके बाद पाहुओं के बाहर करके मार डाला गया एक प्रत्यक्षदर्शी बताना है कि कैसे एक सिपाही ने तब तभी मारे गये आदमी की लाश में दिव को लिटाया गया भी था।

यह सोमवर्गक रक्तपात दिन के एक बड़े शाम के मान बड़े तक जारी रहा। इन छ बने ३५२ लोगों को मौत के गार उतारा गया।

आनीनी प्रमरीका में घटनाक्रम प्रायः उमी निर्मित प्रतिक्रिया पर बना बना है, सिगरी सी. आई. ए के कही भी अपने कार्यक्रम का कार्यक्रम बन। मरणा हो जान के बाद हर बार मरणा हो। पुनरावृत्ति होती है। आदत हाथों द्वारा अनुभव प्रकाश के मुनादिक दिखी द्वारा यह दिव कर्तुर्वा सम्मान में बनान में बनान ही आई मरणा दिव में मरणा है। इसका मतलब यह तक ही है - मरणा बनान और प्रतिक्रियात्मक बनान और प्रमरीका द्वारा बनान बनान बनान के अपनी अपनी बनान के दिव दिव के दिव दिव दिव आ बनान की निर्दिष्ट इव दिव दिव दिव प्रतिक्रियात्मक बनान बन दिव है







बाधा के वाणिज्य के बनाये राम्ने पर चन मने। ये अवस्थाएँ एक शक्तिशाली दमन-तंत्र और चार दक्षिणपक्ष के ऐसे आतंकवादी संगठनों की पूर्वाग्रह करती हैं, जो मो० आई० ए० से मदद हो और उसकी महायत्ना में सभी देशानुरागी, वामपंथीय तथा जनवादी शक्तियों के विरुद्ध बाकायदा संहार का अभियान चलाये। इन अभिकरणों और संगठनों की सतत हिंसा और जबरदस्तियों के बिना वाणिज्य द्वारा अपने अनुचर राज्यों में खड़े किये सामन ताश के धर की तरह से निमिष मात्र में ढह जायेंगे।

लेकिन आइये, ग्वाटेमाला पर वापस आये और देखें कि अमरीकी हस्तक्षेप इस चिरपीडित देश के लिए क्या लेकर आया और समुक्त राज्य अमरीका द्वारा आरोपित "समृद्धि" का यह मॉडल आज कैसे "काब कर रहा है"।

१४ जुलाई, १९८०। अजीब से शिरोवस्त्र पहने लोगों की एक टोली सान कार्लोस विश्वविद्यालय के अहाते के पास कई कारों से निकलती है। एक-एक करके वे अहाते में प्रवेश करते हैं, जहाँ व्याख्यान आरम्भ ही होनेवाला है। छात्र अपनी-अपनी बसों की तरफ लपक रहे हैं और इन अपरिचित आगंतुकों की तरफ कोई ध्यान नहीं देते। आगंतुक अपने सबादों के नीचे से मशीनगनों निकाल लेते हैं और उन्हें चलाता शुरू कर देते हैं। जब वे अपना मिशन पूरा करने कारों में वापस जाकर बैठते हैं, तो लॉन पर २१ मृतक और १४ घायल पड़े हुए हैं।







कर्नल हेक्नोर मॉनाल्वाना और राष्ट्रीय पुलिस के प्रमुख कर्नल हेरमान चुपीना बाराहोना द्वारा समर्थित शीर्षस्थ जनरलों के एक गुट के आदेशों पर सेना तथा पुलिस के अधिकारी करते हैं। प्रमुख ग्वाटेमालाई व्यवसायी राऊल गार्सीआ ग्रानादोस ने एक ब्रेटवार्ता में बताया था कि यमदूत टुकड़िया सशस्त्र सेनाओं द्वारा छड़ी की गयी है।

गार्सीआ ग्रानादोस ने आगे कहा, "उनके पास ऐसे लोगों की सूचिया हैं, जिन पर कम्युनिस्ट होने का शक किया जाता है। इन लोगों को मार डाला जाता है।"

इसका पर्याप्त प्रमाण है कि यमदूत टुकड़िया सरकारी नियंत्रण में हैं। सितंबर, १९८० में इसी एलीआस बाराहोना ने सार्वजनिक रूप में पुष्टि की, जो चार साल गृहमंत्रालय के प्रेस सचिव रहे थे। उन्होंने पत्रकारों को एक लिखित वक्तव्य दिया, जिसमें विस्तार से बताया गया था कि लूकास गार्सीआ और सेना के जनरल किस तरह यमदूत टुकड़ियों को नियंत्रित करते हैं। बाराहोना ने पत्रकारों को सरकार द्वारा कैद तथा यथार्थ केंद्रों के रूप में प्रयुक्त मकानों के पत्तों की सूची भी दी। ग्वाटेमालाई ईसाई जनताद्वि पार्टी के महासचिव वीनिसीओ सेरेसो ने एक प्रेस सम्मेलन में कहा कि उनकी पार्टी के नेता हत्या के लिए अभीष्ट व्यक्तियों की सूची में है, क्योंकि उन सभी को कम्युनिस्ट माना जाता है, जो सरकार का विरोध करते हैं।







जनरल सीओम मोत ने एक वक्तव्य द्वारा मार्टिन  
मे जनतंत्र तथा स्वतंत्रता की बहाली के लिए न  
रहे देशभक्तों को हथियार न डालने की सूचना दे  
नष्ट कर देने की धमकी दी।

१९६४ में सी० आई० ए० ने ब्राजील में राष्ट्रपति  
गुलार्त की जनतांत्रिक सरकार को उलटने के लिए  
बलात् सत्ता-परिवर्तन की तैयारी की थी। अपने इन सत्ता  
की सिद्धि के लिए सी० आई० ए० ने जनवादी शक्ति  
के विरुद्ध भड़कावे और आतंक की कार्रवाइयों में  
पारंगत कितने ही स्थानीय संगठनों और अभिनेताओं  
का उपयोग किया।

१९६४ के सैनिक सत्ता-परिवर्तन की तैयारी में  
सी० आई० ए० की गह्रित भूमिका १९७६ में प्रकाश  
में आयी, जब ब्राजीली पत्रकारों ने अनेक गुप्त दस्तावेजों  
को प्रकाशित करके उसका परदाशाय किया।  
आज यह अच्छी तरह से ज्ञात तथ्य है कि ब्राजील के  
आंतरिक मामलों में धृष्टतापूर्वक हस्तक्षेप करने के लिए  
सी० आई० ए० ने कम्युनिस्टविरोधी आंदोलन,  
मृत्युदूत टुकड़ी, कम्युनिस्ट हनन दल जैसे राष्ट्र-  
पक्षीय आतंकवादी संगठनों, अर्द्ध-पुलिस संगठन जेनेरल  
दान बादेइरादेस और राजनीतिक पुलिस के साथ  
सक्रिय सहयोग किया था।

सी० आई० ए० और अन्य सर्वाधिकारी मार्गों  
अमरीकी शासनो - उगम्बाय, परागम्बाय तथा हाइटी - के  
दमनकारी अभिकरणों के बीच भी ऐसी ही "सिक्कान्त  
संघ" है। साम्राज्यवादविरोधी, जनवादी और मुक्ति







में जुड़े हुए है। उन्होंने आगाह किया कि वाशिंगटन इसके लिए सभी कुछ करेगा कि सल्वादोर में कोई जनतांत्रिक सरकार सत्ता में न आये। उन्होंने इस किया कि संयुक्त राज्य अमरीका इस देश पर सैनिक आक्रमण कर देगा और उसे "दूसरा विनतावा" बनाने से भी न कतरायेगा। इस चेतावनी को दुर्ग औरो के अलावा भूतपूर्व अमरीकी विदेश मंत्री एर्नेस्ट हेग तथा राष्ट्रपति के निकटतम परामर्शदाता एडविन मीज़ के घमकीभरे और तत्त्वतः भडकानेवाले बक्तव्यों से हुई।

सल्वादोरी देशभक्तों द्वारा आयोजित पत्रकार सम्मेलन ने सी० आई० ए० के आपराधिक तरीकों का परदाफाश किया। एक ओर, वह राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों के, जिनमें सल्वादोर का आंदोलन भी सम्मिलित है, विरुद्ध ध्वंसकार्य करती है, और दूसरी ओर, वह विभिन्न देशों में जनमत को गुमराह करने की कोशिश करती है। एजी ने बतलाया कि सल्वादोरी विद्रोहियों और समाजवादी राष्ट्रों के बीच संबंधों का वह तथाकथित प्रमाण अमरीकी गुप्तचरों द्वारा ही गढ़ा गया था, जिसे अमरीकी अवर विदेश मंत्री लॉरेस ईगलबर्गर पश्चिमी यूरोप लाये थे। पत्रकार सम्मेलन में उपस्थित पत्रकारों को सी० आई० ए० के ध्वसात्मक तथा मिथ्या सूचना तंत्र की कार्यप्रणाली को प्रकट करनेवाली दस्तावेजों की फोटो प्रतियाँ दी गयीं।

अमरीकी स्थापित धर्म विनाश मस्जान की बात करने



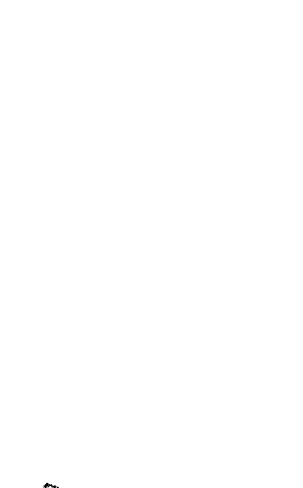




है और उन्हें सेनाओं, पुलिस और हथियारों में बढ़ा दिया है। अपने लक्ष्यों को अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिज्म के अथवा, जैसे कि प्रचलित शब्दावली में कहा जाता है, 'अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद', से लड़ने की सुर्खों के नीचे छिपाते हुए संयुक्त राज्य अमरीका व्यापक अन्नाज्ञा के हितों के विरुद्ध अल्पसंख्यक जमींदाराना स्वेच्छाचारी शासनो और उनके सैनिक अनुचरो का समर्थन कर रहा है।

"संयुक्त राज्य अमरीका स्वेच्छाचारी शासनो से अपने समर्थन का औचित्य-स्थापन इस दावे से करता है कि वे आधुनिकीकरण की सिद्धि के लिए अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिज्म (अथवा 'अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद') के प्रसार को रोकने के लिए आवश्यक है। दावा यह किया जाता है कि दमनकारी स्वेच्छाचारी शासन सिर्फ अस्थायी ही हैं और कुछ समय की कृतनियों के बाद लोगों की खिदगी आधुनिकीकरण के बदौलत समृद्ध हो जायेगी। ... सल्वादोर में शुरू अमरीकी राजदूत रॉबर्ट ह्वार्ट ने कहा है कि उन्हें विदेश सेवा से अलग होने को, उनके ही शब्दों में राष्ट्रपति रैगन के सल्वादोर में सैनिक हमलों के 'तैयारनुदा सिद्धांत' का विरोध करने के लिए मजबूर किया गया था। उन्होंने कहा कि इस देश में सबसे बड़ा खतरा ... अमरीका द्वारा समर्थित सैनिक शासन में सबूद्ध दक्षिणपंथी शाक्तियों की तरफ है। राजदूत ह्वार्ट ने सल्वादोरी सरकार को सैनिक सहायता दिये जाने का विरोध किया। उन्होंने कहा







१.००० तक आदमी थे, हमने के विवरण छत्ते। कहा गया कि यह हमला सम्बन्ध नौकरानुत्रा में हुआ था। यद्यपि इन आश्रमणकारी छापामारों और मन्वा-दोरी सुरक्षा सेनाओं के बीच कयिन लड़ाई पूरे लि-चली, फिर भी सरकारी सैनिक न तो किन्हीं छापामारों को मार ही सके, न कैदी बना सके और न कोई हथियार ही बरामद कर सके।

“ २२ जनवरी को एक दूसरे समुद्री हमने से खबर छपी, मगर इस बार भी हनाहलो या ईर्गों के बिना। फिर भी इसे पर्याप्त साक्ष्य मान लिया पत्त और २४ जनवरी को संयुक्त राज्य अमरीका ने मन्वा-दोरी सरकार के साथ ६५० लाख डॉलर सहायता के समझौते पर हस्ताक्षर कर दिये। आश्चर्यजनक रूप से, इन दस्तावेजों में इसका काफी प्रमाण दिया पत्त था कि क्यूबाइयो और रूसियों ने मन्वा-दोरी विद्रोहियों को हथियार मुहैया किये थे। यह 'प्रमाण' विदेश विभाग के उस द्वातपत्र के साक्ष्य का ७०% का जिममें सोवियत तथा क्यूबाई सहायता को नेषद किया गया था। ” \*

सल्वादोर में असल में क्या हो रहा है? कौन वहा की जनता के विरुद्ध खुला नरमेध अभियान चला रहा है? किम स्वेच्छाचार के खिलाफ पारापूर्व मार्ती राष्ट्रीय मुक्ति मोरचे के सल्वादोरी देशभक्त लड़ रहे हैं?











सल्वादोर में क्या करना चाहिए। "एक रश्मान यह  
रहा है कि प्रशासन इस क्षेत्र में, मिमान के लिए  
खाटेमाला हाइरस और पिली में, प्रतिनियुक्त  
सेनाओं को इस्तेमाल और सज्जित करे। फिर इन  
सेनाओं को अंत अमरीकी शांतिरक्षक सेना के आवरण  
में भेजा जा सकता है।

'पैरागॉन प्रत्यक्ष अमरीकी सहभागिता का आग्रह  
करता रहा है।

"फाराबुदो मार्लो राष्ट्रीय मुक्ति मोरचे के  
प्रवक्ता कहते हैं कि सल्वादोर में अब भी ८०० से  
अधिक अमरीकी सैनिक मौजूद हैं। लेकिन रैगन  
की रणनीति में प्रतिनियुक्त सेनाओं की भी भूमिका  
हो सकती है। वधन्यम काम के लिए क्यूबाई उत्प्रा-  
मियों और नीकारागुआई नेशनल गार्ड के भूतपूर्व  
सदस्यों का उपयोग किया जा सकता है।

'रैगन ने अंत अमरीकी मामलों के विदेश-उपमंत्री  
के महत्वपूर्ण पद के लिए अपनी पसंद घोषित कर दी  
है। इसके लिए टॉमस एडर्स को चुना गया है और  
उनका अनुभव क्यूबिया के समय तक का है, जहां  
वह १९७१ से १९७४ तक अमरीकी ~~...~~  
थे। ~~...~~



















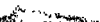
में होना है। अमरीकी सैनिक, पुलिस और चरम दक्षिणपन्थीय तूफानी दमन को प्रशिक्षित और मज्जित कर रहे हैं। गैन्गीरोधी बाम्बटो में लेकर मोटरगाडियो तक हर ही चीज उन्हें संयुक्त राज्य अमरीका देना है। संयुक्त राज्य अमरीका में प्रशिक्षित अमरीकी की समस्या दुगुनी हो गयी है। इसके अलावा अमरीकी बच भागे मामोजाइयो में से भांडे के सैनिक प्रशिक्षित कर रहे हैं और फानिकारी आंदोलन को कुचलने के लिए ग्वाटेमालाई और हाइरामी सेनाओं का उपयोग करने की योजना बना रहे हैं।” \*

हाल के समय में विश्व प्रेम में सन्वादीर में निरकुश शासन के विरुद्ध जन-संघर्ष में आमूलतः नये विकासो के समाचार छपे हैं। आज यह झिलझिल स्पष्ट हो गया है कि सैन्यवादी शासक गुट एकदम दिवालिया हो गया है, जो अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए रक्तपात के सभी रेकार्डों को तोड़ रहा है और सत्वादीरी जनता का जनसंहार कर रहा है। सत्वादीर में अपने अनुभवों का वर्णन करते हुए फार्मीनी पत्रकार प्येर ब्लासे ने 'ली नूवेल ओब्ज़र्वेतेर' में लिखा है कि "उपस्थित पत्रकारों में से किसीने विश्व स्वास्थ्य संगठन के किसी भी स्वयंसेवक को कपूचिया के बाद से विभीषिका के ऐसे दृश्य नहीं देखे हैं।” \*\*

\* 'लिनैरानूनीया गजेता', २६ मार्च, १९८० (कभी में)

\*\* *Le nouvel Observateur* 18 juillet, 1981, p 42







हैं। अमरीकी हथियार और यौद्धिक साज-सामान जल्दी-जल्दी सान-सत्वादीर पहुँचाये जा रहे हैं। यही नहीं, पैटागॉन सत्वादीर में अमरीकी सैनिक सलाहकारों की सख्या को बढ़ाये जा रहा है, जो - जैसे कि ज्ञात है - अब भी बहुत समय में सैनिक कार्रवाइयों में प्रत्यक्ष भाग लेते आ रहे हैं।

छापामारों के साथ संघर्ष में अमरकमताओं से सार खाकर चरम दक्षिणपंथीय तत्वों से निर्मित सत्वादीरी मुख्य नेता और मृत्युदूत टुकड़िया नागरिक आबादी के खिलाफ दमन-चक्र चला रहे हैं। उदाहरण के लिए,

सत्वादीरी कैथोलिक चर्च के एक मानवाधिकार रक्षा दल के यक्तव्य के अनुसार १९८३ के पहले छ महीनों में ही मृत्युदूत टुकड़ियों द्वारा मारे गये लोगों की संख्या २,५२७ थी। और इस बीच वाशिंगटन बगुआ और नीकारागुआ के विप्लव सरकारों की, मध्य अमरीका तथा कैरीबियन में सरकारों को हथियारों की विस्तृत योजनाएँ तैयार कर रहा है।

राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद में विचार-विमर्श के बाद अंगीकृत इन योजनाओं में आर्थिक, राजनीतिक तथा प्रचारात्मक उपायों के एक पूरे मिश्रणों की योजना की गयी है। पश्चिमी समाचारपत्रों की मन्त्रों के अनुसार राष्ट्रपति रीगन और उनके मन्त्रिमंडल इस विचार पर पहुँचे हैं कि मध्य अमरीका में अमरीकी मुख्य उत्तरिणी में तब तक पूर्ण शक्ति करना आवश्यक है। विशेषकर हाइगम में अत्याधिक मद पर एक विस्तृत अमरीकी सैन्यी अह्रा बढ़ाने का इरादा रखा जा रहा







कि इस समय वे नीकारागुआ में प्रच्युत सैनिक हथियारों के शहर पर पहुँच गयी है। मनोवैज्ञानिक दबाव बढ़ाने और गुना सैनिक टकराव भड़काने के इरादे में अमरीकी गणराज्य ने जून, १९८३ में ६,००० नौसैनिकों को लेकर अमरीकी नौसेना के एक विमान बेड़े को इन छोटे से मध्य अमरीकी देश के तटों की ओर जाने का आदेश दिया। इसी के साथ-साथ वाशिंगटन ने अपनी आक्रामक योजनाओं के कार्यान्वयन में उनका प्रस्थान-स्थान और आज्ञाकारी माध्यम की हैमियन से उपयोग करने के लिए हाइड्रास को भारी सैनिक सहायता और आर्थिक अनुदानों को मजूरी दी। वाशिंगटन का गुप्त युद्ध अधिकाधिक स्पष्टतापूर्वक बाकायदा खुले युद्ध का स्वरूप ग्रहण करना शुरू कर चुका है।

१९८३ के अंत में वाशिंगटन द्वारा सिद्धांत और हथियारबंद किये हुए प्रतिक्रांतिकारी गिरोहों ने नीकारागुआ की नागरिक आबादी के खिलाफ नये उग्र अपराध किये। हाइड्रास से हिनोनेग डिपार्टमेंट में घुस आये २००० कातिलों ने बंती में काम कर रहे १७ किसानों को मौत के घाट उतार डाला। एक दूसरे गिरोह ने, जो मेलाई डिपार्टमेंट में घुस आया था, कैथोलिक बिशप सैल्वाडोर इलैफ़र की निर्मम हत्या की ( प्रसंगत इलैफ़र अमरीकी नागरिक थे )।

नीकारागुआ के खिलाफ प्रचलित युद्ध के अमरीकी सूत्रधारों ने भाड़े के हत्यारों की कार्रवाइयों को सक्रिय बनाने के लिए यह वक्त अकस्मात् ही नहीं चुना है।







वर्तमानकालीन सामोब्रानों के सामान्यपूर्ण आकांक्षों की पूर्ति के लिए वर्तमान सरकार के नीति को गृहीत है। नीतिगत रूप से अत्यंत वास्तविकता के धारों के टुकड़ों की मोटाई की कार्यवाही और समुदाय मान्य प्रमोटीका के निहित दृष्टिकोण के साथ का समुदाय प्रभाव दे गयी है।

अक्टूबर १९८१ में देनाडा पर अमरीकी सैन्य-कार्रवाई के आतंकवादीक मजबूत आक्रमण से माने मिले में शोध की प्रचुर मात्रा होर गयी। अमरीकीय आतंकवाद के इस कृत्य को वैध दृष्टिकोण की कोशिश में ज़ाहद हासन ने सांगना की रि देनाडा के निष्पाद मजबूत कार्यवाही करने का निर्णय २३ अक्टूबर को पूर्ण की। विविधन राज्यों के समुदाय के साथ देशों में देनाडा में व्यवस्था तथा जनन की "बहानी" में मदद करने की "आधिकारिक अंगीत" जाने के बाद किया गया था।

किन्तु अनगिनत तथ्य साधो है कि वाशिंगटन ने आक्रमण की योजनाएँ पहले से बनायी हुई थीं। उदाहरण के लिए, एन० बी० सी० टेलीविजन पर प्रसारित एक भेटवार्ता में प्रतिरक्षा मंत्री कैम्पर वाइनबर्गर ने खुले-आम कहा कि अमरीकी त्वरित विनियोजन सेना (रैपिड डिप्लॉयमेंट फोर्स) की ८२ वी पैरा डिविजन की टुकड़िया २६ अक्टूबर को देनाडा में "पहले से निर्मित योजना" के अनुसार उतरी थी। इस "पहले से" मतलब एक हफ्ता या एक महीना ही पहले ही नहीं था।

पैटागॉन के अधिकारियों के अनुसार (इस बारे







मॉरिस बिशप की सरकार के अस्थिरिकरण और पुराना शासन फिर से कायम करने की निरंतर कोशिशों का सामना करना पड़ रहा था। और ऐसी हर कोशिश के पीछे अनिवार्यतः संयुक्त राज्य अमरीका का हाथ होता था। १९८० के जून महीने में अमरीकी गुप्तचर सेवाओं ने घेनाडा की राजधानी सेट जॉर्ज में एक विशाल मार्बलजनिक मभा के दौरान सरकारी भवन के नीचे बम रखवाकर विस्फोट करवाया था। फिर उसी माल के अंत में सी० आई० ए० के दो और सदस्यों का भंडाफोड़ हुआ। जून, १९८१ में घेनाडा की गुप्तचर सेवाओं को पता चला कि २६ आदमियों के एक प्रतिनिधिकारी दल ने बारबैडोस में सी० आई० ए० के रेजिडेंट ऐंथले विल्म के साथ सार्क कायम किए हुए हैं। यह दल 'पेनैडियन वाइंग' नामक एक गुप्त रूप से प्रकाशित समाचारपत्र के जर्गल प्राप्तक तथा हिमा की कार्रवाई करने और बिशप की सरकार को उलटने की अगुआई जारी किया जाता था। मर में ऐसी और भी अनेक गतिविधियों का परदागारा हुआ।

घेनाडा में परंप्रू प्रतिशियावादी तत्वों की, जो काफी कमजोर थे, सफलता की आशा न होने पर भी संयुक्त राज्य अमरीका ने अन्तर्व्यंग्यपूर्ण आलोचनाई कार्रवाइयों पर भरोसा करना छोड़ा नहीं और इस तरह से देश के भिन्नान्त अपना प्रचार-प्रतिप्रचारे द्वारा-द्वारा में जारी रखा।

हर महीने देश में सी० आई० ए० के पैसा में खिंचे हुए और देश की चालिचाली प्रविद्या के मर







बनाये रखने" के लिए वहाँ कई सौ सैनिकों की एक अमरीकी गैरीजन रहने दी गयी है। औपचारिकतः वह तथाकथित कैरीबियन शान्ति-स्थापना सेना का अंग होगी, जिसे वाशिंगटन ने ग्रेनाडा पर अपने आक्रमण को "अंतर्राष्ट्रीय कार्रवाई" की शकल देने के लिए कैरीबियन क्षेत्र के अमरीका-समर्थक राज्यों के सैनिकों से बनाया था।

ग्रेनाडा की जनता इन कुछ महीनों में ही "अमरीकी नमूने के जनतंत्र" की निर्यात की जानेवाली विस्म के सभी आकर्षणों से वाकिफ हो चुकी है। बमबारिया, जनसहार, गैरकानूनी गिरफ्तारियाँ, वसेटेशन बंद, पूछ-ताछ और यत्रणाएँ, ऐसे हर किसी की मौत, जो आक्रामक का प्रतिरोध करने का दुस्साहस करता है...

हाल के समय में सातीनी अमरीका से ऐसे राजनीतिक कार्यकर्ताओं, शासनाध्यक्षों और शीर्षस्थ जनरलों तक के साथ, जिन्हें वाशिंगटन अवाछनीय समझता है, "दुर्घटनाओं" के होने के समाचार समय-समय पर मिलते रहे हैं। आखिर दुर्घटना तो दुर्घटना ही है, जो किसी के साथ भी हो सकती है। राष्ट्रपतियों, प्रधानमंत्रियों, जनरलों और ऐडमिरलों की हवाई जहाज, रेल अथवा कार दुर्घटनाओं में मृत्युएँ पहले भी हो चुकी हैं। फिर भी, पनामाई नेशनल गार्ड के कमांडर ओमर तोरीहोम, एक्वाडोर के राष्ट्रपति हाइमे रोल्दोस और पेरू की स्थल सेना के प्रधान मेनापति जनरल रफाएल होयोस रुबिओ की मृत्युओं के प्रमणों में कई तथ्य ऐसे हैं, जिनसे यह संदेह होता है कि वे







का आदेश दे दिया था। हत्यारों को सैन्ली से आदेश  
हॉवर्ड ई० हट के जरिए मिलते थे—यह वही आदेशी  
है, जो वाटरगेट कांड से प्रत्यक्षत सबद्ध था।

अमरीकी प्रेस में इन आशय की खबरे छपी हैं कि  
वाटरगेट कांड की जांच के दौरान जनरल तोरीहोग  
की हत्या करने की एक योजना का भी पता चला  
था।

अमरीकी हुकमरान पिछले कुछ समय से जनरल  
तोरीहोग द्वारा मध्य अमरीकी देशों, मधोपरि नीकारा-  
गुआ और सल्वादोर, के जनगण के न्यायमग्न मर्त्य  
को प्रदत्त समर्थन से मासकर बहुत नाराज थे। कई  
ज्ञानकार अमरीकी अधिकारी जनरल की मृत्यु में  
सी० आई० ए० का हाथ होने के बारे में सुनेशाम  
इशारा करते हैं। मिमाल के लिए, भूतपूर्व अमरीकी  
पेट्रोनरी जनरल रैमन्डे क्लार्क ने मेक्सिको की राष्ट्रपती  
से कहा के वकीलों की एक मभा में भाषण देने हुए  
कहा कि हममें कोई शक नहीं हो सकता कि जनरल  
तोरीहोग जिन पनामाई हवाई जहाज में मार कर  
गहे थे, उनमें माय हुए हादसे के पीछे सी० आई० ए०  
का हाथ था।

यह विमान-दुर्घटना भी रहस्य बनी हुई है।  
जिसमें एल्वादोर के राष्ट्रपति हाइमे रोब्लोस मारे  
गये थे। इस दुर्घटना की जांच के दौरान एल्वादोरी  
प्रतिरक्षा मंत्रालय ने एक विशेष दस्तावेज तैयार की,  
जिसमें राष्ट्रपति रोब्लोस के प्रति अमरीकी सशस्त्र  
बलकी और नेव दस्ताने के अत्यधिक नकारात्मक रीति







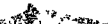
इंगित करता है कि राष्ट्रपति के विमान की दुर्घटना बहुत करके एक पूर्वनियोजित आतंकवादी कार्रवाई थी। दुर्घटना के ठीक पहले एकवादोर में चिनीआई राजदूत ने एक स्वागत समारोह में मयोग से कहा था कि शीघ्र ही "कोई असाधारण बात" होनेवाली है। यह भविष्यवाणी अगले ही दिन सच्ची हो गयी।

अमरीकी तेल इजारे पेरू की स्थल सेना के प्रधान सेनापति जनरल रफाएल होयोस रुबिओ से भी इतने ही अप्रसन्न थे। वह उन राष्ट्रवादी सेनाधिकारियों में थे, जो अक्टूबर, १९६८ में मत्ता में आये थे और जिन्होंने अमरीकी इजारे इटरनेशनल पेट्रोलियम कम्पनी की पेरूआई सहायक कम्पनी को राष्ट्रीकृत करके राष्ट्रीय तेल कम्पनी पेव्रो पेरू की स्थापना की थी तथा अमेज़ोन नदी की घाटी में तेल पूर्वेक्षण सगठित करने और पेरू के सामाजिक-आर्थिक विकास के हितों के तेल के निष्कर्षण और युक्तियुक्त उपयोग को सुनिश्चित करने के लिए काफी कुछ किया था।

जनरल रुबिओ की मृत्यु की जांच करने के लिए स्थापित सरकारी आयोग इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि जनरल रुबिओ जिस हेलीकॉप्टर में सफर कर रहे थे, उसके चालक को इस मॉडेल के यान को उड़ाने का कोई अनुभव न था। यह भी पता चला कि हेलीकॉप्टर सुरक्षा नियमों के विरुद्ध कहीं अधिक ईंधन নিয়ে हुए था। यह सर्वथा संभव है कि ऐसी "असाधारणी" सायोगिक नहीं थी।

इन तीनों दुर्घटनाओं से सबद बहुत से तथ्य अ







## पद्धतों का पुनोत्पादन

सयुक्त राज्य अमरीका सामान्य अन्य राष्ट्रों के भाग्य पर ध्यान देने में हस्तक्षेप नहीं करता, न वह अस्त्रों का प्रयोग या धर्मियों का ही प्रयोग करता है। हो सकता है कि बहुत ही विदेशी अवस्थाओं में सयुक्त राज्य अमरीका ने गुप्त विधियों का उपयोग किया हो, और अगर उमने ऐसा किया है, तो उसके उदाहरण बहुत ही विरल हैं। मोक्षियों के विपरीत, सयुक्त राज्य अमरीका ऐसे गुप्त हस्तक्षेपों का वैज्ञानिक मंत्रों में अपने सामान्य व्यवहार के अगम्य रूप प्रयोग नहीं करता। \*

ये शब्द रॉबर्ट कुबान के हैं, जो एक प्रमुख अमरीकी सैनिक तथा राजनीतिक योजनाविशेषज्ञ हैं। इतिहास की रचना भी जानकारी रखनेवालों को ये शब्द अनर्गल प्रतीत होंगे। इसके बावजूद इस तरह के कथन हाल के समय में अमरीकी प्रेस में अधिकाधिक प्रायिकता के साथ प्रकट हो रहे हैं। तथाकथित अन्-

\* *Conflict and Cooperation in the Persian Gulf*, Ed. by Mohammed Mughisuddin, Praeger Publishers, New York and London, 1977, p. 171.







दिनों बग़दाद के अकसर चक्कर लगाया करते थे, जो अमरीकी विदेश विभाग के लिए फार्म की खाड़ी के देशों में आनर्गिक म्यिनि के बारे में सूचना के मुख्य स्रोत थे। सी० आई० ए० केंद्र अमरीकी मिशन का ही एक हिस्सा था और उसमें बहुत छोटे ही लोग काम करते थे - उसने इराक में अपना काम अभी शुरू ही किया था। वह स्थानीय एजेंटों को भर्ती कर रहा था और देश के आर्थिक, सार्वजनिक तथा साम्प्रदायिक क्षेत्रों में अपने लोगों की घुमपैठ करवा रहा था।

"इराक में सी० आई० ए० केंद्र के उस हिस्से में, जो राजनयिक आवरण के नीचे काम करता था, अमरीकी गुप्तचर्या अधिकारी विन्वर ब्रेन ईवलैंड पुनः स्मरण करते हैं, "इतने कम कर्मों थे कि उसके दो सचिवों तक को सूचना आदान-प्रदान और एजेंटों के साथ निरापद जगहों में मुलाकातों की व्यवस्था करनी पड़ती थी।" \*

लेकिन यह तो बिल्कुल आरम्भ की बात है। अपनी पुस्तक 'रेत की रस्सियाँ। मध्य-पूर्व में अमरीका की विफलता' में ईवलैंड सी० आई० ए०-कर्मियों की गतिविधियों की व्यापक झाली प्रस्तुत करते हैं, जो राजनयिक, कॉलेज अध्यापक और पुरातत्वज्ञ होने का दिखावा करते थे और मध्य-पूर्व के अमरीकी मित्र\*\*

\* Wilbur Crane Eveland, *Ropes of Sand America's Failure in the Middle East*, W. W. Norton & Co., London 1980, p. 46.

\*\* मध्य-पूर्व के अमरीकी मित्र सगठन की स्थापना १९४१ में हुई थी। मिस्र, शाम, मोरक्को, द्यूनीमिया, सीरिया और जॉर्डिया







पद पर रहे थे और १९५३ में उसके निदेशक बने। उनकी पदोन्नति जनवरी, १९५३ में उनके अप्रैल जॉन फॉर्स्टर डलेस के संयुक्त राज्य अमरीका के विदेश मंत्री पद पर नियुक्ति के साथ घनिष्ठता बढ़ गई। इस प्रकार विदेश विभाग और सी० आई० ए० का नेतृत्व अब एक ही कुन्बे का कारबार बन गया। हिंसा और आतंकवाद के उत्कट समर्थक इन दोनों भाइयों ने कुछ ही समय के भीतर व्यवस्थापन, अतर्ध्वस और राजनीतिक हत्याओं के आपराधिक मिश्री-कैट को पूरी तरह से क्रियाशील कर दिया।

व्याधिकीय कम्युनिज्मविरोध डलेस बंधुओं की एक और सामान्य सहज प्रवृत्ति थी, जो, स्वाभाविकतया, उनके विदेशनीतिक कार्यकलाप की आधारशिला बन गयी। डलेस बंधुओं की भू-राजनीति में पश्चिम एशिया और मध्य-पूर्व का बिल्कुल आरम्भ से ही बहुत महत्वपूर्ण स्थान रहा।

मई, १९५३ में जॉन फॉर्स्टर डलेस ने मध्य-पूर्व और दक्षिण एशिया का दौरा किया। दौरे का औपचारिक लक्ष्य अमरीकी सहायता के बारे में विचार-विमर्श करना था, पर वास्तव में वह दीर्घकालीन अमरीकी रणनीति को निरूपित करने के प्रयोजन से इन देशों में स्थिति का जायजा लेना चाहते थे। जॉन फॉर्स्टर डलेस की अपेक्षानुसार इसका आधार मोक्षिय मध्य के विरुद्ध निदेशित आक्रामक गैर्य गुट होना चाहिए था। बिल्बर ईबलेड ने लिखा है: "उनका दृष्टिकोण प्राथमिक ध्येय मध्य-पूर्वी राज्यों की 'उत्पत्ति







रूजवेल्ट को चुना गया, जिनका अमरीकी गुप्तचरों द्वारा मध्य-पूर्व में किये गये कितने ही कुकृत्यों से सीधा संबंध रहा था। किम रूजवेल्ट संयुक्त राज्य अमरीका के १९०१ से १९०६ तक राष्ट्रपति और अपने द्वारा १९०३ में उद्घोषित "महादंड नीति" अथवा "शक्ति प्रदर्शन नीति" के प्रणेता थियोडोर रूजवेल्ट के पोते थे। अरब विश्व की रग-रग से परिचित प्राच्यविद् किम रूजवेल्ट को विभिन्न सांस्कृतिक मिशनों का आवरण की तरह से उपयोग करने का शौक था। ध्वसकार्यों के निरूपण और कार्यान्वयन में भी सक्रिय भाग लेते हुए किम रूजवेल्ट ने जल्दी ही सी० आई० ए० के समस्त मध्य-पूर्वी मामलों को अपने हाथों में ले लिया। वैसे तो ध्वसकार्य बहुत से, पर इनमें से सबसे गह्रित वह था, जिसने किम रूजवेल्ट के शानदार कैरियर को बनाया, और वह था ऑपरेशन एजेक्स—ईरान की विधिसम्मत सरकार का उखाड़ा जाना।

पचास के दशक के आरम्भ में ईरान में स्थिति बहुत ही महीन थी। राजनीतिक रगभूमि में राष्ट्रीय मोरचा सबसे आगे आ गया था, जिसके नेता बूर्नुआ-उदार राष्ट्रवादी डॉक्टर मोहम्मद मुस्महिक थे। मोरचे में राष्ट्रवादी बूर्नुआ और भूस्वामी गुट शामिल थे, जो अपने देश में ब्रिटेन के बोलबाले का विरोध करते थे। ईरान को ब्रिटिश एवाधिकारी प्रभुत्व में मुक्त करवाने के प्रयास में मार्च, १९५३ में मुस्महिक के मंत्रिम (मगद) में आख-ईरानी तैम बपनी को







ब्यौरो पर विचार किया, जिसका उन्हें निदेशन करा था। कुछ दिन बाद वह एलैन डलेस से बदस्तूर टेनि कोर्ट पर मिले और उन्हें बताया कि तैयारियाँ पूरा हो चुकी हैं। लेकिन डलेस ने, जो उस समय सी० आई० ए० के उपनिदेशक ही थे, उस राष्ट्रपति आइजनहॉवर के सत्ता ग्रहण करने तक ठहरा की सलाह दी, जिनके प्रशासन में वह मध्य-पूर्व सी० आई० ए० के प्रच्छन्न युद्ध में एकदम तेजी से काम की सोच रहे थे।

डलेस का सोचना सही निकला। ३ फरवरी १९५३ को ब्रिटिश गुप्तचरों के प्रतिनिधि विदेश में जाँन फॉस्टर डलेस, उनके भाई और अब सी० आई० ए० निदेशक एलैन और भूतपूर्व सी० आई० ए० निदेशक जनरल वाल्टर बेडेल स्मिथ जैसे उच्चस्तरीय अमरीकन अधिकारियों के साथ एक गुप्त बैठक में भाग लेने के लिए वाशिंगटन पहुँचे। बैठक में किम रुज़वेल्ट का ऑपरेशन एजेंकम का मुख्य संचालक बनाने के विचार का अनुमोदन किया गया और स्थिति का अध्ययन करने के लिए उन्हें तुरत ईरान भेजने का फैसला किया गया।

थोड़े ही दिन बाद किम रुज़वेल्ट तेहरान पहुँच गये। वहाँ उनका फौरन दो ईरानियों के साथ मिला हुआ, जिन्हें गुप्तचरों कार्य का अनुभव था और उन्होंने भूट का पता चमानेवाली मशीन पर परीक्षण में गुजरने और प्रस्तावित पहलू में प्रनिक्षण पाने लिए अमरीका भेज दिया। उस समय ईरान में अमरीकन







प्रतीक्षा कर रही थी। इन लोगों को सी० आर्चर की योजना को कार्यरूप में परिणत करना था। किम रुजवेल्ट को इसके लिए ईरानी मुद्रा में दस लाख डॉलर दिये गये थे। उस समय सबसे बड़ा ईरानी नोट १०० रियाल ( ७५० डॉलर के बराबर ) का था। इस प्रकार यह मुसद्दिक का तस्ला उलटने के लिए निगमना गया खर्च घन का दशदशः अवसर था।

लेकिन असल में इसका मिर्फ १० प्रतिशत ही खर्च हुआ। किम रुजवेल्ट के ईरानी एजेंट १ लाख डॉलर नकद लेकर तेहरान के दक्षिणी भाग में पिया गदी बस्तियों में गुडे और लून्चे-स्फने दगाइशों को भरती करने गये। किम रुजवेल्ट की योजना के अनुसार इन लोगों की भीड़ों को सामूहिक अज्ञानि फैलाने और शाह की हुकूमत के लिए " जन समर्थन " का दिखाने के लिए सही घड़ी में सड़कों पर निकल आये थे। आंगरेजन एजैकम में यह बलाना की गयी है कि स्वयं शाह दूर कास्पियन तट पर घने जंगलों और पक्ष्यकारियों को दो हम्नाभरित परमान दे जाये- एक मुसद्दिक को बरमान करने का, और दूसरा जनसमर्थन जहदी को प्रधान मंत्री नियुक्त करने का। जनसमर्थन जहदी, जिनके द्वितीय विश्वयुद्ध के समय मन्त्री मन्त्रियों के साथ पविष्ट गये थे, अब ईरानी ... दक्षिणों के विरुद्ध अपनी गुप्त सहाई में सी० आर्चर के लिए गुप्त के इच्छे थे। शाह की असाध्य ... के कुछ प्रतिधियाशरी अगमर भी पक्ष्य में ... थे।







जिम्मा शाह की अगुआई में तो के कर्नल नेन्दु-  
 नमीरों को भीतर गूँड अपनी एक मानदानी जा  
 में जा छिपे थे। मेरिन आगिरी घड़ी में एक अर  
 ने पदचक्र की योजना का भेद पुनिम को दे दिया :  
 पुनिम ने, जो मुमदिक को वफादार थी, कर्नल नम  
 को गये हाथ पकड़ लिया और दोनों क्रमानों को अ  
 कब्जे में ले लिया। कर्नल नमीरों कुछ भी नहीं  
 पाये। बेशक, कर्नल ने बाद में अपनी पहली अमर  
 की कमर पूरी कर ली - मगर कं दशक में वह जन  
 की हैमियत से शाह की खुफिया पुनिम सवाक अ  
 शाह के दमनतक के प्रधान बने। उनकी उन्नति  
 सिलमिने का अंत १९७६ में हुआ, जब ईरानी का  
 की विजय के बाद उन्हें जनता के विरुद्ध अपने अपरा  
 की जवाबदेही करनी पड़ी और मृत्युदंड का भागी हो  
 पड़ा।

पहले प्रयास की विफलता ने किम रुजवेल्ट कं  
 हतोत्साह नहीं किया। अपने एक ईरानी एजेंट के घ  
 बैठे-बैठे वह घटनाचक्र पर निगाह रखे हुए थे। का  
 बिलकुल निश्चित थे, क्योंकि उन्हें मालूम था कि उनके  
 "भारी तोपखाने" - रिश्वत से खरीदी भीड़ - के  
 मैदान में उतारना तो अभी बाकी ही है।

उधर जनरल जहदी अपने अमरीकी मित्रों के  
 निर्देशों पर चल रहे थे ( उनके पुत्र अर्दशेर जहदी,  
 जो बाद में शाह के अमरीका में राजदूत बने, सी०  
 आई० ए० के साथ उनके संपर्क-मूक थे ) और  
 अवकाशप्राप्त सेनाधिकारी सन् १९, जिसके







झटका कर रहे थे—इन्कार करनेवालों को वे मार-  
 मारकर जड़मरा कर रहे थे। कारो को रोककर झाड़वों  
 को मारने के शीशों पर शाह के रंगीन चित्र मारने  
 को विवश किया जा रहा था। इसके लिए पहले ही  
 इन्हीं मर्यादा में चित्र छाप लिये गये थे—इसके लिए  
 विमल कन्वेन्ट ने सी० आई० ए० का पैसा दिया था।  
 जब चित्र सत्त्व हो गये, तो उनकी जगह एक रिश्ता  
 के मोटे चिपकाये जाने लगे, जिन पर शाह का चित्र  
 था।

यह देखकर कि निर्णायक घड़ी आ गयी है, कन्वेन्ट  
 अपने शरणस्थल से निकले और उस मगबिंद की  
 कोठरी में पहुँचे, जहाँ जहदी स्थित हुए थे। उन्होंने  
 सरकार के नये अभ्युद्योगों के विजय के लिए बधाई दी।  
 लगभग उसी समय जहदी के गहवोगी अपगरी का एक  
 दल भी वहाँ आ पहुँचा। जहदी को अपने कंधों पर  
 उठाये वे वहाँ इनबार में घुड़ एक टैंक तक ले गये  
 जो उन्हें लेकर मथर गति में जनरल ग्लान-भवन की  
 तरफ चले दिया। उधर एक और टैंक जिसे एक  
 अमरीकी सैनिक मन्नाहकार चला रहा था (जिस  
 में उस समय कोई ३००० अमरीकी सैनिक सार्वजनिक  
 थे), प्रधान मंत्री-निवास पहुँचा और मोरे दल  
 गया। अपनी जान बचाने के लिए मुगलिय गिरदी के  
 बुरखे आगे, मगर उन्हें बड़ी दबाव दिया गया।

... ने विजय के लक्ष्य को  
 ... की दिन शाम की नये प्रकाश  
 ... जहदी दुःखानाम पहुँचे। उन्हें







के एक विगत अष्टमाद की तरह में ईगनी ममात्र के  
नमभग हूँ ही शेष को अपने मित्रों में बँट दिया।  
ईगन में विशेष रूप में आये सी० आई० ए० विदेशियों  
के मवाक अधिकाधिक को नागियों में सीगो यों  
“गहन गुल-गुल” प्रविधियों का प्रमिशन दिया।

तत्काल मवाक राज्य के भीतर राज्य था।  
गार के मरदान ने उसे कानून अथवा नैतिकता के ऊपर  
कर दिया और किसी भी अथवा के लिए उत्तरदायित्व  
में मुक्त कर दिया था। मवाक के एजेंटों को तनिक  
में भी मुबह पर किसी को भी गिरफ्तार करने और  
गारट के बिना तलाशिया लेने का अधिकार था।  
मवाक के पत्रों में पहुँचे लोग हमेशा-हमेशा के लिए  
सायब हो जाने थे - मुश्किलों की मुनवाई के पहले हिरान्त  
में रहने की अवधि अथवा फौजी अमानों द्वारा बंद  
रवाजों के पीछे मुनायी मझाओं पर किसी तरह की  
कोई सीमा न थी।

सी० आई० ए० प्रमिशन अपने मित्रों पर नाब  
कर सकते थे - मवाक के सीगो ने बाहे मरोड-  
मरोडकर जोड़ों से अलग कर देने, नाखून और दाँत  
खाइने, अमुलिया तोड़ने, चेहरो पर उबपना पानी  
डेलने और आखे निकाल लेने की कला को बहुत  
हल्दी ही सीख लिया। ये हत्यारे अपने को “काने  
कीम” कहते थे और अपने शिकारों को कोमिने  
दखाने की तीसरी मजिल पर यवनाए दिया करते  
थे। दिन के समय डैदियों की चीत्कारे मडक के दोर  
दब जाया करती थी, पर रात को वे बंद छिड़कियों







गणितार्थ तथा प्रयोगी कार्य विभाग का मुख्यतः  
 या विभागें प्रधान ईरान में गुप्त कार्यों के अनुबन्धी,  
 प्राग में जन्मे गुप्तधर्मों अधिपति गेहरे गारा और  
 येन विश्वविद्यालय के सिद्धि ग्नातक नार्मन पान के।  
 जिस मन्त्रालय के चर्चों माई आर्चोबान्ड मन्त्रालय  
 विभागाध्यक्ष के प्रथम मन्त्रालय थे। कार्दिया विश्वविद्यालय  
 के भूतपूर्व व्याख्याता चार्ल्स जमिम मी० आई० ए० के  
 लिए मध्यपूर्व के मुख्य विज्ञानगणनी थे।

प्रमगन पन्नाम के दशक के आरम्भ में मध्यपूर्व  
 की स्थिति का विज्ञान मी० आई० ए० के विशेषज्ञों  
 को शायद ही मनोप दे सकता था। द्वितीय विश्व युद्ध  
 के बाद पूँजीवाद के आम मकट के सहजाने और  
 समाजवादी विरादरी के उदय के साथ-साथ इन क्षेत्र  
 में राष्ट्रीय चेतना तेजी से विकसित होती गयी और  
 राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन जोर पकड़ता गया। मध्यपूर्व  
 राष्ट्रो का तेल के इजारों के प्रभुत्व के विरुद्ध और  
 तेल के राष्ट्रीयकरण तथा अपने राष्ट्रीय तेल उद्योगों  
 के लिए मध्यर्ष इस आंदोलन का एक प्रमुख सङ्ग  
 था।

इस बात के बावजूद कि ईरान में राष्ट्रीय मुक्ति  
 आंदोलन को कुचल दिया गया था, उसने अपने पड़ोसी  
 देशों पर स्पष्टतः आतिकारी प्रभाव डाला था और  
 मी० आई० ए० को प्रत्यक्षत वहा साम्राज्यवाद-  
 विरोधी कार्रवाइयों के फिर से फूट पड़ने की आशवा  
 थी। मिस्र में राष्ट्रपति नासिर को एकदम स्वतंत्र  
 नीतियों पर चलते और सीरिया में वामपन्थीय







पारस्परिक राजनय, जो विदेश विभाग के कार्यक्षेत्र में आता था, और वाशिंगटन के वास्तविक, अपोषित लक्ष्यों की सिद्धि की ओर लक्षित गुप्त राजनय, जो सी० आई० ए० के कार्यक्षेत्र में था।

इस प्रसंग में 'एट डेज' पत्रिका ने लिखा है "जहाँ विदेश विभाग के विश्लेषक अक्सर दीर्घकालिक दृष्टिकोण लेते हुए इस क्षेत्र के मूलभूत प्रश्नों से जूझते थे और अमरीकी नीति में कुछ सुमनसि बनाये रखने का यत्न करते थे, वहाँ सी० आई० ए० कर्मी, जिनके पास साधनों की कोई कमी न थी, दीर्घकालिक अथवा मध्यमकालिक परिप्रेक्ष्य की तकनीक भी बिना सिरे बिना नाटकीय कार्रवाइयों और अल्पकालिक समाधानों में प्रवृत्त होते थे।"

इन नाटकीय कार्रवाइयों में से एक एलैन इंग्लैंड की मीरिया में सत्ता-परिवर्तन की योजना थी, जहाँ १९५४ में अदीब शीशेकजी की तानाशाही के उन्ने जाने के परिणामस्वरूप सत्ता जनवादी हलफों के हाथों में आ गयी थी।

१९५६ की गरमियों में एजेंट विन्वर रिना को, जो अरबविद्या का विशेष पाठ्यक्रम पूरा कर चुके थे, सी० आई० ए० मुख्यालय में बुलाया गया और एक गुप्त मिशन पर मीरिया जाने का आदेश दिया गया। उनका औपचारिक कार्य "राजदूत की अनेकों, मीरिया में नये कामुनेट की स्थापना में गहरावना करना और दमिश्क में राजदूतावास के प्रशासनिक समर्थन में दूतावास-अधिकारियों को गहरावना देना" था।







चारों तरफ दिग्विजय का यत्न किया है, वरन् प्रभुत्व के तन्त्रन साम्राज्यवादी कग में मोचने का सर्वप्रथम नतीजा था, जिसे विदेश विभाग तथा पैदागर्भ का पूर्ण समर्थन प्राप्त था। जितने ही प्रचारात्मक दलों के बावजूद सी० आई० ए० की हैमियन कमी भी राज्य के भीतर राज्य की नहीं रही है। अमरीकी शासक हलको के आदेशों की निश्चित पूर्ति करने हुए सी० आई० ए० हमेशा ही उनकी आक्रामक प्रसारकरी आकांक्षाओं का गुप्त उपकरण ही रही है।

पचाम के दशक में मध्य-पूर्व में सी० आई० ए० की भरपूरमियों के वर्णन में यह दृष्टव्य है कि उनका ब्रिटिश गुप्तचर्या सेवा के साथ घनिष्ठ सहयोग था। इस परंपरा का प्रारंभ इराक में हुआ था और ईरान में मुसद्दिक के हटाये जाने की तैयारियों के दौरान यह मजबूत हुई। उस समय जान मिन्स्नेयर गुप्तचर्या सेवा के प्रधान थे और उनके सहकारी जासूसों के बारे में मनमानी मचाने के शौकीन जार्ज बेंनेडी यंग थे, जिन्होंने १९७६ में यह ऐलान किया था कि के० जी० बी० के एजेंट और तो और, एडवर्ड हीथ की अनुदारदनी सरकार तक में घुस गये हैं।

१९५६ के वसंत में डलेस ने ईंग्लैंड और काहिरा में सी० आई० ए० केड के जेम्स आइकेलबर्गेर को लड़न भेजा, जहाँ उन्होंने यंग के साथ गुप्त वार्ता की। यंग ने उनसे कहा कि मिस्र, सीरिया और सऊदी अरब ब्रिटेन के मार्मिक हितों के लिए गंभीर खतरा पैदा कर रहे हैं और इसलिए उनकी सरकारों को किसी भी



कीमती हाथों में सींगिया में व्यवस्था माना  
एक गड्ढे को गहरी में उतारना और नामित की दिया  
करना।

"मुझे मिला कि जैसे मैं किसी वातावरण में पहुँच  
रहा हूँ। ईश्वर ने हम बैठने को फिर से वाद करने  
का बाद में कहा था। लेकिन यह बहुत बिल्कुल  
बादला मरता है - सींगियाई सरकार का उलट्टा जाना  
बहुत लंबे समय में सी० आई० ए० की कार्यशुल्की पर  
या हो - ... पर अनुमानित नामित की दिया  
करने की योजना भी ईश्वर के लिए कोई रहस्य नहीं  
है।

१९५६ में जून के मध्य में सींगिया में एक गड्ढा  
लगा सरकार कायम की गयी जिसमें व आधे घाटी  
की प्रतिनिधित्व तथा सामाजिक शांति और दया  
के प्रतिनिधि शामिल थे। सी० आई० ए० ने जून  
में अपनी प्रतिनिधिता व्यक्त की - १ जून को एक  
बहु प्रतिष्ठान पहुँच गया। उक्त आयोग दल का ईश्वर  
की पूर्णता में निर्धारित का आयोजन और आयोजन करना  
है।

एक जून दस्तावेज में आयोग की शक्ति का उल्लेख  
का एक प्रकार निर्धारित किया गया

"सींगिया में एक निर्वात गड्ढाई सरकार की  
स्थापना जिस पर प्रतिष्ठान की कार्यशुल्की का  
कार्य में लक्ष्य का एक दल का नियुक्त की गया



पश्चिम-समर्थक और कम्युनिस्टविरोधी नीति पर चलने को तैयार हो।" \*

सीरिया में लगायी गयी सुरण तैयार थी, इस पलीते को आग दिखाना ही बाकी था। इस कदम के लिए सी० आई० ए० जिस बारूद का इस्तेमाल करने की सोच रही थी, वह ईरान की ही भानि पैदा था। इस पैसे को ईवलेड ने चोरी में सीरिया पहुँचाया और अपने एक स्थानीय एजेंट को सौंपा था।

सी० आई० ए० से यह आर्थिक सहायता प्राप्त करके शीर्षस्थ सेनाधिकारियों के बीच विद्यमान वर्ग कारियों ने दमिस्क, अलेप्पो, होम्म और सामा को काबू में लेने की विस्तृत योजना तैयार की। उनसे योजना के अनुसार सभी सीमांत चौकियों को नगर कर दिया जाना था और रेडियो स्टेशन को इन्हीं में लेकर यह ऐलान किया जाना था कि देश में अन्तर्गत वर्गवादी कब्जाने के नेतृत्व में नयी सरकार ने शक्ति ली है।

बाद में योजना में कुछ तब्दीलियाँ की गयीं। वाशिंगटन ने आसकर यह फैसला किया कि नयी सरकार भूतपूर्व सीरियाई तानाशाह अदीब शीशेकी के नेतृत्व में होनी चाहिए, जिन्हें फरवरी, १९१६ में जनवादी सैनिक अफगरो ने सत्ताधून कर दिया था। सी० आई० ए० एजेंट जासी पागमोर्ट पर कर्तव्य इजाजतीम हुगीनी को बेरुत में आये, जो शीशेकी के

\* Wilbur Crane Eveland, op. cit., p. 193



शान्त में सुरक्षा सेवा के प्रधान थे और अब रोम सीरिया के सैनिक अताशे थे। आर्थर क्लोज का इरादा हमें अपनी कार के ट्रंक में छिपाकर चोरी लेबनान-सीरिया सीमा के पार ले जाने का था ताकि भूतपूर्व प्रतिगुप्तचर्या अधिकारी की स्थानीय एजेंटों से खुद मुलाकात हो सके और वह उनके साथ शीशेखो को पुनः सत्तामूढ़ करने की योजना पर विचार कर सके।

लेकिन भूतपूर्व तानाशाह को फिर से प्रधान बनने की आशाओं को तजना पड़ा। देशानुराग सीरियाई सैनिक अफसरों की मतबंती के परिणामस्वरूप यह वास्तव में न हो सकी। ६ नवंबर, १९५६ को सीरियाई सुरक्षा अधिकारियों ने प्रतिशियावादी निम्न बुर्जुआ तत्वों और ब'आथ पार्टी के दक्षिण पक्ष की सरकारविरोधी साजिश का परदाफाश कर दिया। प्रधान षड्यंत्रकारियों को गिरफ्तार कर लिया गया और अन्यो को राजनीतिक पदों से बरखास्त कर दिया गया। सीरिया में एक नयी सरकार की स्थापना की गयी, जिससे ब'आथ पार्टी के उन सभी सदस्यों को निकाल दिया गया था, जिनका षड्यंत्र से संबंध था।

इस प्रकार सी० आई० ए० की सीरियाविरोधी योजनाएँ पूर्णतः ध्वस्त हो गयीं। लेकिन जैसा कि वाशिंगटन के षटनाचक्र ने सिद्ध किया, संपुक्त राज्य अमेरिका के शासक हलकों ने मध्य-पूर्वी जनगण के विरुद्ध अपने गुन सुद का अतः करने की बात मोची भी नहीं

माहीद चौक में साइडों की फुनगियों को नोचें



के गोलों के टुकड़ों ने उड़ा दिया था। चौक के किनारों पर स्थित मकान तोपों की गोलाबारी में विध्वंस होकर वीरान पड़े थे। वे सभी भ्रान्तकारी रूप में एक जैसे लग रहे थे - जले हुए और कालिघ से डंके हुए। टूटी हुई दीवारों में लोहे के ढांचे के उखड़े हुए निरे मरोड़ी हुई उगलियों की तरह से निकले हुए थे और हवा के झोंके टूटी हुई मीढ़ियों से मीमेड की धून को बहाकर ला रहे थे

१९७५ के वसंत में, जब देश में प्रचंड दहशुद छिड़ उठा था, विल्बर ईवलेड ने लेबनान की राजधानी में जो देखा, वह यही था। जहां उन्होंने अपने "दुल राजनय" के कैरियर का समापन किया था, उस शहर की यह दर्दनाक दृश्य देखकर उन्हें अपनी अवस्था कुछ कचोटनी-भी लगी।

"अपने नीचे मैं जिम बदरगाह को जलने देख रहा था, वह पचीस साल पहले जब मैं वहां पहली बार आया था, एक शान्त बदरगाह हुआ करता था," ईवलेड को याद आया। "विगत में मैं लेबनान के आंतरिक मामलों में अमरीका के प्रच्छन्न हमलों में एक सहभागी रहा था। लेबनान का विनाश, जो था अनिवार्य प्रतीत होता था, कम से कम कुछ इस तरह हमारी दम्नदाजी का नतीजा था।" \*

'एट डेड' पत्रिका ने सीधे-सीधे कहा "सी. आई. ए. ने ही लेबनानी गणराज्य की एका और

\* Wilbur Crane Eveland, *op cit.*, p. 15



समशील व्यवस्था के घुस के बीज बोये थे । \*

लेबनान के विरुद्ध सी० आई० ए० का पहला अमरीकी कांग्रेस द्वारा मार्च, १९५७ में अनुमोदित आइडनहॉवर सिद्धांत से घनिष्ठ जुड़ा हुआ था। यह पहला मौका था कि जब मध्य-पूर्व राज्य अमरीका ने "कम्युनिस्ट आक्रमण" से मध्य-पूर्व की रक्षा करने के लिए सशस्त्र सेनाओं का उपयोग करने की अपनी उद्यतता की खुले तौर पर घोषणा की थी और राजनीतिक व्यवहार में "बुनियादी अमरीकी हितों की स्थापना को प्रस्तुत किया था। मध्य-पूर्व में अमरीकी नीति के बारे में एक विशेष संदेश में राष्ट्रपति आइडनहॉवर ने मध्य-पूर्व राज्य अमरीका की डम क्षमता में अपनी सेनाओं का उपयोग कर सक्ने की आवश्यकता पर जोर दिया और कांग्रेस में तथाकथित मैनिफेस्टा डैमो तथा सहयोग कार्यक्रम के लिए २० करोड़ डॉलर की मांग की।

लेबनान के पश्चिम समर्थक नेताओं - राष्ट्रपति बामिल शामू और विदेश मंत्री चार्ल्स मैनिफेस्ट - ने आइडनहॉवर सिद्धांत के लिए अपने पूर्ण समर्थन की गुरु घोषित कर दिया। शामू की मध्य-पूर्व में अमरीकी राजनीति पर चमत्कार की उद्यतता ने उनके लिए अमरीकी समर्थन को सुनिश्चित कर दिया। जून १९५७ में होनेवाले समशील चुनावों की पूर्वदेला में उनके लिए यह समर्थन कोई कम महत्व का नहीं था।



“डलेस चाहते थे कि वह (शामू - सं) अने पद पर बने रहे, अरब जगत में और थोड़ा ऐसा न था, जो अमरीकी आकांक्षाओं के इतने अधीन हो।” इस प्रसंग में अमरीकी अनुसंधानकर्मी पूजेन एवं फिशर तथा एम० डेरिफ बैस्पूनी ने लिखा है।

लेकिन सिर्फ इच्छा ही काफी नहीं थी—शामू को पदासीन रखने के लिए कुछ न कुछ किया जाना उम्मीद था। इसलिए १९५७ से बेरुत मध्य-पूर्व में सी० आई० ए० के समस्त ध्वसकार्य का केंद्र बन गया। मेसन में अमरीकी मैन्य गुप्तचर्या एजेन्टों को सी० आई० ए० के बेरुत केंद्र के प्रमुख गोस्न जोग्गी के अधीन का दिया गया। एलैन डलेस ने मेसनानी सक्रिया की सहायता के लिए किम मजबेस्ट को व्यक्तिगत रूप में उत्तरदायी बना दिया। इस सक्रिया का लक्ष्य था रिश्तन, विरोधों की बदनामी, ध्वंसमेज, आदि हर उपायध साधन का उपयोग करते हुए चुनावों में शामू और मजिद को जितवाना। इस कार्यक्रम के लिए पैसा अमरी या सी० आई० ए० ने अपने कठगुनलों के चुनावों में मुक्त हस्त पैसा दिया।

ईश्वरदेव लिखते हैं “चुनाव के दौर भर में निर्दिष्ट रूप में मेसनानी गाउहों में भरे पैसों को मेजर सहायता प्रभावित किया करना था और फिर दो नये राज हो दें उन्हे हार्वी आर्माहों के सी० आई० ए० विन कार्मल

\* Eugene M Fisher and M Cheryl Samuels, *Save Over the Arab World*, Potting Publishing Co., Chicago, 1972  
132



के लोगों द्वारा फिर से भरे जाने के लिए इनावास  
लौटा करता था। जल्दी ही मेरी एकदम सफेद छतवाली  
डिमोटी कार राष्ट्रपति प्रसाद के बाहर देखी  
जानेवाली एक आम चीज बन गयी \*

सी० आई० ए० के पैसे ने अपनी अनिष्टकारी  
भूमिका अदा की। अमरीकी कठपुतली द्वारा हाथ  
खोलकर दी गयी रिश्वतों की बदौलत उन्हें म्यामा  
बहुमत प्राप्त हो गया। लेबनानी संसदीय प्रणाली में  
एक गहरी दरार पैदा हो गयी। जल्दी ही देश भर में  
असंतोष की लहर दौड़ गयी और १९५८ के वसंत  
में शामू शासन के विरुद्ध त्रिपोली में विद्रोह फूट पड़ा  
जो गृहयुद्ध में परिणत हो गया।

'एट डेज' पत्रिका ने सही ही टीका की है  
"इसे १७ साल बाद वही अधिक लंबे और रक्तर्जित  
गृह कन्ह का पूर्वगामी सिद्ध होना था। \*\*

लेबनानी इतिहास के इन दोनों त्रासद घटनाक्रमों  
के बीच संबंध प्रत्यक्ष है, जैसे १९७५-७६ में लेबनान  
में हमारे गृहयुद्ध के भड़काने में सी० आई० ए० की  
प्रच्छन्न सहभागिता भी छिपी हुई नहीं है।

"लेबनान के मूलो गृहयुद्ध में गर्क हो जाने के  
साथ कुछ अधिकारियों ने सी० आई० ए० पर लड़ाई  
का प्रच्छन्न रूप से समर्थन करने का आरोप लगाया  
राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद में हेनरी किमिज़र के भूतपूर्व

\* Wilbur Crane Eveland, p. 252  
\*\* 8 Days, Vol. 3, 1981 p. 11



सामाजिक संस्थाओं में फैला है।”

दूसरा तथ्य के अन्तर्गत विचारणीय नहीं है। तब तक प्रकाश हो गया है कि इसका मतलब है मी० आर्च० ए० की एक विशेषता तबका मेचनानी मण्डल को मारगने की कार्यवाही में सक्रिय भाग ले रही थी। मेचनो की एवेन में स्थित एक और तबका दक्षिणपंथी ईसाई दलों को पैसा दे रही थी और प्रशिक्षित कर रही थी।

मी० आर्च० ए० ने मेचनान के पन्नाजि मेनाजों के साथ अपने गनिष्ठ मन्त्रियों को गृहयुद्ध के बाद, क्रांति प्रशासन के अधीन भी बनाये रखा। १९८१ में राष्ट्रपति गैरन के ममा दहन के बाद ये मन्त्र्य और भी रहे।

नवंबर १९८० में अमरीकी मन्त्रालयों के गनिष्ठ गैरन को निर्वाचित करने के निर्णय के बाद, जिन्होंने फिलिप्पीनी मुक्ति समूह को बारबार ‘आतंकवादी समूह’ की मजा दी थी, मी० आर्च० ए० ने पन्नाजियों को मेचनान को मीरियाई शान्तिरक्षक मेना (मेचनान में अरब देशों की शान्तिरक्षक मेनाओं का अग - स०) और फिलिप्पीनी कमांडो दलों में ‘मुक्त’ करवाने की एक योजना सुझायी, जिसे इतराएन के सहयोग से कार्यरूप दिया जाना था।”\*\*

लेग्वी में तैयार की गयी गुप्त योजना में फिलिप्पीनियों को पश्चिमी बेहत से खदेड़ बाहर करने के लिए गृहयुद्ध के पुनराारम्भ की कल्पना की गयी थी,

\* Ibid., p. 10.

\*\* 8 Days, p. 11.



जब कि इसराएल को, सशस्त्र पार्यन्तवादी दलों के साथ सहयोग करते हुए बेकाआ घाटी में तैनात सीरियाई सेनाओं पर प्रहार करना था।

फरवरी, १९८१ में 'मिडिल ईस्ट पत्रिका' ने सैडविक सन्धिया के विवरण प्रकाशित करके लेबनान में सी० आई० ए० की प्रच्छन्न गतिविधियों का एक नया भंडाफोड़ किया। सी० आई० ए० की इस योजना के अनुसार इसराएल को लेबनान के दक्षिण में सीरियाई सैन्यों को लड़ाई में उलझाना था और फिर दक्षिण पश्चिमी ईसाइयों के हमले को, जिसे बेल्मन के आत्म-गाम फिलिस्तीनी शरणार्थी शिविरो को नष्ट करना था समर्थन प्रदान करने के लिए उत्तर की नग्न प्रहार करना था। सी० आई० ए० की मान्यता थी कि इसमें गारा ही लेबनान दक्षिणपक्ष के हाथों में आ जायगा और फिलिस्तीनी मुक्ति संगठन को नष्ट करके यह योजना फिलिस्तीनी समस्या को हल कर देगी। लोगों का विश्वास था कि इसमें जाईन को कैप डेविड समर्थकों में शामिल होने और तथाकथित फिलिस्तीनी स्वायत्तता के बारे में, जिसे फिलिस्तीन को अस्व-जनना ने निश्चयात्मक रूप में अस्वीकार कर दिया था वार्ता में भाग लेने को मजबूर किया जा सकेगा।

१९८२ की गरमियों में मध्य-पूर्व की स्थिति न एक और मनरनाक मोड़ लिया। हाइट हाउस की पूरी मिल्कीभगन से इसराएली सैन्यनश ने लेबनान के सैन्य एक नया व्यापकनरीय हमला शुरू किया और फिलिस्तीनियों तथा लेबनानियों के विनाश अति



राम और गुलवर जनमहार की नीति बरतते हुए देश के एक बड़े भाग को अपने कब्जे में ले लिया। इमराएली फौज ने बर्बरतम अस्त्रों—कनस्टर बम, प्लेट बम, फास्फोरम बम, नेपाम का प्रयोग किया, माइदा (सीडोन), नवातिया और एस्मूर (टापर) के मुशहाल गहरो को भूमिसात कर दिया और लेबनानी प्रदेश में फिलिस्तीनी गिबिरो को जलाकर خاک कर दिया। आक्रमणकारियों ने लेबनानी राष्ट्रवादी-देशभक्त शक्तियों और फिलिस्तीनी प्रतिरोध आंदोलन के अंतिम गढ़ पश्चिमी बेरुत के रिहायशी इलाकों को घेरकर खडहरो में बदल दिया।

विश्व प्रेस ने ठीक ही कहा है कि सीयोनवादी फिलिस्तीनी समस्या को “हल” करने के लिए गिन तरीकों को इस्तेमाल कर रहे हैं, उनकी सिर्फ द्वितीय विश्वयुद्ध के समय नात्सियों के “यहूदी समस्या के हल” से ही तुलना की जा सकती है।

लेकिन ऐसा नहीं लगता कि जघन्य ऐतिहासिक सादृश्यो से आक्रमणकारी के समुद्रपार संरक्षक तंत्र भी सकोच का अनुभव करते हो—वे प्रत्यक्षतः यही मानते हैं कि मध्य-पूर्व में संयुक्त राज्य अमरीका की साम्राज्यवादी रणनीति को कार्यरूप देने के मामले में साध्य किसी भी साधन को उचित बना देने हैं।

१९८२ के ग्रीष्म में लेबनान पर इसराएल के आक्रमण ने इस भूमध्यसागरीय देश में अमरीकी सैनिक घुमपैठ के लिए मार्ग प्रशस्त कर दिया। शीघ्र ही लेबनान में (३० वर्षों में दूसरी बार) अमरीकी सैनिक



मे स्थिति को सामान्य बनाने में सहायक "शांति-स्थापक" सेना के रूप में पेश करने की कोशिश कर रहा था, काफी-कुछ सैनिक बच्चे की याद दिवाने लगी। यह बात लेबनानी-इसराएली शानि ममभीने पर हस्ताक्षर के बाद, जो वास्तव में लेबनान पर इसराएली, अमरीकी हुकमशाही की स्थापना का परिचायक था विनोयन उभरकर सामने आयी।

ग्रीष्म, १९८३ के अंत तक स्पष्ट हो गया कि लेबनान में राष्ट्रीय मतैक्य की स्थापना में हर तरह से छोड़े अटकाकर और इसराएल तथा लेबनानी प्रति-स्था को नये कुहृत्यों के लिए उबमाकर रंगन प्रशामन करने लिए एक सामरिक सेतुशीर्ष बनाना और लेबनान में अरब राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन तथा स्वतंत्र राज्यों, सैन्यन मौरिया के विरुद्ध सघर्ष के लिए अड़े में खर्वर्तित करना चाहता है।

लेबनान की घटनाओं ने तब और भी अनर्थसूचक ड ले लिया, जब अगस्त के अंत में तथाकथित "इसराएली सेनाओं" में शामिल अमरीकी सैरीन ने राष्ट्रीय देशभक्त शक्तियों के दमन में दक्षिण-ईसाई सैन्य दस्तों की सहायता करते हुए सामरिक बाइयो में प्रत्यक्ष भाग लेना शुरू कर दिया।

२० सितंबर, १९८३ को लेबनान के गृहयुद्ध में अमरीकी शिरकत सहसा बढ गयी। उस दिन अमरीकी सैनिकों ने बेरुत के निकटवर्ती पहाड़ी इलाको पर हस्त गोलाबारी की। गोलाबारी का आदेश लेबनानी



सेना की मदद करने के उद्देश्य से दिया गया था। यह वियतनाम युद्ध के बाद से अमरीकी नौसेना का सबसे बड़ी सामरिक कार्रवाई थी। लेबनान के तटों समुद्र में गस्त लगाते हुए अमरीकी नौसेना के युद्धपोतों ने मुसलमानों की पोलीशनों पर गोले बरसाये। इस तरह से समुक्त राज्य अमरीका ने देश के गिर्द की पहाडियों में लेबनानी सेना को आतं महत्वपूर्ण पोलीशने हाथ से न जाने देने में मदद करने के लिए सामरिक कार्रवाइयो में अपनी शिरकत की। पैटागॉन के प्रवक्ताओं ने बताया कि अमरीकी युद्धपोतों ने एक दिन के भीतर अपनी ५ इंची तोपों से ३०० से अधिक गोले बरसाये थे।

अरब देशों के सारे प्रगतिशील जनमत की राय है कि लेबनान के विवाद में अमरीका का प्रत्यक्ष सैनिक हस्तक्षेप नाम अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद की निशान है। जिसका गहारा वाशिंगटन इसलिए से रहा है कि इस छोटे से भूमध्यसागरीय देश पर आतं हस्त शाही कायम कर गये।

हाल के समय में अफगानिस्तान प्रतिष्ठान के सी० आई० ए० का एक मुख्य मध्य बन गया है। १९७८ के समय में अफगानिस्तान, जिसे समय के समय में गिराई हुए देशों में गिना जाता था, बावजूद में अत्याप्त लगाकर बीमारी गंदी में आ गया। अतः जाति ने अफगान जनता के लिए सामग्री उपकरण और साधनाध्यवसायी निर्भरता में मुक्त होने और अरबों विकास तथा प्रगति के पथ को उन्मुक्त कर दिया।



पाना एक दीर्घकालिक प्रक्रिया है लेकिन अवामी सरकार की पहली ही आज्ञप्तियों ने दूग्गामी सामाजिक-आर्थिक रूपांतरणों की बुनियाद रख दी।

उमोदारों और मूदखोरों के बजों की मसूची स्थियों की मुक्ति, नया विवाह कानून और भूमि मुशार के बारे में प्रसिद्ध आज्ञप्ति सं० ८ - सभी ऐसे कदम थे कि जिन्हें अभी हाल तक अकल्पनीय समझा जाता था और वे लाखों उत्पीड़ितों को सचेतन कार्रवाइयों के लिए जागृत करने लगे।

शानि के प्रारंभिक दिनों में ही अफगानिस्तान में भूतपूर्व शामक पुरख की तरफ, इयूरेड रेखा के उस पार पाकिस्तानी प्रदेश में भागकर चले गये जहाँ वे पठान कबीले रहते हैं, जिन्हें अंग्रेजों ने पिछली सदी में अपने वतन से काटकर अलग कर दिया था। विकाशकारियों ने इस्लाम के रक्षार्थ जिहाद के नारे लगाकर अफगानिस्तान में छाटे-छोटे गिराहों को भेजना शुरू कर दिया जो बड़ा अलग धन्य गावा हमने करने और अफगानिस्तानी अवामी जमहूरी के मदत्यों, ग्रामीण अध्यापकों सहकारी आंदोलन कार्यकर्ताओं और नयी सरकार के सभी समर्थकों निर्ममतापूर्वक हत्याग करने थे।

यद्यपि नोडफोड और आतंकवादी कार्रवाइयाँ नारिक स्थिति में अस्थिरता उत्पन्न की पर दम्यगणात्मक नियम कि मुमज्जिन निविगें और अह्रा के बाहर से वित्तीय महापना और हथियारों और



निदेशको के बिना उनके प्रयासों का विफल होना अवश्यभावी है।

इस बात को साम्राज्यवादियों ने भी समझ लिया और उन्होंने जाति के फौरन ही बाद स्थानीय प्रतिक्रियावादियों को अपने मुख्य हथियार की तरह से इस्तेमाल करते हुए नयी व्यवस्था के विरुद्ध अधोपित युद्ध छेड़ दिया। मिसाल के लिए, ठेठ अप्रैल, १९७८ में ही पश्चिमी प्रचार ने विभिन्न सामंती कुलों द्वारा युद्ध के हथियारबंद गिरोहों को "राजनीतिक संगठन" घोषित कर दिया था।

जनवरी, १९८० में पाकिस्तान में हुई इस्लामी सम्मेलन संगठन की बैठक में अफगान प्रतिक्रियावादियों का प्रतिनिधित्व पाकिस्तान में आधारित छ पार्टियों और गुटों ने किया। ये सभी चरम दक्षिणपंथी राष्ट्रवादी संगठन हैं और उनका "जिहाद" का नारा अफगानिस्तान के बड़े बर्गुआजी और सामंती भूमालिनों के पुरानी व्यवस्था को बहाल करने और अपने बर्गों को प्रभुत्व को पुनः प्राप्त करने के प्रयासों के लिए एक आवरण मात्र है। हिस्बे इस्लामी, जो अफगान प्रतिजातिकारी संगठनों में सबसे बड़ा और सर्वाधिक संगठित है, के नेता गुलबुदीन हिकमतयार हैं, जो जाति के पहले बुद्धूद मूढ़ों में एक बड़े जमींदार थे। हिस्बे इस्लामी का राजनीतिक कार्यक्रम अफगानिस्तान के जनवादी प्रगतिशील शासन को उलटना है। इसे वैरो छद्मवादी मांगों की ओर छिपाया जाना है, जैसे औरतों के लिए बुना







निदेशको के बिना उनके प्रयामों का विना  
अवश्यभावी है।

इस बात को साम्राज्यवादियों ने भी मर  
और उन्होंने प्राति के फौरन ही बाद स्वतंत्र  
वादियों को अपने मुख्य हथियार की तरह दे  
करते हुए नयी व्यवस्था के विरुद्ध अप्रति  
दिया। मिसाल के लिए, ठेठ अप्रैल, १९३५  
पश्चिमी प्रचार ने विभिन्न सामग्री को  
हथियारबंद गिराओ को "राजनीतिक सपना"  
कर दिया था।



आने की अनिवार्यता, बालक-बालिकाओं की अलग शिक्षा, सरकारी कर्मचारियों के लिए पश्चिमी पहनावे के बजाय "राष्ट्रीय पोशाक" और शराब तथा जुए पर पाबंदी। तिस पर भी "पश्चिमी प्रभाव के विरुद्ध मार्च" हिक्मतयार को सी० आई० ए० और इसराएल के मोम्साद के साथ पनिष्ठ सहयोग करने से नहीं रोकता।

अफगानिस्तानी कौमी इस्लामी मुहाज के नेता मेद अहमद जिलानी और एक अन्य प्रतिक्रांतिकारी मोरचे के नेता मुजादीदी सिबगतउल्लाह खानदानी पीर हैं, जो हिक्मतयार की ही तरह मजहबी लफ्फाजी का इस्तेमाल अपने प्रतिक्रांतिकारी कार्यक्रम पर परदा डालने के लिए करते हैं। दोनों ही उन सामान्य कुत्तों के हैं, जिनकी अफगानिस्तान के विभिन्न इलाकों में बड़ी-बड़ी जमींदारिया थीं। अफगानिस्तान की जमान-ए-इस्लामी के नेता बुराहानुद्दीन रब्बानी भी सामान्य कुत्तों के ही हैं। आति के पहले उनकी बाबुल और बदगशा नुवों में विशाल जमींदारिया थीं और वह ब्रिटेन और अमरीका को कराकुल (पोस्तीन) की थोक फर्माएँ किया करते थे। हिक्मतयार की ही तरह रब्बानी ने भी सी० आई० ए० के साथ पनिष्ठ गपक है और उसमें वह पैसे और निर्देश प्राप्त करते हैं।

अब्रैल आति के फौरन ही बाद प्रसिद्ध अफगानिस्तान-विशेषज्ञ, सी० आई० ए० एजेंट मुरै मुरै काबूल पहुँचे, ताकि अफगान प्रतिक्रांतिकारियों में गपक स्थापित कर सके। अपने कार्यभार में वह अगस्त १९



निदेशको के बिना उनके प्रयासों का विश्व  
अवश्यभावी है।

इस बात को सोसियलवादियों ने भी समझा  
और उन्होंने शांति के फौरन ही बाद मध्यानीय प्रतिनिधि  
वादियों को अपने मुख्य हथियार की तरह से इस्ते  
करते हुए नयी व्यवस्था के विन्दु अर्थात् पुनर्  
दिया। मिसाल के लिए, ठेठ अप्रैल १९७८ में  
पश्चिमी प्रचार ने विभिन्न सामग्री कुलों द्वारा  
हथियारबंद गिरोहों को "राजनीतिक संगठन" घो  
कर दिया था।

जनवरी, १९८० में पाकिस्तान में हुई इस्लाम  
सम्मेलन संगठन की बैठक में अफगान प्रतिनिधि  
वादियों का प्रतिनिधित्व पाकिस्तान में आधुनिक  
वादियों और गुटों ने किया। ये सभी चरम दक्षिण  
राष्ट्रवादी संगठन हैं और उनका विचार का ता  
असमानिमान के बड़े वर्गवादी और सामग्री भूमिका  
के पुरानी व्यवस्था को बहाल करने और अपने को  
हुए प्रमुख को पुनर् प्राप्त करने के प्रयास  
के लिए एक आवश्यक माध्यम है। जिसे इस्लामी  
और अफगान प्रतिनिधित्व संगठन में सबसे  
बड़ा और सर्वाधिक संगठित है। वे तथा अन्य इस्लामी  
हिंसक संगठन हैं जो वर्तमान में पश्चिम दुनिया में  
एक बड़े इस्लामी हैं। जिसे इस्लामी का राजनीतिक  
कार्यक्रम अफगानिस्तान में जनवादी प्रजातंत्रिक सामंजस्य  
को उद्देश्य है। इसे इसी प्रतिनिधि का नाम  
में लिखा गया है, जैसा कि यह है।



गठने की अनिवार्यता, बालक-बालिकाओं की अलग शिक्षा, सरकारी कर्मचारियों के लिए पश्चिमी पहनावे ; बजाय "राष्ट्रीय पोशाक" और शराब तथा जुए र पाबंदी। तिस पर भी "पश्चिमी प्रभाव के विरुद्ध धर्म" हिक्मतयार को सी० आई० ए० और इसराएल ; मोम्माद के साथ घनिष्ठ सहयोग करने से नहीं जाता।

अफगानिस्तानी कौमी इस्लामी मुहाज्र के नेता मयद अहमद जिलानी और एक अन्य प्रतित्रातिकारी घोरवे के नेता मुजादीदी सिबगतउल्लाह मानदानी पीर हैं, जो हिक्मतयार की ही तरह मजहबी लफ्फाजी का इस्तेमाल अपने प्रतित्रातिकारी कार्यक्रम पर परदा डालने के लिए करते हैं। दोनों ही उन सामंत कुलों के हैं, जिनकी अफगानिस्तान के विभिन्न इलाकों में बड़ी-बड़ी जमींदारियां थीं। अफगानिस्तान की जमात-ए-इस्लामी के नेता बुराहानुद्दीन रब्बानी भी सामंत कुल के ही हैं। त्राति के पहले उनकी काबुल और बदखशां प्रान्तों में विद्याल जमींदारियां थी और वह ब्रिटेन और अमरीका को कराकुल (पोम्तीन) की थोक फरोख्त किया करते थे। हिक्मतयार की ही तरह रब्बानी के भी सी० आई० ए० के साथ घनिष्ठ संपर्क है और उसने वह पैसों और निर्देश प्राप्त किये हैं।

अप्रैल त्राति के फौरन ही बाद प्रसिद्ध अफगानिस्तान-विशेषज्ञ, सी० आई० ए० एजेट मुई दूप्पे काबुल पहुँचे, ताकि अफगान प्रतित्रातिकारियों से संपर्क स्थापित कर सकें। अपने कार्यभार में वह असफल रहे



और नवंबर, १९७८ में अफगानिस्तान से निष्कासित कर दिये जाने पर वह पाकिस्तान चले गये और वहाँ सी० आई० ए० एजेंटों की एक टोली का मकान बन करने लगे। उनकी टोली मजम्ह प्रनिवाहिकारी विरोधों का समन्वयन केंद्र बन गयी। लगता है कि पाक-अफगान सीमा पर अन्य अमरीकी गुप्तचर एजेंट भी मादक द्रव्य निरोध प्रशासन और एशिया फाउंडेशन के आवरण में इसी तरह के कार्यों का निर्वहन करते हैं।

१९७७ में इस्लामाबाद में सी० आई० ए० केंद्र के प्रमुख जॉन रैगन थे। उनके सहकारी रॉबर्ट लेनार्ड नामक अमरीकी "राजनयज्ञ" थे, जिन्हें १९७४ में ही अवाछनीय व्यक्ति घोषित करके अफगानिस्तान से निकाल दिया गया था। अप्रैल ज्ञानि के बाद उनकी सहायता के लिए सत्ता-परिवर्तन और अन्तर्धर्म कार्यों के विशेषज्ञ ली रॉबेन्सन, रॉजर्स ब्रॉक और वान डेविड सऊदी अरब से इस्लामाबाद पहुंच गये। ये "सामान्य अमरीकी" अपनी गतिविधियों का पाकिस्तानी राष्ट्रपति के वैदेशिक मामलों के सलाहकार आगा शाही और पाकिस्तानी विदेश सचिव नवाज शाही के साथ समन्वय करते थे। आगा शाही का अपने भाई, संपुर्ण राज्य अमरीका में पाकिस्तानी राजदूत आगा मलीक के जरिए सी० आई० ए० के साथ अरसे से संबंध था, जब कि नवाज शाही की अफगानिस्तान के भूतपूर्व शाही शाहदान के साथ रिश्तेदारी थी।

अमरीकी तथा विश्व जनमत के आगे अफगान प्रनिवाहिकारियों को वित्तीय सहायता देने और उन्हें



प्रमिश्रक तथा हथियार भेजने का औचित्य-स्थापन करने के लिए वाशिंगटन अफगानिस्तान के जातिकारी नेताओं पर मनुष्य राज्य अमरीका के प्रति शत्रुतापूर्ण कार्यों का आरोप मढ़ने का कोई बहाना खोज रहा था। इन तरह का बहाना १४ फरवरी १९७६ को काबुल में अमरीकी राजदूत एंड्रयू डय्य की हत्या से बना। डय्य सी० आई० ए० की वाशिंगटन और काबुल के बीच पूर्ण विच्छेद करवाने की जिद के शिकार हुए।

डवर्ड के साप्ताहिक 'व्जिट्र' के अनुसार अमरीकी सरकार ने डय्य की हत्या का अफगानिस्तान के साथ संबंध-विच्छेद करने के बहाने की तरह उपयोग किया। आर्थिक सहायता सबधी सभी समझौतों और कर्जों को मगूनु कर दिया गया। डय्य के बदन किसी से उत्तराधिकारी की नामजदगी नहीं हुई और एरदम डाकुन पर मानवाधिकारों के उल्लंघन के आरोप लगाये जाने लगे।

नुर मुहम्मद तख्तो की हत्या और शीफर उल्ताह अमीन द्वारा मत्ता के हथियारे जाने की पूर्ववत्ता से सी० आई० ए० ने अफगानिस्तान के विरुद्ध अपन पब्लिश को विशेषकर तेज कर दिया। अगस्त १९७६ में जॉन रीसन पाकिस्तानी सुरक्षा के प्रधान अधिकारियों - राशीर और आलम - से मिले और उनसे अफगानिस्तान में आगामी परिवर्तन के मिनीमम से सहयोग के बारे में सहमति हा गया। प्रत्यक्ष है कि फिर से इन परिवर्तनों की परत ही सुचना मिल चुकी थी। इन बैठक से सी० आई० ए० तथा पाकिस्तानी



गुप्तचरों द्वारा जनवादी अफगानिस्तान के विनायक कार्रवाई का एक संयुक्त कार्यक्रम स्वीकार किया गया।

सी० आई० ए० प्रमुखों द्वारा इस कार्यक्रम के अनुमोदित किये जाने के बाद जॉन रैगन उन पाकिस्तानी जनरलों से मिले, जिन्हें कुछ ही बाद अफगानिस्तान से सगे इलाकों के कमांडर नियुक्त किया गया। रैगन और मैसर्ड ने पाकिस्तानी सूचना मंत्री हाजिद हकीम से भी भेट की। उनके साथ उन्होंने अफगानिस्तानविरोधी प्रचार अभियान के बारे में विस्तार से विचार किया।

आगे चलकर मैसर्ड ने सीरियस पाकिस्तानी सेनाधिकारियों के साथ मिलकर बुरहानुद्दीन रब्बानी के नेतृत्व में तयारकियत इस्लामी अजुमन-ए-निज्जत अफगानिस्तान की स्थापना करनी शुरू की।

तथ्य ये है। मगर फ़ाइट हाउस उनकी ज़ोर करना ही धेयस्वर समझता है और असली प्रचारण मार्ग ज़ोर समाचार सी० आई० ए० द्वारा पोषित रणनीति और प्रोपेगंडा को "स्वाधीनता गवाहियों" के तहत वेष्ट करना है।

समस्या है कि अमेरिकी शासन अपने ईशानी उन बागी राजनयिकों की गुटों के शासनविरोधी स्थापना को भी "स्वाधीनता गवाहियों" का अंग ही समझते हैं। विदेश प्रेम में प्रकाशित ईशान में तैरित समाचारों को को वेष्ट करना की तराफ़िया में सी० आई० ए० की संचित सहायता का अनेक समाचार क्या साबित हो सके?



१९८१ की गरमियों में वाशिंगटन में हुए एक पत्रकार सम्मेलन में अमरीकी पत्रकार क्लार्क बिमिज़र ने ईरानी उत्प्रासियों की कुछ गुप्त दस्तावेज़ों को उद्घृत किया, जो ईरान में सैनिक सत्ता-परिवर्तन के लिए पश्चिम की तैयारियों और अमरीकी निदेशन को प्रमाणित करती थीं।

इन दस्तावेज़ों से यह पता चलता था कि ईरानी शक्ति के विरुद्ध पड़्यत्र में शाह की अग्ररक्षक सेना और सुरक्षा पुलिस के भूतपूर्व प्रमुख तथा राजनय के अन्य समर्थक ऐक्यबद्ध थे। उनका लक्ष्य ईरानी सरकार को उलटना और देश में अमरीका-समर्थक सरकार की स्थापना करना था। पड़्यत्रकारियों का मुख्यालय वाशिंगटन में, ह्वाइट हाउस से कुछ ही कदमों के फासले पर, स्थित था और उन्होंने ल्यूइस ब्रैपटन एमो गिएट्स नाम की प्राइवेट कंपनी को अपना आवरण बना रखा था। पड़्यत्र में केन्द्रीय व्यक्ति थे ईरानी नागरिक, वाशिंगटन में शाह के दूतावास में भूतपूर्व परामर्शदाता असद जोमायू और अमरीकी नागरिक सयुक्त राज्य अमरीका की वेस्ट पोंट सैनिक अकादमी के स्नातक जॉन मैमफर्ड।

पत्रकार सम्मेलन में प्रकट हुआ कि पड़्यत्रकारियों ने ईरान की इस आगामी अमरीका-समर्थक सरकार में प्रधान मंत्री पद के लिए उम्मीदवार की चयन भी कर लिया था। यह पद जनरल बहगम आग्विआना को मिलना था, जो इस समय पेरिस में रह रहे हैं।

सत्ता-परिवर्तन के संगठनकर्ताओं के पास बहुत



बड़ी धन-राशि उपलब्ध थी। एक निर्देश के अनुसार केवल पश्चिमी देशों के जनमन को प्रभावित करने के लिए प्रति मास ५ लाख डॉलर खर्च किये जाने थे।

१९८२ के वमन में तेहरान में भूतपूर्व ईरानी विदेश मंत्री सादिक कुतुबजादे द्वारा रचे गये आयातुल्लाह खुमैनी की हत्या के पड़्यत्र का भडाफोड करने का ऐलान किया गया। इस पड़्यत्र के काफी व्यारे अभी प्रकट नहीं किये गये हैं, मगर कुछ प्रेसको का विश्वास है कि इस बार भी पड़्यत्र के सूत्र अनन लैगनी ही पहुँचेगे।

स्वतंत्र देशों के विरुद्ध सी० आई० ए० की ध्वनात्मक कार्रवाइयो के बारे में दुनिया को आये दिन नयी नयी खबरे सुनने को मिलती हैं। ऐसी ही सबसे ताजा खबरो में से एक यमनी लोक गणराज्य से आयी है। जहाँ मार्च, १९८२ में सुरक्षा सेवा ने सी० आई० ए० द्वारा प्रशिक्षित एक आतंकवादी गुट का पता लगाया, जो बड़े पैमाने पर तोडफोड और राजनीतिक हत्याए करने के लिए देश में चोरी से घुस आया था। अदन में खुले मुकदमे के दौरान यह प्रकट हुआ कि इन दक्षिण यमनी उत्प्रवासियों को अमरीकी और ब्रिटिश प्रशिक्षकों ने भरती और प्रशिक्षित किया था। पड़्यत्र में दो चरण थे—तेल भंडारों, बिजलीघरों तथा अन्य औद्योगिक उद्यमों को विस्फोटों द्वारा ध्वंस करना, जिनमे देश में दहनल मच जाये और फिर देश के नेताओं और यमनी समाजवादी पार्टी के सदस्यों की हत्याओं का मिलमिला।



पर्यय असफल रहा - जैसे सैग्ली की ऐसी कितनी  
 ही और ही योजनाएँ भी विफल रही हैं। लेकिन फिर  
 भी यह बात नहीं भुलायी जानी चाहिए कि अभाम्यवश  
 अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के उपकरण हमेशा ही निगाना  
 नहीं चूकते। आज जब संयुक्त राज्य अमेरिका ने लगभग  
 सारे ही विश्व को अपने "युनिपादी हितों" का क्षेत्र  
 घोषित कर दिया है, ससार के पारस्परिक रूप में  
 विशेषकर विस्फोटक माने जानेवाले इलाकों में तनाव  
 अपने शक्ति बिंदु पर पहुँच गये हैं। संभवतः सर्वोपरि  
 यह बात मध्य-पूर्व और दक्षिण एशिया पर लागू होती  
 है। इन प्रदेशों की बारूदभरे एक विशाल पीपे में तुलना  
 की जा सकती है, जिसमें वाशिंगटन अंतर्राष्ट्रीय आतंक-  
 वाद के आपराधिक आचरणों को खुले तौर पर प्रोत्साहन  
 देकर पलीना लगाने की कोशिश कर रहा है।



## अफ्रीका में नये-नये राज खुलते हैं

“वह तुझसे प्यार करने का दम भरता है। उस पर तो देख कि वह तेरे लिए क्या करता है!” जब भी कोई नया अमरीकी राष्ट्रपति अपने पद की शपथ ग्रहण करते समय अपने उद्घाटन भाषण में यह वचन देता है कि संयुक्त राज्य अमरीका उत्पीड़ित देशों के न्याय्य सघर्ष का समर्थन करेगा, जनतंत्र को सुदृढ़ करने के लिए काम करेगा और नस्लवाद, रंगभेद और भेदभाव के विरुद्ध सघर्ष करेगा, तो यह सेनेगाली कहावत हमेशा ही याद आ जाती है।

१९८१ में पदारूढ होने पर राष्ट्रपति रैगन ने इस परंपरा में कुछ परिवर्तन करने का निर्णय लिया। अपने चुनाव अभियान के दौरान ही उन्होंने कहा रास्ता अपनाने का और दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य तथा उन देशों के भी सदस्य में, जिन्होंने साम्राज्यवादी हुकूमशाही को अस्वीकार कर दिया था और प्रगतिशील सामाजिक-आर्थिक रूपांतरण करना शुरू कर दिया था, संयुक्त राज्य अमरीका की नीति को बदलने का प्रण लिया था। रॉनल्ड रैगन ने वाशिंगटन की राजनीति में शब्दावली में एक नयी परिपाटी का प्रचलन किया है-



आज हाइट हाउस मसलवाद और रंगभेद के खिलाफ लड़नेवाले दक्षिण-पश्चिम अफ्रीकी जन संगठन ( स्वापो ) और दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य की अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस सहित सभी अफ्रीकी मुक्ति आंदोलनों को "अंतराष्ट्रीय आतंकवाद" का समानार्थक मानता है। इसके बाद अगर अमरीकी राष्ट्रपति दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य को आधिकारिक रूप से संयुक्त राज्य अमरीका का 'मित्र' होने की मंजा देने हैं, तो इससे किसी को भी अचरज नहीं होगा।

राष्ट्रपति रैगन की इस खुली स्वीकारोक्ति ने कम अफ्रीका में अमरीकी नीति के वास्तविक लक्ष्यों को एक बार फिर जाहिर ही किया है और ये लक्ष्य हैं राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों का तलोच्छेदन करना, प्रगतिशील देशों में अस्थिरता उत्पन्न करना, आतंकवादों और प्रतिक्रियावादी शासनों को सर्वतोमुखी समर्थन देना, और सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण अफ्रीकी इलाकों में अमरीकी सैनिक-राजनीतिक उपस्थिति कायम करना।

अफ्रीका के लिए संयुक्त राज्य अमरीका की प्रसारवादी योजनाओं में सी० आई० ए० को एक विशेष भूमिका है। अगस्त, १९८१ में अमरीकी कांग्रेस के प्रतिनिधि सदन की एक विशेष समिति ने निर्णय किया कि अफ्रीका में सी० आई० ए० की प्रच्छन्न बार्बरवाइडों में पैना लगाना अत्यावश्यक है। प्रेस रिपोर्टों के अनुसार रैगन प्रशासन ने सी० आई० ए० को अफ्रीका में कौरा परवाना दे दिया है और उसके सारे गह्रित कार्यों की पूर्ण गोपनीयता को प्रत्याभूत किया है। सी० आई० ए०



के मुख्य लक्ष्यों में इथियोपिया, अंगोला, मोजांबिक, जिम्बाब्वे, तजानिया, जाम्बिया, कांगो लोक गणराज्य, बेनिन, लीबिया, मारीशस, मदागास्कर, मिस्री-रिवाज, गिनी, जाम्बिया और कीनिया शामिल हैं। स्वाभाविकतः, हर देश के लिए अलग विशिष्ट लक्ष्य है। सी० आई० ए० का मिशन उन शासनो को मजबूत करने के अपने प्रयासों को बढ़ाता है, जो नवउपनिवेशवादियों के साथ सहयोग करने को और ऐसे मूलगामी सामाजिक-आर्थिक रूपांतरणों को कार्यरूप देने से बाध आने को तैयार हैं, जो अमरीकी इजारे के हितों का अनिश्चय कर सकते हैं। दूसरी ओर, चूंकि अफ्रीका को "बुनियादी अमरीकी हितों" का क्षेत्र घोषित कर दिया गया है, इसलिए सी० आई० ए० को उन सभी के खिलाफ किसी भी साधन का उपयोग करने की खुली छूट दे दी गयी है, जो वाशिंगटन की नीति में आड़े आने की जुर्रत करते हैं।

अफ्रीका में सी० आई० ए० की कार्रवाइयों का इतिहास अफ्रीकी स्वतंत्रता संग्रामियों के विरुद्ध पाशाविह अत्याचारों से परिपूर्ण है।

भूतपूर्व सी० आई० ए० एजेंट जॉन स्टॉफ़र्ड ने 'दुश्मनों की तलाश में' शीर्षक अपनी पुस्तक में लिखा है कि सेंट्रल इटलीजिस एजेंसी की ध्वसात्मक विधि-विधियाँ लगभग सारे ही अफ्रीकी देशों में फैली हुई हैं। सी० आई० ए० के अधिक जगविदित बायों में पत्नीस लुमुबा की हत्या, क्वामे एन्नुमा का सत्ता में हटाया जाना, अंगोला में साविबी के गिरोहों को



सहमता और बेनिन में सत्ता-परिवर्तन का प्रयास आने है।

राजनीतिक हत्या अफ्रीका में सी० आई० ए० का एक प्रिय हथकड़ा है। राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों को कमजोर करने और समाजवाद की ओर अभिमुख देशों को डराने के प्रयास में लैम्बी के विशेषज्ञ लोक-प्रिय अफ्रीकी नेताओं को “दूर कर देते हैं और शांतिगटन के आगे भुक्ने से इन्कार करनेवाली विधिवम्मान सरकारों को उलट देते हैं। यह कहना ही पानी होगा कि पिछले दो दशकों में अफ्रीका में जो ४० से अधिक सत्ता-परिवर्तन हुए हैं, उनमें से अधिकांश सी० आई० ए० द्वारा ही रचे और क्रियान्वित किये गये थे।

\* \* \*

संयुक्त राज्य अमरीका के महायुक्त विदेश मंत्री (अफ्रीकी मामले) चैस्टर ए० थॉकर ने जून, १९८१ में कहा था “दक्षिणी अफ्रीका—जाइर से लेकर कंप (आन्ता अतरीप—सं) तक—में हमारी दिलचस्पी हमारे द्वारा इस क्षेत्र के संयुक्त राज्य अमरीका तथा पश्चिमी विश्व के लिए सामरिक, राजनीतिक तथा आर्थिक महत्व की मान्यता से उत्पन्न होती है दाव इतने ऊँचे हैं हमारे पार-पारिक हितों को छतरे इतने ज्यादा हैं और, सर्वोपरि दक्षिणी अफ्रीका के जनगण के लिए कीमत इतनी भारी है कि हम इस प्रदेश की चुनौतियों में मुह मोड़ नहीं



सकते।" \* मचमुच, दक्षिणी अफ्रीका की "बुनौतियों का सामना करने" के लिए अमरीका द्वारा उठाये जानेवाले कदम हाल के समय में बहुत सख्त हो गये हैं, खासकर जहां तक कि वे सीमान्त राज्यों से और नमलवादी दक्षिण अफ्रीका के विरुद्ध सशस्त्र अफ्रीकी मुक्ति पार्टियों से संबंध रखने हैं।

सी० आई० ए० ने अफ्रीकी देशों में प्रगतिशील प्रवृत्तियों को कमजोर करने और नसनवादी तथा श्रि-क्रियावादी शक्तियों की स्थिति को मजबूत करने के लिए बीसियों कार्रवाइया की हैं। इनमें से किसी भी कार्रवाइयो का परदाफास हो गया है।

१९७५ में सी० आई० ए० ने अगोला में—अगर वियतनाम में अमरीकी आक्रमण को अनग रहने दिया जाये, तो—अपनी युद्धोत्तर वर्षों की सबसे बड़ी कार्रवाई शुरू की।

अगोली जनता ने अगोली स्वतंत्रता जन-आंदोलन (एम० पी० एल० ए०) पार्टी के नेतृत्व में वर्षों के प्रघर सघर्ष के बाद स्वतंत्रता प्राप्त की। ११ नवंबर, १९७५ को अगोला लोक गणराज्य की उद्घोषणा की गयी और ससार के अधिकांश राज्यों ने उसे मान्यता प्रदान कर दी। लेकिन उपनिवेशवाद के अवशेषों, दक्षिण अफ्रीकी नमलवाद और साम्राज्यवादी शक्तियों के विरुद्ध सघर्ष को समर्पित प्रगतिशील शक्तियों की

---

\* *Africa Report*, September-October, Vol. 26, No. 5, 1981, p. 7.



इस विषय को प्रिटोरिया में और विशेषकर वाशिंगटन में समझ नहीं लिया गया।

अमरीकी प्रशासन ने तत्काल नयी लोकप्रिय सरकार के विरुद्ध खुले तौर पर समुदायपूर्ण रवैया अपना लिया और अपनी कार्रवाइयों को दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य के साथ समन्वित करते हुए उसे बनपूर्वक उभटन की रांभित की। सी० आर्च० ए० को अंगोला की पूर्ण स्वतन्त्रता के राष्ट्रीय मण (यूनीटा) और अंगोला की स्वतन्त्रता के राष्ट्रीय मोरचे (एफ० एन० एल० ए०) की सहायता के लिए बोर्ड १० करोड़ डॉलर दिए गये। ये प्रतिनितिकारी गुट है जिनके नेता सी० आर्च० ए० के कठगुनने भोनाम गाबिबी और हांसेन रोवेनो है। अमरीकी वायु मता के परिवहन विमानों ने आदर में म्बिन यूनीटा और एफ० एन० एल० ए० के अहो को इधियार और गावाबाभद पहुंचाये। प्रतिनितिकारी मिरोटो के पास अमरीकी सैनिक सप्लाइकार और प्रतिनितिक पहुंच गये। अमरीकी नावे के सैनिकों ने अंगोला के म्बिबाफ सैनिक कार्यवाहों में भाग लिया।

१९८१ में दक्षिण अफ्रीकी राजकीय सुरक्षा बल (बोम्ब) के एक भूतपूर्व एजेंट साईन बिटर ने एक पुस्तक प्रकाशित की जिसमें अंगोला में सी० आर्च० ए० तथा बोम्ब के बीच सहयोग का विस्तृत वर्णन दिया गया था। नाम नीचे में बिटर ने बताया कि सी० आर्च० ए० तथा बोम्ब एम० सी० एल० ए० की सरकार की उपराने के अन्दर सभी प्रयासों में पूर्ण सफल



बनाये रखते थे। अगोवा में अमरीकी-दक्षिण प्रसीतो हस्तक्षेप के दौरान उनके प्रतिनिधियों की जाइर के नियमित बैठके होती थी और बॉस के निदेशक के सी० आई० ए० के शीर्षस्थ अधिकारियों से परामर्श के लिए दो बार वाशिंगटन की यात्रा की।

इन ध्वमकारी गिरोहों—यूनीटा और एफ० एन० एल० ए०—के नेताओं, सावित्री और रोवेनों, को सी० आई० ए० का पूर्णतम समर्थन प्राप्त था। वेणु कि एना चला, रोवेनों को अपने अमरीकी भागियों में १०,००० डॉलर सामाना मिला करते थे।

लेकिन, संयुक्त राज्य अमरीका के इस माते समर्थन के बावजूद, यूनीटा और एफ० एन० एल० ए० की सैनिक स्थिति तेज़ी से बिगड़ती गयी और इसलिए दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य की नियमित सेनाओं को भी अगोवा के विस्तृत खंडों में उतर आना पड़ा।

नवोन्मज्ज गणराज्य ने, त्रिमूर्ति के पास न अपने अपनी कोई सेना ही थी और न दक्षिण अफ्रीकी आक्रमण तथा आंतरिक प्रतिक्रियाकारियों द्वारा किये जा रहे ध्वमकार्य का निरोध करने के पर्याप्त साधन ही थे। सहायता के लिए समाजवादी देशों की ओर मुंह दिना। अपने अन्तर्गन्धीयतावादी वर्तन्य के प्रति निरुत्साह समाजवादी देशों ने अगोवा को इतिहास, संयुक्त राष्ट्र विधिनीय सामान और सामुदायिक भेजे। इसके अलावा कुछ-ही सैनिक दृष्टिकोण भी सहायता के लिए प्रस्तुत पड़ती। इस सहायता ने अगोवा के लिए प्रत्यक्ष ही सहायक पर आये नज़रों को दूर करवा और इस



के साथ अपने देश के निर्माण में लगना सम्भव कर दिया। अलबत्ता अगोला की सरकार ने क्यूबा में जब तक दक्षिण अफ्रीकी आक्रमण का खतरा बना रहता है, तब तक अपने सैनिक वहीं रहने देने का अनुरोध किया। यह एक पूर्णतः विधिमन्मत अनुरोध या-संयुक्त राष्ट्र सभ का घोषणापत्र एक प्रभुतासमय राष्ट्र द्वारा दूसरे राष्ट्र से सहायता का अनुरोध किये जाने के अधिकार को मान्यता देता है।

“क्यूबाई सैनिक अगोली सरकार के अनुरोध पर अगोला आये थे, क्योंकि देश हस्तक्षेप का सर्वोपरि नमनवादी दक्षिण अफ्रीकी सेना के हस्तक्षेप का शिकार हो गया था,” एम० पी० एल० ए० श्रमिक पार्टी के राजनीतिक व्यूरो के सदस्य तथा सचिव लूसीओ सारा ने जनवरी, १९८२ में कहा। ‘यह अनुरोध संयुक्त राष्ट्र घोषणापत्र में सन्निहित विधिमन्मत प्रति-रक्षा के अधिकार पर आधारित था।”

अगोला में सी० आई० ए० की कार्रवाई ने सारी दुनिया में विरोध की लहर पैदा कर दी। अमरीकी जनमत में, जहाँ वियतनामी मुहिमवाजी की याद अभी ताज़ा ही थी, अफ्रीका में वाशिंगटन के गुप्त बुद्ध का अंत किये जाने की मांग की। १९७९ में जनमत के दबाव ने अमरीकी कांग्रेस को यूनीटा तथा एफ० एन० एल० ए० को प्रच्छन्न अथवा प्रत्यक्ष महायन्त्रा निषिद्ध करने का कानून बनाने के लिए मजबूर कर दिया। अपने प्रस्तावक के नाम पर यह कानून क्लार्क मशीघन के नाम से विज्ञात है।



लेकिन कनार्क मनोधन अंगोला में अमरीकी साम्राज्यवादी माहिनी का अन्त न कर सका। मनुक्त राज्य अमरीका के अंगोली प्रतिप्रानिकारियों के साथ संपर्क बने रहे। ह्वाइट हाउस ममलवादी दक्षिण अफ्रीकी शासन की सहायता में अंगोला में अन्वितान उत्पन्न करने के अपने प्रयामों में बाध नहीं आया।

इस प्रसंग में यह उल्लेखनीय है कि १९७६ में सी० आई० ए० ने यूनीटा के नेता सावित्री को बोरो से वाशिंगटन पहुंचाया था, जहां सावित्री ने अनेक उच्च अमरीकी अधिकारियों से भेंट की, जिनमें अमरीकी राष्ट्रपति के भूतपूर्व राष्ट्रीय सुरक्षा सहायक हेनरी किसिजर भी थे।

जहां तक रॉनल्ड रैगन की बात है, उन्होंने तो अपने चुनाव अभियान में यह कहते हुए यूनीटा का खुलकर समर्थन किया था कि "सावित्री का आघे से अधिक अंगोला पर नियंत्रण है। मैं नहीं समझता कि क्यों हमें उन्हें हथियार नहीं देने चाहिए।" \*

रॉनल्ड रैगन के शपथ ग्रहण करने के ठीक पहले विलियम केसी, जिन्हें जल्दी ही सी० आई० ए० का निदेशक बनना था, और रिचर्ड एलेन, जो बाद में राष्ट्रपति के राष्ट्रीय सुरक्षा सहायक बने, ने यूनीटा के प्रतिनिधियों से भेंट की और उन्हें अमरीकी समर्थन का आश्वासन दिया। पद ग्रहण करने के बाद राष्ट्रपति

---

\* *Africa Report* (Washington), July-August, 1980. Vol. 25, No 4, p. 6.



रैगन ने वाप्रेस द्वारा क्लार्क संशोधन के निरस्त किये जाने की जोरदार मांग की।

मार्च, १९८१ में साबिबी को वाशिंगटन आने का आधिकारिक निमंत्रण दिया गया। उसी महीने अमरीकी विदेश मंत्री अलैग्जेडर हेग ने लंदन में यूनीटा के प्रतिनिधियों के साथ इस संगठन की सहायता के बारे में बातचीत की। दिसंबर, १९८१ में साबिबी को विदेश विभाग में मिलने के लिए बुलाया गया और अमरीकी अधिकारियों ने उन्हें प्रत्यक्षत उक्सावे के उद्देश्य से "राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन का नेता" कहा।

यह शायद ही सांयोगिक है कि साबिबी की संयुक्त राज्य अमरीका यात्रा के दौरान ही लुआंडा में अंगोला के सबसे बड़े तेल शोधन कारखाने में जबरदस्त विस्फोट हुआ। जाच-पड़ताल से यह सिद्ध हुआ कि तोड़फोड़ की इस कार्रवाई की योजना संयुक्त राज्य अमरीका और दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य में बनायी गयी थी और उस यूनीटा के दस्युओं ने कार्यरूप दिया था।

नवंबर, १९८१ में पश्चिमी जर्मन पत्रिका 'व्येत्तर फ्यूर दौइमे' उड इटरनात्सीओनाले पोलितिक ने लिखा था कि अंगोला के लिए खतरा बृद्ध रहा है। यह खतरा कितना गंभीर था, यह अंगोला पर १९८१ और १९८२ के प्रारंभ में दक्षिण अफ्रीका के जबरदस्त हमलों ने दिखाया। नमलवादियों ने कूनेने नदी के दक्षिण में लगभग ५०,००० वर्ग किलोमीटर अंगोली भूभाग को कब्जे में ले लिया। दक्षिण अफ्रीका की आक्रामक



कार्रवाई के परिणामस्वरूप अंगोला को मान बरब  
डानर की आर्थिक क्षति उठानी पड़ी।

अमरीकी शासकों ने अंगोला में दक्षिण अफ्रीकी  
सैनिक घुमपैठों पर अपने हर्ष को छिपाया नहीं। इ  
घुमपैठों के दौरान बीनियां गावों को मिट्टी में नि  
दिया गया था और हजारों निरीह लोगों की ज  
गयी थी। मितंबर, १९८१ में संयुक्त राज्य अमरीका  
ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में दक्षिण अफ्रीका की  
भर्त्सना और उसकी सेनाओं की अंगोला से तत्काल  
वापसी की मांग करने के प्रस्ताव पर एक बार फिर  
अपने निषेधाधिकार का प्रयोग किया।

आज यह स्पष्ट हो गया है कि दक्षिणी अफ्रीका में  
अंगोला तथा अन्य स्वतंत्र अफ्रीकी राज्यों के विरु  
द दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य के सशस्त्र हस्तक्षेप से ज  
विस्फोटक स्थिति वर्तमान अमरीकी प्रशासन द्वारा  
अनुसृत "नयी" अफ्रीका नीति का ही प्रत्यक्ष परिणाम  
है।

अपने अपराधों का औचित्य-स्थापन करने के प्रयत्न  
में दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य यह दावा करता है कि  
अंगोला नमीबियाई देशभक्तों की सहायता करता है,  
जिनकी गणना प्रिटोरिया और वाशिंगटन "आतंक-  
वादी आंदोलनों" में करते हैं। सचमुच, अंगोली  
सरकार ने नमीबियाई शरणार्थियों के लिए, जिनकी  
संख्या दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है, बस्तियां,  
अस्पतालों और स्कूलों की स्थापना की है। अंगोली  
सरकार संयुक्त राष्ट्र सच के निर्णयों से, जो स्वायं



को नमीबियाई जनगण का एकमात्र वैध प्रतिनिधि मानता है, और नमीबियाई जनता के न्याय्य हेतु के समर्थन में अफ्रीकी एकता संगठन के प्रस्तावों से मार्गदर्शन लेते हुए स्वाधो को सर्वतोमुखी सहायता प्रदान करती है। और अंतिम बात यह है कि अंगोला नमीबिया पर नसलवादी कब्जे के खिलाफ स्वाधो के समर्थ का इसलिए समर्थन करता है कि वह उसे अफ्रीका में उपनिवेशवाद तथा नसलवाद के अवशेषों के विरुद्ध स्वयं अपने समर्थ का अभिन्न अंग समझता है।

पश्चिम में जब नमीबिया समस्या की बात की जाती है, तो उसमें सामान्यतया पांच देशों — मयूक्त राज्य अमरीका, ग्रेट ब्रिटेन, फ्रान्स, कनाडा और पश्चिमी जर्मनी — के तथाकथित संपर्क दल के कार्यकलाप को अवश्य ध्यान में रखा जाता है। इस दल ने १९७८ में नमीबियाई स्वतंत्रता की एक योजना प्रस्तुत की थी जो संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के प्रस्ताव सं० ४३५ में सूचित है, और कहा था कि वह इस योजना के लिए दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य की सहमति प्राप्त करने के लिए काम करेगा। लेकिन, वास्तव में संपर्क दल दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य के साथ मिलकर और नमीबियाई जनता की पीठ पीछे नमीबिया में पश्चिम की आर्थिक तथा रणनीतिक स्थितियों को बरकरार रखने की योजनाएँ तैयार करने में ही लगा हुआ है।

संपर्क दल का प्रत्येक सदस्य संयुक्त राष्ट्र संघ के नानासमूह प्रस्तावों का उत्तरदायक करते हुए — के राष्ट्रीय समाधानों की भुनी नुट में लगा हुआ



नमीबिया में कार्यरत ८८ बहुराष्ट्रीय निगमों में में २५ के मुख्यालय ब्रिटेन में, १५ के संयुक्त राज्य अमेरिका में, ८ के पश्चिमी जर्मनी में, ३ के कनाडा में और २ के कनाडा में है।

नमीबिया के राष्ट्रीय समाधानों की लूट को दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य की विदेशी कंपनियों को खनिजों का अप्रतिबंधित दोहन करने देने, करों की दरें नीची (स्वयं दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य से भी नीची) रखने और खनन कंपनियों से यह मांग न करने की नीति सुगमतर बना देती है कि वे अक्सरों का निष्कर्षण की जगह पर ही परिष्करण करे और अपने लाभों के एक हिस्से को अर्थव्यवस्था के दूसरे क्षेत्रों में निवेशित करें। सेवा के बदले सेवा - पश्चिम रणभेद प्रथा से अपने को प्राप्त सुविधाओं के बदले दक्षिण अफ्रीका के नमीबिया पर गैरकानूनी अधिकार का समर्थन करता है।

यूरेनियम के बिराट निक्षेपों के खोजे जाने के बाद से नमीबिया पश्चिमी कंपनियों के लिए विशेषकर आकर्षक हो गया है। विशेषज्ञों का अनुमान है कि इन सदी के अंत तक वहां इस रणनीतिक सामग्री का लगभग १५,००० टन प्रतिवर्ष की दर से उत्पादन संभव हो सकता है। इससे आस्ट्रेलिया, संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा के बाद नमीबिया पश्चिमी जगत में यूरेनियम का चौथा सबसे बड़ा उत्पादक बन जाएगा। इस प्रकार से नमीबिया पर अवैध अधिकार नस्लवादियों और उनके पश्चिमी सरक्षकों को विश्व यूरेनियम ३।१ के एक बड़े भाग को अपने नियंत्रण में रखने,



उम्हें बाजार में लाने के परिमाण और समय में हेरफेर करने और दाम निर्धारित करने में समर्थ बनाना है। इस सबसे उन्हें भारी मुनाफे प्राप्त होने है।

नमीबिया में पश्चिमी जितो के सुरक्षा के प्रयासों की कारगरता भीधे-भीधे गम्भिर नीति के किम्वी भी तरह के प्रतिरोध को कुचलने की प्रिटोरिया की क्षमता पर निर्भर करती है। इसमें यह स्पष्ट हो जाता है कि वहाँ वाणिज्यिक व्यापारों के सशस्त्र संघर्षों की दक्षिणी अफ्रीका में साम्राज्यवाद की आर्थिक स्थितियों के लिए मुख्य सतह समझना है। संयुक्त राज्य अमेरिका और मार्शल द्वीप के अन्य सदस्य राज्य इस सतह का दूर करने के लिए किम्वी भी साधन अथवा प्रयास में परहेज नहीं करते। वहाँ से वे संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के ४ नवंबर, १९७७ के प्रस्ताव सं० ४१८ द्वारा समायोजित दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य को हथियारों की बिक्री पर प्रतिबंध का नियमित रूप में उल्लंघन करने आये हैं।

इस प्रतिबंध की समानांतर अवज्ञा करनेवालों की श्रेणी में संयुक्त राज्य अमेरिका सबसे ऊपर है। स्पष्ट सिद्ध हो चुका है कि दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य को सुरक्षित रूप १५१ मि० बी० लीटर के गोला की बिक्री करना इसका सबसे बुरा उल्लंघन था। इस सीट की बलीगन प्रिटोरिया के लिए २ से ३ दिवसात्मक हमला एक के परमाणुबिक गोले छोड़ने से सशस्त्र सैनिकों को बचाव करना संभव हो गया है।

हथियारों के अभाव में संयुक्त राज्य अमेरिका एक



अन्य पश्चिमी देश दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य को "नर-  
रिफ" मात्र-भामान भी दिन खोबरर मुद्रा काते  
है, जिनका सैन्य प्रयोजनों के लिए उपयोग विना न  
सकता है। यह बात हत्यके वाणिज्यिक तथा पतित  
विमानों, इन्वेंट्रारी उपकरणों और विभिन्न इतों  
पर विशेषकर सामू होती है।

बेशक, एक भी पश्चिमी राजनीतिज्ञ कदा  
यह स्वीकार करने का माहम न करेगा कि गणराज्यों  
को ही जानेवाली महायुद्धा सर्वोपरि राष्ट्रीय बुद्धि  
आंदोलन और प्रगतिशील अफ्रीकी सामनों के लिए  
मशिन है। लेकिन तथ्य बहुत अस्मियन होते हैं और  
यह तथ्य है कि नमीबिया, दक्षिण अफ्रीका, मोझांबिक  
अंगोला तथा अन्य देशों में घान नागरिक उन हथियारों  
में घात खा रहे हैं जो पश्चिम में बनते हैं और पश्चिमी  
मण्डल की महामति में ही दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य का  
पहुंचाव मान है।

विद्रोहियों की आतंकवादी नीतियों के अंतर्गत  
अनुसंधान में शामिल करने अब इन्कार भी नहीं करेगा।  
अप्रैल १९८१ में अमेरिकी अन्वेषण 'नेशनल रिज्यू'  
में अमेरिकी इंडियन अनुसंधान समिति, ए. सी.  
आई. ए. के साथ आने सकी के लिए रिज्यू है।  
क विद्रोह का यह स्वीकारात्मक स्वी की है कि वह  
कहा कायदा यह है कि इन्कार का स्वीकार है  
म न अन्य दिशा अंतर्गत अंतर्गत १९८१  
में सचकार विद्रोह अंतर्गत है, का स्वीकार अंतर्गत  
ले विद्रोह अंतर्गत यह अंतर्गत है। स्वीकार



अमेरिका के उपयोगी खनिजों के बिना पश्चिम का अस्तित्व  
असम्भव है।” \*

उसी साल मई-जून के महीनों में ‘वाशिंगटन  
पोस्ट’ और ‘न्यूयॉर्क टाइम्स’ सहित कितने ही अमेरिकी  
अखबारों ने अमेरिकी तथा दक्षिण अफ्रीकी अधिकारियों  
के बीच हुई वार्ताओं के बारे में विदेश विभाग के गुप्त  
सागरान प्रकाशित किये। सहायक विदेश मंत्री चैस्टर  
जॉकर की दक्षिण अफ्रीकी विदेश मंत्री रॉएल्लोफ बोता तथा  
प्रतिरक्षा मंत्री मैग्नस मेलन के साथ बातचीत का विवरण  
तो कम का घमाका साबित हुआ। विदेश विभाग के  
सैन्यीय विचारों का मानव-अधिकारों के समर्थन और  
अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद, नस्लवाद और रंगभेद के विरुद्ध  
आधिकारिक वक्तव्यों से ऐसा घोर विरोधाभास था  
कि दक्षिणपंथी प्रेस तब ने अमेरिकी प्रशासन पर पाखंड  
का आरोप लगाया।

बातचीत का विवरण दिखाता है कि दक्षिणी  
अमेरिका में राजनीतिक स्थिति के अपने आवसन में  
और राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन के सदस्यों में अपने मध्यों  
में दोनों पक्षों ने अद्भुत मतैक्य का प्रदर्शन किया।

मोजिबे, जेरा चैस्टर जॉकर ने सब्दों पर गौर  
कीजिये: “संयुक्त राज्य अमेरिका तथा दक्षिण अफ्रीकी  
गणराज्य के बीच राजनीतिक संघर्ष इस समय अत्य-  
धिक महत्व, कहना चाहिए कि ऐतिहासिक महत्व  
रखने हैं। दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य के प्रति संयुक्त



अन्य पश्चिमी देश दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य को "नागरिक" साज्ज-सामान भी दिल खोलकर मुहैया करते हैं, जिसका सैन्य प्रयोजनों के लिए उपयोग किया जा सकता है। यह बात हलके वाणिज्यिक तथा परिवहन विमानों, इलेक्ट्रानी उपकरणों और विभिन्न इश्वरों पर विशेषकर लागू होती है।

बेशक, एक भी पश्चिमी राजनीतिज्ञ चुनकर यह स्वीकार करने का साहस न करेगा कि नसलवादियों को दी जानेवाली सहायता सर्वोपरि राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन और प्रगतिशील अफ्रीकी शासनों के विरुद्ध लक्षित है। लेकिन तथ्य बहुत अडिग होते हैं और यह तथ्य है कि नमीबिया, दक्षिण अफ्रीका, मोझाबीर, अंगोला तथा अन्य देशों में ज्ञात नागरिक उन हथियारों से मारे जा रहे हैं, जो पश्चिम में बनते हैं और पश्चिमी सरकारों की सहमति से ही दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य को पहुँचाये जाते हैं।

प्रिटोरिया की आतंकवादी नीतियों के अपने मौल अनुमोदन से वाशिंगटन अब इन्कार भी नहीं करता। अप्रैल, १९८१ में अमरीकी अखबार 'नेशनल रिव्यू' में अमरीकी दृढ़ स्थिति अनुसन्धान संस्थान, जो सी० आई० ए० के साथ अपने संबंधों के लिए विज्ञात है, के निदेशक की यह स्वीकारोक्ति छपी थी कि सबसे पहला कार्यभार यह है कि स्वाधीन को नमीबिया में सत्ता में न आने दिया जाये, क्योंकि अगर उसे ऐसा करने में सफलता मिल जाती है, तो दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य बिनाकुल अकेला पड़ जायेगा और दक्षिण











शक्ति नहीं प्राप्त कर लेती कि स्थिति को नियंत्रित कर सके। हम वहाँ सोवियतविरोधी काली सरकार (अर्थात् दक्षिण अफ्रीका और संयुक्त राज्य की आज्ञा पर चलनेवाली और अफ्रीकी राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन का विरोध करनेवाली सरकार-ले०) चाहते हैं।'

चैस्टर जॉकर ने फरियाद की कि 'हम (संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के प्रस्ताव-स०) ४३५ को बड़ी बुद्धि से ही रही की देखी में डाल सकते हैं। हम उसे करने के बजाय उसकी अनुपूर्ति करना चाहते हैं।

प्रिटोरिया में जॉकर की वार्ताओं के कुछ ही महीने बाद संयुक्त राज्य अमरीका ने दक्षिण अटलांटिक में तैमिक घुड़ाम्यास किये। उनके तीन हफ्ते बाद दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य की सेनाओं ने हजारों की सख्या में अंगोला पर आक्रमण कर दिया। इस सेनाओं में दक्षिण अफ्रीकी तथा अमरीकी गुप्तचर सेवाओं द्वारा अंगोला में आतंकवादी कार्यवाहिया करने के लिए स्थापित भाड़े की इकाइया - ३२वीं बुफैलो बटालियन और विशेष कांवैट टुकड़ी - भी शामिल थी।

सदन में प्रकाशित 'एफ्रीका कॉन्फ़ीडेरेशनल पत्रिका' के अनुसार दक्षिणी अफ्रीकी और अमरीकी गुप्तचर सेवाओं ने डेढ १९७६ में ही स्वापो का समर्थन करनेवाले अफ्रीकी देशों और सर्वोपरि अंगोला पर दबाव डालने का एक कार्यक्रम तैयार कर लिया था। इसके अनुसार सी० आई० ए० को स्वापो में फूट पैदा करना उसके मुख्य नेताओं को बदनाम करना और नमीबिया में पश्चिम-समर्थक शासन स्थापित करने में सहायता देना



था। इसके अलावा अगोला में आंतरिक राजनीति अस्थिरता पैदा करना एक और लक्ष्य था। १९७७ में 'काउंटरस्पार्ड' पत्रिका ने अपने ३१ अक्टूबर के अंक में 'नमीबिया के विरुद्ध प्रत्यक्ष प्रच्छन्न कार्रवाई' शीर्षक लेख प्रकाशित किया, जिसमें वाशिंगटन डायनॉसोरिया के सहयोग से "स्वापो को अलग छोड़ने और यह सुनिश्चित करने कि सत्ता उन्हीं के हाथों में रहे जिन्हें नियंत्रण में रखा जा सकता है" के लक्ष्य के निरूपित गुप्त योजना के उद्धरण दिये गये थे। इस योजना के रचनाकारों ने तो कठपुतली सरकार का वित्त-पोषण करने और उसकी "अंतर्राष्ट्रीय मान्यता" सुनिश्चित करवाने का कार्यक्रम तैयार किया था लेकिन मुख्य लक्ष्य स्वापो तथा अगोला पर सैनिक दबाव बढ़ाना था, जिससे नमीबियाई छापामारों को यथानियंत्रण कमजोर किया जा सके, उन्हें दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य और संयुक्त राज्य अमरीका के अनुकूल समझौते को स्वीकार करने के लिए मजबूर किया जा सके, अथवा - संभव हो, तो - समझौते से बिल्कुल ही बाहर रखा जा सके।

रैगन प्रशासन की नीति पर टीका करने हुए स्वापो के अध्यक्ष सैम नूयोमा ने कहा था: "दक्षिणी अफ्रीका के प्रति थी रैगन की नीति से हमें अस्वस्थ नहीं होता। राष्ट्रपति चुने जाने से पहले ही रैगन ने यह स्पष्ट कर दिया था कि अफ्रीका में उनका लक्ष्य नसलवादी तथा प्रतिक्रियावादी शासनो की मुक्ति आंदोलन के खिलाफ लड़ने में सहायता करना होता।







नमीबिया में कठपुतली शासन स्थापित करने के प्रयास की बात करते हुए इसकी याद दिलायी जा सकती है कि ज़िबाब्वे में संयुक्त राज्य अमरीका ने अफ्रीकी देशभक्तों के स्वाधीनता संग्राम के दौरान बड़ी भयानक भूमिका अदा की थी।

नसलवादी रोडेसिया के प्रति संयुक्त राज्य अमरीका की नीति असाधारणतः नरम रही थी। अमरीकी सरकार ने निया संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा अवैध शासन के विरुद्ध लगायी अनुशास्तियों का उल्लंघन करते हुए सामरिट्स खनिजों से संपन्न इस देश के साथ व्यापार करती थी। संयुक्त राज्य अमरीका तथा अन्य पश्चिमी देश स्मिथ सरकार को तेल और अस्त्र-शस्त्र सहित उसकी जरूरतों की लगभग सभी चीजों का प्रदाय करते थे। सी० आई० ए० का रोडेसियाई केंद्रीय गुप्तचर्या संगठन के साथ सक्रिय सहयोग था। सी० आई० ए० के भूतपूर्व निदेशक रिचर्ड हेल्म ने स्वीकार किया है कि उनकी एजेन्सी अमरीकी कामुलेट के अधिकारियों के जरिए साल्मबरी में अपने समबर्ती संगठन के साथ घनिष्ठ संपर्क रखती थी। यही कारण है कि सी० आई० ए० ने कामुलेट को बढ़ करने पर अमल न होने देने के लिए जो कुछ हो सकता था, किया।

ठीक है कि संयुक्त राज्य अमरीका को अपने बावजूद विश्व जनमत के दबाव के कारण ज़ाम्बी के इस केंद्र को बढ़ करना पड़ा। लेकिन सी० आई० ए० ने अफ्रीकी स्वतंत्रता संग्रामियों के खिलाफ अपनी कार्रवाई जारी रखने का शीघ्र ही एक और तरीका







गार्बिस चुनाव में विजयी होने और प्रधान मंत्री बनने की आशा कर रहे थे। मुजोरेवा के चुनाव अभियान पर उनके समर्थकों ने मागों इतिर बर्ष किये। पश्चिम और विनोपकर अमरीकी, प्रेम ने देशभक्त मोरचे के उम्मीदवारों के विचार प्रवृत्ति अभियान छेड़ दिया। मोरचे के नेताओं और समर्थकों की हत्याए करने की कोशिशें की गयीं। वाणिज्य और लड़न को अपने गुरों की सफलता में इनका विश्वास था कि उन्होंने बड़ी जल्दी में "स्वतंत्र" जिवाब्बे को विज्ञान वितीय महामता देने का वचन दे दिया। पेट ब्रिटेन के डेविड मार्टिन और कनाडा के फिलिम जॉनसन नामक पत्रकारों ने अपनी पुस्तक 'जिवाब्बे के लिए संघर्ष' में लिखा है कि अमरीकी विदेश मंत्रालय, सी० आई० ए० और पैटागॉन ने १९७६ में "स्वतंत्र जिवाब्बे को कोशिश के नमूने पर 'नरम' रास्ते पर ले जाने" के लिए एक "जिवाब्बे निधि" स्थापित करने की सोची थी।"

लेकिन साम्राज्यवादियों की योजनाए धरी की धरी रह गयी। अफ्रीकियों के अत्यधिक भारी बहुतांश ने जिवाब्बे की देशभक्त शक्तियों के पक्ष में मत दिये। और बेचारे मुजोरेवा को संसद में सिर्फ तीन स्थान ही प्राप्त हुए — उनके पास जितने हैलीकॉप्टर थे, उनमें भी कम।

पश्चिम को ताबडतोड़ अपनी कार्यनीति बदलनी पड़ी — देशभक्त मोरचे के नेताओं के प्रति दर्प और







राज्य अमरीका का आन्तरिक समरसारी मानव के साथ सम्बन्ध बना रही बनी बनी बहना ही जा रहा है। १९०० में अन्तरिक अमरीकी कानिवा इन क्षेत्र की अन्तरिक का संलग्न कर रही है। १९८० में दक्षिण अफ्रीका के अन्तरिक उद्योगों में अमरीकी निवेश ३ अरब डॉलर तक बढ़ चुके थे और १९७२ की मुद्रा में व्यापार का परिमाण ३६ अरब डॉलर बढ़कर ४७ अरब डॉलर हो गया था। गिरि मयुक्त राष्ट्र मध्य ही नहीं, बल्कि अमरीकी सरकार के भी निर्गमों की अवहेलना करने हुए अमरीकी कानिवा समन्वयवादियों को मैनिङ्ग साध-साधन और सेवा का प्रभाव बिम्बे जा रही है और परमाणुविज्ञ अम्बों के निर्माण में उनकी महादत्ता कर रही है।

मयुक्त राष्ट्र मध्य में दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य के आर्थिक तथा व्यापारिक बहिष्कार का सत्रान बार-बार उठाया गया है, जो निरन्तर बुनियादी मानव-अधिकारों तथा अन्तर्राष्ट्रीय कानून का उल्लंघन बिम्बे जा रहा है और अपने पडोसियों के प्रति घुने तौर पर आतङ्कवादी नीति पर चर रहा है। लेकिन मयुक्त राज्य अमरीका और उसके नाटो के मित्र-देशों ने हर बार इसके लिए सभी कुछ किया है कि ऐसे प्रस्ताव अकारण आये।

वाशिंगटन यह दावा करके नसलवादियों के खिलाफ कुछ करने की अपनी अनिच्छा का औचित्य-स्थापन करता है कि उसे दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य के भीतरी मामलों में हस्तक्षेप करने का कोई नैतिक अधिकार







अमेरिकी राष्ट्रीय कांग्रेस के तीन धाराई सदस्यों के बीच एक बैठक में ऐसा हुआ था, जिसमें में एक पोलिशको मेचानो थे, जो अमेरिकी मूचना सेवा के कार्यालय में एक समय काम करने थे।”

गार्लिन बिटर के अनुसार बम्बुन सोवियत अमेरिकी राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रभाव था, जिसे आबादी के सभी समूहों का समर्थन प्राप्त है, प्रतिकार करने के प्रयास में सी० आई० ए० दक्षिण अफ्रीका में कई अफ्रीकी मण्डलों को पैसा देनी है। बिटर आगे कहते हैं कि अमेरिकी गुप्तचर दक्षिण अफ्रीका में पैसा पहुंचाने के प्रयोजन में संयुक्त राज्य अमेरिका के अनेक मण्डलों का उपयोग करती है, जिसमें एक विध्वानुसार नागरिक अधिकार रक्षार्थ अमेरिकी वकील समिति भी है। १९७७ में इस समिति के जरिए कोई १० लाख डॉलर की रकम भेजी गयी थी। जनरल वान डेन बर्ग ने बिटर को बतलाया था कि सी० आई० ए० जोरो से नये एजेंटों की तलाश कर रही है। वान डेन बर्ग ने जोर देकर कहा कि “सी० आई० ए० इस दौड़ में सभी अज्ञान घोड़ों का समर्थन करती है, ताकि चाहे जो भी घोड़ा जीते, अमेरिका का इनाम की रकम में हिस्सा रहेगा। और इनाम है हमारे रणनीतिक खनिज निक्षेप और संभवतः इतने ही महत्व की हमारी विराट और सस्ती काली श्रम शक्ति।”

११ रैगन के प्रशासन में दक्षिण अफ्रीकी साथ सी० आई० ए० के सहयोग ने  
१२ ग्रहण कर लिया। संयुक्त राज्य







फेंगे। ( मोझाबीक मुस्लिम संस्था ) को विद्रोह और स्वातंत्र्य की उद्घोषणा के बाद सी० आई० ए० ने मोझाबीक में द्रवनिशील शासन को प्रस्थापित करने और रॉडरिगास तथा दक्षिण अफ्रीका में राष्ट्रीय मुस्लिम आंदोलन की जरूरत करने के लिए रॉडरिगास और दक्षिण अफ्रीकी गुलशर मेधाओं के साथ अपने मतभेदों को और बढ़ाया। उदाहरण के लिए, सी० आई० ए० एंबेर्गे ने इथान म्मिथ की गुलशर मेधाओं को मोझाबीक में विवाधेई गणपार्थी निवासों की अवस्थिति के बारे में सूचना प्रदान की। इस जानकारी का उपयोग करते हुए रॉडरिगास ने मोझाबीक में पूरे के पूरे गांवों को मिट्टी में मिलाया और उनके शान्तिप्रिय निवासियों को बेरहमी के साथ मौत के घाट उतारा।

वाणिज्यिक द्वारा दक्षिणी अफ्रीका में मुस्लिम आंदोलनों को " आनकवादी " घोषित किये जाने ने दक्षिण अफ्रीकी नसलवादियों की हिम्मत को बढ़ाया और स्वतंत्र अफ्रीकी देशों के विरुद्ध उनकी भड़कावे की कार्यवाहियों को और भी उद्दृष्टपूर्ण बनाया। ३० जनवरी, १९८१ को दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य ने कहने को तो अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस के एक अंग्रे को नष्ट करने के उद्देश्य से, पर असल में स्त्रियों, बच्चों और बूढ़ों सहित दक्षिण अफ्रीकी शरणार्थियों के खिलाफ ताजीरी कार्यवाई करने के लिए मोझाबीक की राजधानी मापूतो के निकट अपने छतरी सैनिक उतारे।

बाद में पता चला कि नसलवादियों ने अपनी कार्यवाई को सी० आई० ए० के साथ समन्वित किया था,







और प्रिटोरिया द्वारा इस सूचना का अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस के खिलाफ सशस्त्र छेड़छाड़ की योजनाएं बनाने में उपयोग किया जाता था।

जामूसो को एक पत्रकार सम्मेलन में पत्रकारों के सामने पेश किया गया। सी० आई० ए० का एक एजेंट मोजांबीकी विदेश मंत्रालय का उच्चाधिकारी होसे शीनाल मास्सीगा था। सी० आई० ए० ने उनके साथ पहले-पहल संपर्क १९६६ में, जब वह मयुक्त राज्य अमरीका में अध्ययन कर रहा था, अपने एक कर्मियों के जरिए स्थापित किया था, जिसने अपने को विली कहकर परिचित करवाया था। नौ साल बाद जब मास्सीगा मयुक्त राष्ट्र महासभा में मोजांबीकी प्रतिनिधिमंडल के सदस्य की हैसियत से आया, तो विली ने उससे फिर संपर्क स्थापित किया, उसे पैना देने की पेशकश की और मास्सीगा सहयोग करने को तैयार हो गया। मास्सीगा ने स्वीकार किया कि वह मापूतो में सी० आई० ए०-कर्मियों को नियमित रूप से गुप्त सूचनाएं दिया करता था।

अल्मीडू चिबीते एक और सी० आई० ए० एजेंट था, जो मोजांबीकी जनरल स्टाफ के सैनिक रण विभाग का प्रधान था। उसे १९७८ में भरती किया गया था और मोजांबीकी सेना द्वारा प्रयुक्त हथियारों की किस्मों की पूरी सूची तैयार करने और सैनिक इकाइयों की संख्या, प्रशिक्षण तथा अवस्थिति के बारे में और मोजांबीक में स्थित जिवाब्वेई तथा दक्षिण अफ्रीकी मुक्ति आंदोलन के सशस्त्र दलों की गतिविधियों के







मोजाबीक की जनशक्ती सरकार के विरोधियों के मजबूत गिरोह पहले अपनी कार्रवाइयाँ रोडेसियाई प्रदेश में किया करते थे, मगर देशभक्त शक्तियों की विजय के बाद उन्हें जिवाचे में भागना पड़ा। नज़र की 'म्यू एफ़िजन' पत्रिका के अनुसार उन्हें पूर्वी ट्रान्सवाल (दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य) में शरण मिली। दक्षिण अफ्रीकी सेना और भूतपूर्व रोडेसियाई सेना के प्रशिक्षक आतंकवादियों को विशेष निविदों में प्रशिक्षण देते हैं।

सी० आई० ए० की योजनाओं में मोजाबीक राष्ट्रीय प्रतिरोध के दस्यु-दलों का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि वे मोजाबीक में अमरीकी ध्वमकारों को सुगम बनाते हैं। इसके अलावा, सी० आई० ए० प्रतिक्रांतिकारी भूमिगत आंदोलन के पुर्नगामी प्रशिक्षणवादियों के साथ, जो मोजाबीक में पुरानी व्यवस्था को फिर से स्थापित करना चाहते हैं, संपर्कों को भी समन्वित करती है। सी० आई० ए० के साथ अपने संपर्कों के लिए मजहूर और मोजाबीक में पुर्नगामी अभियान सेना के भूतपूर्व कमांडर जनरल दी अरियागा १९८० में प्रतिक्रांतिकारियों से मिलने के लिए दक्षिण अफ्रीका गये थे। उल्लेखनीय है कि इसके बाद मोजाबीकी सरकार के खिलाफ मोजाबीक राष्ट्रीय प्रतिरोध की छेड़छाड़ की कार्रवाइयाँ सहसा बढ़ गयीं।

सी० आई० ए० के जामूसी जाल के रहस्योद्घाटन के सिलसिले में मोजाबीकी सुरक्षा मंत्रालय द्वारा जारी















माण को "मधुक्त राज्य अमरीका की राष्ट्रीय सुरक्षा" के लिए खतरे की तरह समझता है।

यही कारण है कि पोल बेराभे सी० आई० ए० की गुप्त फाइलों में "पहले नंबर के शत्रु" की हैमियत रखते हैं।

मांरीगस में सी० आई० ए० के परदाफाश से पैदा हुई नाराजगी की लहर अभी शान भी न हो पायी थी कि लैंग्ली की एक नयी गुप्त योजना प्रकाश में आ गयी। यह लीबियाई नेता कर्नल मुअम्मर कदाफी की हत्या करने की योजना थी।

पोल बेराभे की ही भांति मुअम्मर कदाफी भी अफ्रीका में अमरीकी प्रशासन के मुख्य शत्रुओं की सूची में हैं। कारण ? कारण यह कि लीबिया राष्ट्रीय मुक्ति की शक्तियों और उन स्वतंत्र देशों को सहायता देता है, जो अफ्रीका तथा मध्य-पूर्व के मामलों में साम्राज्यवादी हस्तक्षेप का अविचल विरोध करते हैं और अमरीकी ध्वसकार्य का प्रतिरोध करते हैं। जैसे कि अमरीकी पत्रिका 'न्यूजवीक' ने अपने ३ अगस्त, १९८१ के अंक में कहा था, यही कारण था कि सी० आई० ए० ने कर्नल कदाफी के "आखिरी तौर पर" सत्ता से अलग किये जाने की योजना तैयार की।

लीबियाई नेता की हत्या का दायित्व सी० आई० ए० ने अपने एक भूतपूर्व कर्मी एडविन विल्मन को सौंपा। यह योजना अमरीकी गुप्तचरों की जानकारी अनुरूप ही थी। अमरीकी अखबार 'वाशिंगटन पोस्ट' के अनुसार कर्नल कदाफी की हत्या



उनके शरीर में 'एक ऐसी बाली बसती थी जिम्मेरी  
मीडिया में भरमार है, हाथ के मजदूर हाथें डूंगे \*  
एक पानक बिज का प्रवेश बरबाद की जाती थी।

विश्व प्रेम में मुक्ति के आ आन क बाग्य मी०  
आई० ए० की ये योजनाएँ साकार न हो सकीं मगर  
इसने कॉन्ग्रेसन का मीडिया क बिन्दु नयी आनकवादी  
योजनाओं का नैपथ्य करना बंद नहीं हो गया। अमरीकी  
जनमत का प्यान १५ मई १९८१ का अमरीकी  
बायें अनुमोधान सेवा डूंगे असीका में अमरीकी प्रभाव  
को फैलाने तथा मुद्दु करन के उद्देश्य में मीडिया  
के बिन्दु कार्यवाहियों का मज करन क बारे में प्रका-  
शित रिपोर्ट की मज्य गया। इस रिपोर्ट में उनकी  
असीका में कॉन्ग्रेसन क साम्बादिक मस्या की प्रकट  
किया गया था

- इस प्रदेश में मयुक्त राज्य अमरीका क साथ  
सामान्य हित रखनेवाले देशों का मीडियाविरोधी  
आम राय " बनाने क लिए असीकी एकता मजठन  
का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करना

- इस प्रदेश के देशों की मैनिक महायना बढ़ाना

- बहाली को हराकर रोक्ने के माधुन के रूप  
में इस प्रदेश में कागसर अमरीकी मैन्य उपस्थिति का  
निर्माण करना।

मगता है कि बहाली की हत्या इसी योजना  
का अंग थी। और इसीलिए अमरीकी प्रशासन द्वारा



नयी लीबियाविरोधी कार्रवाई प्रत्याशित ही थी।

इसमें कोई अधिक समय लगा भी नहीं।

जुलाई, १९८१ में सीनेट विदेश सवध समिति के सामने बोलते हुए अफ्रीकी मामलों के लिए उत्तरदायी सहायक विदेश मंत्री चैस्टर आर्कर ने कहा कि संयुक्त राज्य अमरीका "लीबिया के घबसकार्य और अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के समर्थन के राजनय" का प्रतिरोध करनेवाले किसी भी देश को सहायता बढ़ाने के लिए तैयार है। इसके फौरन बाद द्यूनीशिया को अमरीकी सैनिक सहायता एकदम बढ़ाकर ५०० लाख डॉलर से ६५० लाख डॉलर और सूडान को ३०० लाख डॉलर से १००० लाख डॉलर कर दी गयी। १६ अगस्त को सीदरा की खाड़ी पर नियमित गश्ती उड़ान करते दो लीबियाई विमानों को अमरीकी छठे बेड़े के एक विमान-वाहक पोत से उड़े अमरीकी विमानों ने मार गिराया। लीबियाई विमानों पर इस अकारण आक्रमण ने संपूर्ण अरब विश्व ही नहीं, पश्चिमी यूरोप में भी सख्त नाराजी पैदा की। प्रगतिशील प्रेस ने इस दस्यु-कार्य को लीबिया के विरुद्ध संयुक्त राज्य अमरीका के आक्रामक इरादों का सबूत बताया। मगर अमरीकी अधिकारियों ने पाश्चात्पूर्वक कहा कि संयुक्त राज्य अमरीका अपने को दोषी नहीं मानता और ज़रूरत पड़ने पर लीबिया के खिलाफ भविष्य में भी ऐसे ही कदम उठायेगा।

या में अस्थिरता पैदा करने की अमरीकी ही एक हिस्सा चाद की घटनाओं के निरन्तर व्यापक लीबियाविरोधी अभियान का छेड़







इस क्षेत्रों का मुकाबला दिया। जो संयुक्त राज्य अमेरिका के लोग समझते कि सीबिया बाद में जाने की कमी महसूस न होगा।

अनुमान था कि यह सही है कि वाणिज्य के तहत पैसा धुंधला गया होगा जब सीबियाई सरकार ने अमेरिकी लूटने वाले के मुकाबला का मजबूती में वापस करने हुए अपनी योजनाओं को एक सप्ताह के भीतर ही बाद में वापस बुला दिया। अमेरिकी प्रशासन ने यह कहकर अपनी निमित्तवादी छिपाने की कोशिश की कि सीबियाई लोगों की बातों के पीछे उम्मीद कोई "पुष्टि" है।

दिसंबर, १९८१ में सी० आई० ए० ने एक नया सीबियाई-विरोधी तमामना खड़ा किया। नैप्पी के कर्गधारी ने राष्ट्रपति रैगन की हत्या के एक सीबियाई पड्डन (१) में संबंधित "परम गोपनीय सूचना" के प्रेम में "पहुँचने" का इन्तजाम किया। इस आशय की बेमिस्तर की अफवाह फैलायी गयी कि राष्ट्रपति तथा उनके सहकारियों का स्वागत करने के लिए "दो सीबियाई हत्या-टोलिया" संयुक्त राज्य अमेरिका भेजी गयी हैं। टेलीविजन, रेडियो और प्रेम सी० आई० ए० द्वारा आविष्कृत "पड्डन" के बारे में रोब नये-नये चटपटे किस्से पेश करते। संयुक्त राज्य अमेरिका में सीबिया-विरोधी प्रचार अपने चरम पर पहुँच गया। तदन के 'ऑब्जर्वर' अखबार ने इस मिलसिले में लिखा: "तमाम या कि जैसे देश को सीबिया पर सैनिक प्रहार जैसी किसी निश्चयात्मक कार्रवाई के लिए तैयार किया







जंगली मो बीम ? जो आबाद करना चाहती है  
अमरीका मारी दुनिया पर दबदबा करना और दुनिया  
को अमरीका के दुश्मनों या गुनाहों में बाटना चाहता  
है और हम गुनाह होने में इन्कार करने हैं।

प्रश्न: आपने देग और मयुक्त राज्य अमरीका  
के बीच विरोध वास्तव में द्विमा की तरफ ले जा चुका  
है। अमरीकी छोटे बड़े के विमानों ने आपके दो  
विमानों को मार गिराया है क्या आपने कुछ करने  
की, अमरीकी से बदला लेने की सोची है ?

उत्तर: यह बदले की बात नहीं है, यह हमारे  
देग की रक्षा की, हमारी प्रतिष्ठा की बात है। हम  
अपने मीमानों पर आनेवाली अमरीकी सेना के खिलाफ  
लड़ने को तैयार हैं। हम अमरीका का सामना  
करने को तैयार हैं और हम अमरीका से लड़ने से  
वतारायेगे नहीं। "

सी० आई० ए० का भूठा शोर मचाने के बुलबुले  
की तरह फिस हो गया। लेकिन अमरीकी प्रशासन  
ने अपने कटु लीब्रियाविरोधी अभियान को पूर्ववत्  
जारी रखा। साथ ही उसने अब आर्थिक प्रतिपेक्षों  
की धमकी भी दी। लीब्रिया में काम करनेवाले अमरी-  
कियों को सरकारी तौर पर स्वदेश लौट आने की सलाह  
दी गयी, क्योंकि उनकी जाने कथित रूप में खतरे  
में थी। राष्ट्रपति रैगन ने खुले तौर पर लीब्रियाई  
की खरीद पर रोक लगाने के अपने इरादों की  
11 की। १९८२ के आरम्भ में ये धमकिया वास्त-







मे भी खिलौनों और मिठाइयों के नीचे, जिन्हें वस्त्र डिक्लेरेशन में पाखंडपूर्वक स्थानीय अपाहित्र बाल अस्पताल के लिए भेंटें बतलाया गया था, हथियार छिपे हुए निकले। जब "रग्बी खिलाड़ियों" ने देखा कि भेद खुल गया है, तो उन्होंने बंदूकें निकाल लीं और गोलियां चलने लगीं। सेरील्ल के सुरक्षा दस्तों ने दस्युओं को जल्दी ही काबू में ले लिया। मुठभेड़ में उनमें से कुछ मारे गये और सात को हिरासत में ले लिया गया। दोष दस्यु एयर इंडिया के एक विमान को हाईजैक करके दक्षिण अफ्रीका भाग गये।

"रग्बी खिलाड़ी" दक्षिण अफ्रीकी तथा अमरीकी गुप्तचरों सेबाओं द्वारा सेरील्ल की सरकार का तत्पक्ष उलटने के लिए भरती किये गये भाड़े के सैनिक निरर्थक। कांगो में अपने कारनामों के लिए वृक्ष्यात कर्नल माइकेल होर, जो अपनी व्याधिकीय रक्तपिपासा के कारण "पागल माइक" के नाम से जाना जाता था, इन लोगों का नेता था। पागल माइक के गिरोह में अफ्रीकी, ब्रिटिश, फ्रांसीसी और न्यूजीलैंडी नागरिक भी थे, मगर अधिकांश भड़की भूतपूर्व रोडेसियाई सुरक्षा-कर्मी थे, जो जिद्दाव्हे में देशभक्त शाकिनियों की विद्रोह के बाद भागकर दक्षिण अफ्रीका चले गये थे।

भाड़े के सैनिकों में से प्रत्येक को १,००० डॉलर मिले थे। कार्रवाई के सफल होने की मूरत में प्रत्येक को १०,००० डॉलर और देने का आश्वासन दिया गया था।

बंदी बनाये गये इन सैनिकों में से दो, राइर







ने जल्दी से यह ऐलान किया कि उसे पड़्यत्र-प्रमाण की "कोई भी जानकारी नहीं" है। अमरीकी विदेश मंत्रालय ने भी यह कहकर फौरन ही सारे मामले से हाथ साफ कर लिये कि वह सिद्धांततः ऐसे हिंसात्मक प्रयासों के विरुद्ध है। दूसरे शब्दों में, ठीक जिन शक्तियों की संसदीय में राजकीय व्यवस्था को बदलने में मान दिलचस्पी हो सकती थी, वे ही दावा कर रही थी कि उनका इस प्रयास से कोई संबंध नहीं है।

लेकिन इस प्रसंग में भी यही हुआ कि जो लोग इस पड़्यत्र के पीछे थे, वे अपने सुरागों को पूरी तरह से नहीं छिपा पाये। ७ जनवरी, १९८२ को ब्रिटिश अखबार 'डेली टेलीग्राफ' ने यह रिपोर्ट प्रकाशित की कि "मामले की जांच से सामने आनेवाला प्रमाण पश्चिमी गुप्तचर्या अधिकरणों, विशेषकर मैक्स इटैलीजेम एजेन्सी, को पहले से जानकारी होने की ओर इंगित करता है और संभव है कि उन्होंने प्रत्यक्ष समर्थन प्रदान किया हो।" ब्रिटेन की ही 'सेक्टर की-ली' पत्रिका के अनुसार यह मानने का हर कारण है कि संसदीय के हमले को दक्षिण अफ्रीकी गुप्तचर्या और सी० आई० ए० - दोनों ने ही प्रायोजित किया था। आखिर यह सर्वज्ञान है कि मयुक्त राज्य अमरीका संसदीय के राष्ट्रपति काम आखेर देने की व्यवस्था में बहुत अग्रगण्य है, जो हिंसक विद्रोहों के और अधिक मैन्युवरण की अमरीकी योजनाओं के विरोधी है। पत्रिका ने इंगित किया कि "यह एकदम सत्य है कि अगर यह प्रयास सफल हो जाता, तो हम देश में भय







जाहिर कर दीं। हॉल के अनुसार सत्ता-परिवर्तन प्रयास की तैयारियां लगभग पूरी हो चुकी थीं और उन गानाई संपर्क व्यक्ति क्वेबी ओफोरी वाशिंगटन में सी० आई० ए० से १,८०,००० डॉलर अतिरिक्त भेंटियों के लिए और इसके अलावा ६०,००० डॉलर रॉलिंग्स को खत्म करने के लिए लेकर संदेश पहुंचा भी चुका था। भाडे के सैनिकों ने हथियार इस्तेमाल अफ्रीका से खरीदने का निश्चय किया। इसके बाद कई गानाई नगरों पर एकमात्र हमला किया जाना था और देश में शासनविरोधी असंतोष फैलाया जाना था।

सी० आई० ए० ने कितनी और ऐसी ही आतंकवादी कार्रवाइयों की तैयारी की है? कौनसे अफ्रीकी राज्य अमरीकी प्रशासन की मुहिमबाजाना नीति के गिकार हो सकते हैं?

संयुक्त राज्य अमरीका द्वारा अफ्रीका में अनुप्राणित अन्तर्जातीय आतंकवाद की नीति जितने ही नराम और तरीकों का उपयोग करती है और वे आगामी से पक्क में नहीं आते हैं। लेकिन देर-नबेर सब साफ़ हो आ ही जाता है और विश्व एक बार फिर साम्राज्यवाद की गर्हिन और रक्तमय चालों में गिर उठता है।

आज अफ्रीकी जन वाशिंगटन द्वारा समग्र अफ्रीका पर बढ़ते जानेवाले मुष्नीटों के पीछे देखना सीख चुके हैं। 'आफ्रीका-आफ्री' पत्रिका के अनुसार "बदल उमरें हिमों का बनना होता है, तो संयुक्त राज्य अमरीका जैसी भी आतंकवादी कार्रवाई का सामना



ले सकता है।" वाशिंगटन किसी भी देश द्वारा अपने को नवउपनिवेशवाद से मुक्त करने के किसी भी प्रयास को समुक्त राज्य अमरीका के "बुनियादी हितों" के लिए सतर्क मानता है। 'आफ्रीक-आज़ी' पूछता है "क्या इस तरह के राजकीय आतंकवाद से भी बदतर किसी आतंकवाद की कल्पना की जा सकती है?"

न अमरीकी प्रशासन ही इस सवाल का कदाचित्त जवाब देगा और न सी० आर्द० ए० के सूत्रधार ही इसका जवाब देगे - आखिर विश्व-प्रभुत्व के सघर्ष में आतंकवाद हमेशा ही उनका मुख्य हथियार जो रहा है।



## मित्र-देशों के ही खिलाफ ...

जनवरी, १९८१ में इतालवी पत्रिका 'इल सेतीमनाले' में प्रकाशित एक भेटवार्ता में रॉनल्ड रैगन ने कहा था कि वह "अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के उद्गम केंद्रों" पर प्रहार करने की ठान चुके हैं। इस प्रकार, औपचारिक सत्ता ग्रहण के भी पहले अमरीकी राष्ट्रपति ने एक अभियान छेड़ दिया, जिसे, तत्कालीन अमरीकी विदेश मंत्री अलेग्जेडर हेग के शब्दों में, अमरीकी नीति में वही भूमिका अदा करनी थी, जो कार्टर के राष्ट्रपतित्व में "मानव-अधिकार" अभियान ने की थी। नये प्रशासन के बिल्कुल प्रारंभिक दिनों से ही हेग ने सोवियत संघ पर अंतर्राष्ट्रीय आतंकवादियों को "प्रशिक्षित करने, पैसा देने और दस्त्र-सज्जिन करने" का आरोप लगाना शुरू कर दिया। \*

यह सोवियतविरोधी साधन-अभियान अधिकांश पश्चिमी यूरोप को ध्यान में रखकर छेड़ा गया था, जो आतंकवाद की कष्टदायी जड़ में समझा था। इसके जरिए मित्र-देशों को जनाया गया कि यह सोवियत

\* *The New York Times*, May 3, 1981, p. 1.







माग ने "मरकार के गुप्तचर्या अभिकरणों को अरबका दिया।" सी० आई० ए०, एफ० बी० आई० और अमरीकी सैन्य गुप्तचर्या को स्वीकार करना पडा कि उनके पास आतङ्कवाद में सोवियत शिरकत का कोई प्रमाण नहीं है। प्रशासन के आग्रह पर सी० आई० ए० ने इस विषय के बारे में तीन रिपोर्टें पेश की, मगर परिणाम वह का वही रहा - "कोई प्रमाण नहीं है"।

इसके अलावा, जैसे कि अमरीकी समाचार एजेंसी एसोसियेटेड प्रेस ने १९८१ के अंत में सूचना दी, सी० आई० ए० के प्रवक्ता ने बतलाया कि सैन्सी ने भविष्य में अंतर्राष्ट्रीय आतङ्कवाद के विषय पर कुछ भी प्रकाशित अथवा अनुसंधान न करने का फैसला कर लिया है। इसका कारण यह दिया गया कि इन प्रकार के प्रकाशन "बहुत विवाद उत्पन्न करते हैं और सी० आई० ए० की तरफ अनावश्यक ध्यान आकर्षित करने हैं।"

यह एक सुली आत्मस्वीकृति थी। सी० आई० ए० इस नतीजे पर पहुंची कि अंतर्राष्ट्रीय आतङ्कवाद के "उद्गम" की शोध सैन्सी पर पड़ना सकती है, बल्कि कि आतङ्कवाद अमरीकी विदेश नीति का एक स्वर्ण उपकरण बन गया है और इसमें वह प्रच्छन्न मार्ग भी शामिल है, जो मध्यम राज्य अमरीका कई बाजारों में खुद अपने ही मित्र-देशों के खिलाफ चलाया जा रहा है। आइये, हम सच्चाई के कुछ प्रमाणों को ले।







चलाये जाने से बचने के लिए लातीनी अमरीका भाग गये थे, की बेटी पुलिस के जाल में फसी। जेलों ने मारीआ ग्रात्सीआ को पत्रवाहक बनाकर अपने साथियों को वे दस्तावेज पहुचानी चाही थी, जिनका इतालवी अधिकारियों और वाशिंगटन तथा नाटो मुख्यालय में कुछ अधिकारियों को ब्लैकमेल करने के लिए उपयोग किया जा सकता था।

जेलनी ने सी० आई० ए० और नाटो के लिए वर्षों काम किया था और इतालवी मेसन संगठन के भीतर अति गुप्त पी-२ लॉज की स्थापना की थी, जिसका लक्ष्य देश में सत्ता को अपने अधिकार में ले लेना था। युद्धोत्तर वर्षों में जिन षड्यंत्रों ने इतालवी गणराज्य को डगमगाया था, उनमें यही सफलता के सबसे निकट पहुच पाया था। और ऐसे षड्यंत्र भी बहुतेरे थे। आइये, देखे कि इस विषय में जनरल जान अलेलीओ मालेत्ती क्या कहते हैं, जो कई साल इटली की प्रतिगुप्तचर्या सेवा के प्रधान रहे थे (यह अश जनरल मालेत्ती के साथ 'ल'एक्सप्रेसो' पत्रिका के सहाय-दाता की भेटवार्ता से लिया गया है, जो पत्रिका में १५ मार्च, १९८१ को प्रकाशित हुई थी) :

“ प्रश्न : सीड \* में आपके कार्यकाल के दौरान कितने सत्ता-परिवर्तन षड्यंत्र रचे गये थे ?

\* सीड - SID - ( मूलतः सीफार - SIFAR इतालवी गुप्त सेवा का नाम है। अब इसे कई अलग-अलग सेवाओं में पुनर्गठित कर दिया गया है। - जं०







चलाये जाने से बचने के लिए लातीनी अमरीका गये थे, की बेटी पुलिस के जाल में फसी। जे ने मारीआ ग्रात्सीआ को पत्रवाहक बनाकर अपने सारे को वे दस्तावेजें पहुंचानी चाही थी, जिनका इटा अधिकारियो और वाशिंगटन तथा नाटो मुख्यालय कुछ अधिकारियो को ब्लैकमेल करने के लिए उप किया जा सकता था।

जेल्सी ने सी० आई० ए० और नाटो के वर्यो काम किया था और इतालवी मेसन संगठन भीतर अति गुप्त पी-२ साँज की स्थापना की जिसका लक्ष्य देश में सत्ता को अपने अधिकार में लेना था। युद्धोत्तर वर्यो में जिन पद्धतियो ने इतालवी गणराज्य को डगमगाया था, उनमें यही सफलता के निकट पहुँच पाया था। और ऐसे पद्धतियो भी बहुतेरे

देखे कि इस विषय में जनरल जान बदे । क्या कहते हैं, जो कई साल इटली की सेवा के प्रधान रहे थे ( यह अंश जनरल साय ' ' ' ' पत्रिका के संवाद गया है, जो पत्रिका में हुई थी ) :

कार्यकाल के दौरान  
रचे गये थे ?

... - SIPAE इतालवी कुल सेवा  
सेवाओं में गुप्तचर







बलाये जाने से बचने के लिए लातीनी अमरीका भाग गये थे, की बेटी पुलिस के जाल में फसी। जेलों में मारीआ ग्रात्सीआ को पञ्चवाहक बनाकर अपने साथियों को वे दस्तावेजें पहुचानी चाही थी, जिनका इतालवी अधिकारियों और वाशिंगटन तथा नाटो मुख्यालय में कुछ अधिकारियों को ब्लैकमेल करने के लिए उपयोग किया जा सकता था।

जेल्ली ने सी० आई० ए० और नाटो के लिए यों काम किया था और इतालवी मेसन संगठन के उत्तर अति गुप्त पी-२ लांज की स्थापना की थी, जिसका लक्ष्य देश में सत्ता को अपने अधिकार में लेना था। युद्धोत्तर वर्षों में जिन पद्मियों ने इतालवी पराज्य को डगमगाया था, उनमें यही सफलता सबसे निकट पहुच पाया था। और ऐसे पद्मियन भी बढ़ते

आइये, देखे कि इस विषय में जनरल जान अरेओ मालेत्ती क्या कहते हैं, जो कई साल इटली की गुप्तचर्या सेवा के प्रधान रहे थे (यह अज्ञ जनरल मालेत्ती के माध्य 'ल'एक्सप्रेसो' पत्रिका के सवादन की भेटवार्ता में लिया गया है, जो पत्रिका में मार्च, १९८१ को प्रकाशित हुई थी)

“प्रश्न: सीड\* में आपके कार्यकाल के दौरान ने सत्ता-परिवर्तन पद्मियन रचे गये थे?”

\* सीड - SID - (सुपन सीपार - SIPAR इतालवी गुप्त सेवा) - ई। अब इसे कई अलग-अलग सेवाओं में पुनर्गठित कर











में इतनी एक देशध्यापी सामनविरोधी पहचान के साथ  
में ही रहना रहा है। उसमें भाग लेनेवाले बदलने  
रहे हैं, इसी प्रकार जिन गुटों के हाथ में पहल  
रही है, वे भी बदलने लगे हैं। मगर उसका लक्ष्य  
ही बना रहना है—जनवादी शक्तियों पर प्रहार  
करना, शक्ति आंदोलन को मूल में डूबो देना और  
देश में प्रतिक्रियावादी तानाशाही की स्थापना करना।

जनरल मालेती ने इन पहचानों के खतरे को जान-  
बूझकर कम करके दिखाया था। सीन्थोंग दोनीनी  
के पक्ष की ही तरह उनकी इस भेटवार्ता में भी एक  
गुल माना है। फासिस्त प्रिम बनेगीओ बोर्गोनेजे ने अपने  
गिरोहों को गृह मंत्रालय के सम्भागार के हथियारों  
में लैस किया था और पहचानवादी मार्क्सवादी इमारतों  
और टेन्टीविजन केंद्र को अपने नियंत्रण में लेने ही  
चाहे थे।

विद्रोही बोर्गोनेजे को एक 'नया मुसोलिनी'  
घोषित करने की नैयागिया कर रहे थे। वे मेना में  
अपने हमदर्दों—जनरल ऊगो रिक्की की कमान में  
स्थित टैंक बोर और अमरीकी अड्डों के निबट तैनात  
मेना की तीव्ररी बोर—को अपनी सहायता के लिए  
बुलाने की सोच रहे थे। मैनिफ गुप्तचरों के कर्नल  
आमोस स्पिघात्सी के नेतृत्व में बागी टुकड़ियों को  
रोम को इटली के मजदूरप्रधान उत्तरी भाग से काट  
देना था।

मालेती के दावों के विपरीत भूतपूर्व छापामार  
और पी-२ लांज के सदस्य एदगादों साम्थो ( उन्होंने



अनुगामी के साथ मित्रता बढ़ान तथा यह और वह काम का काम में लाने के लिए तैयार था। योशिया के अनुसार गान्धर्वी से प्रेम को निरन्तर कर दिया जाता था जिन्हें गन्धर्ववारी विद्रोह के पक्ष में आने को प्रेरित करना चाहते थे। गन्धर्व का विद्रोह अखिरी पक्ष में ही निवारण किया जा सका। दूसरा विद्रोह एक महीने बाद होनेवाला था। इसमें बोरमेडे के अनुगामी भी शामिल थे। इसका भी निवारण कर दिया गया। ”

पाच साल में पाच गन्धर्व दमे इनके अनाथ भी बितनी ही का उल्लेख किया जा सकता है। मात्र दशक में जनरल दे सोरेन्सो ने, जो पहले मैत्रि पुनर् और बाद में सीफार के प्रधान रहे थे, सत्ता दबोचने की कोशिश की। उनकी योजना में ( जिसका कूटनाम सोलो था ) वामपंथी पार्टियों तथा मजदूर सशस्त्र पर पाबंदी लगाये जाने और उनके नेताओं की निरफ्तारी की कल्पना की गयी थी। इस गन्धर्व का परदाफाश होने के बाद सीफार का पुनर्गठन हुआ और उसका नाम सीड हो गया। लेकिन नाम में परिवर्तन से संगठन के स्वरूप में कोई परिवर्तन नहीं आया। नाटो की गुप्तचर सेवाओं ने अपनी अटार्कटिक सक्रियता इसकी सहायता से ही तैयार की थी। इसकी तैयारी प्रोमेथियस सक्रियता के नमूने पर ही की गयी थी, जिसने यूनान में “काले कर्नल” को उत्तारुद्ध करवाया था। लगभग सारे युद्धोत्तर काल







अमरीकी गुप्तचर्या एजेंट की तरह फाशिस्तविरोधी प्रतिरोध आंदोलन में भाग लिया था) के सफेद विद्रोह को, अपने संगठनकर्ताओं के ही शब्दों में, "प्रचंड, त्वर और निर्मम" होना था और भूतपूर्व प्रतिरक्षा मंत्री रादोल्फो पाञ्ज्यादी का अधिनायकत्व स्थापित करना था। स्पियाल्सी ने ही रोजा देई बेंती पड़यंत्र भी रचा था।

मालेत्ती का इन बातों का उल्लेख न करना सभी कुछ स्पष्ट कर देता है—इटली की गुप्तचर सेवाओं ने इन सभी पड़यंत्रों में प्रमुख भूमिका निवाही थी। मालेत्ती और सीद के प्रमुख जनरल मिचेली उसी पी-२ लॉज के सक्रिय सदस्य थे, जिसने प्रकाश में आये पड़यंत्रकारियों की मदद को आकर नये पड़यंत्रकारियों से उनकी प्रतिस्थापना की थी। यह बात इस भेटघार्ता के प्रकाशित होने के कुछ ही दिन बाद सामने आ गयी और मालेत्ती को अपने ऊपर फौजदारी मुकदमा चलाये जाने से बचने के लिए दक्षिण अफ्रीका भाग जाना पड़ा।

इससे यह समझ में आ जाता है कि क्यों जनरल मालेत्ती ने पड़यंत्रों की मुख्य संगठक सी० आई० ए० का उल्लेख नहीं किया। और असल में ये सी० आई० ए० और नाटो गुप्तचर्या अभिकरण—अमरीकी सैनिक-औद्योगिक गठबंधन के अभिकरण—ही हैं कि जो संयुक्त राज्य अमरीका की अपने मित्र-देशों के विरुद्ध गुप्त अंतर्ध्वंसात्मक सड़ाई के मूल में हैं और जिन्होंने इस सड़ाई की रणनीति तैयार की है।











संठनों का उपयोग करना महायुद्ध हो सकता है।” \*

अमानि पैदा करने के इस कुटिल निर्देश की यह व्यावहारिक शैली उस तथाकथित तनाव की रणनीति को प्रतिबिंबित करती है जो अमरीकी पड़ोसकारियों और उनके इतालवी मित्रों की नानाशाही शासन की बुनियाद तैयार करने के लिए तबे समय में महायुद्ध पर रही है।

इस कार्य-प्रणाली में मौलिक कुछ भी नहीं है। इसके लिए राष्ट्रस्तान अग्निबाद का स्मरण करना ही काफी होगा, जिसे हिटलरियों ने कम्युनिस्टों और विरोध-पक्ष का सफाया करने के लिए करवाया था। नाटो के रणनीतिज्ञों ने पश्चिम में सामर्थ्य के विरुद्ध अपने संघर्ष में हिमा आतंकवाद और ज्ञान में मारने की नात्वी मिमाल का ही अनुकरण किया है।

अप्रैल, १९६७ में यूतान में फासिस्म वर्तनों ने सत्ता हड़प ली। उसी घड़ी में अमरीकी गुप्तचरों ने अपना भारी ध्यान इटली पर केंद्रित कर रखा है। अटकास, “स्पाइ और छुपे नाम आतंकवाद का बागी-बारी में महाराज लिये ज्ञान की प्रविधि घड़ी अपनी पराजय पर पहुँची है। लेकिन डीक इटली को ही इसके लिए क्यों चुना गया ?

हान ही में मयुक्त राज्य अमरीका में राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद की १० फरवरी तथा ८ मार्च १९६८ की



अगर "अमरीकी समर्थन का उपभोग करनेवाली कोई सरकार सकल्प के अभाव अथवा शक्ति के अभाव में कम्युनिस्ट या कम्युनिस्ट-प्रेरित विद्रोह से सड़ने में कमजोरी दिखलाती है" या वह "अमरीकी हितों से असंगत अथवा उनके प्रतिकूल आत्यंतिक राष्ट्रवादी रुख" अपनाती है, तो यह समर्थन समाप्त कर दिया जाता है।

लेकिन अगर "एकमात्र निर्णेता" की हैमियन से संयुक्त राज्य अमरीका यह निर्णय करे कि उसके मित्र-देश निर्धारित शर्तों का पालन नहीं कर रहे हैं, तो? ऐसी सूरत में संयुक्त राज्य अमरीका मित्र-देश की "संरचना को रूपांतरित" करने के अपने अधिकार को जताता है। गुटका में कहा गया है कि अमरीकी सैनिक गुप्तचर्या के पास "ऐसी विशेष बार्नबाइया शुरू करने के साधन होने चाहिए, जो मेजबान देशों की सरकारों और जनमत को विद्रोह के सूतरे की वास्तविकता और निर्णायक कदम उठाने की आवश्यकता का कायल कर सके। इस प्रयोजन के लिए अमरीकी सैनिक गुप्तचर्या को विद्रोही आंदोलन में विशेष एजेंटों की सहायता में प्रवेश पाने की कोशिश करनी चाहिए, जिनका कार्यभार आंदोलन के अधिक उग्र तथ्यों में विशेष कार्य-दल बनाना हो। ऊपर परिकल्पित स्थिति के उत्पन्न हो जाने पर अमरीकी सैनिक गुप्तचर्या के नियंत्रण में इन दलों का हिमात्मक अथवा अहिमात्मक बार्नबाइया शुरू करने के लिए इस्तेमाल किया जाना चाहिए। उपरोक्त तथ्यों की गिडि में चारम बायबोरी



मपट्टनो का उपयोग करना महायुक्त मिट्ट हो सकता है।<sup>१०</sup>

अशानि पैदा करने के इस कुटिल निर्देश की यह व्यावहारिक नीती उस तथ्याकथित नवाव की रणनीति को प्रतिबिम्बित करती है, जो अमरीकी पट्टनवागिया और उनके इलातवी मगियों की मानाशाही सामन की बुनियाद तैयार करने के लिए नवे समय में महायुक्त कर रही है।

इस कार्य-प्रणाली में मौलिक कुछ भी नहीं है। इसके लिए राइमस्ताफ अग्निकांड का स्मरण करना ही काफी होगा जिसे हिटलरियों ने कम्युनिस्टो और विरोध-मध का मफाया करने के लिए करवाया था। नाटो के रणनीतिज्ञो ने पश्चिम में बाभरध व विरुद्ध अपने मधर्ष में हिमा आनकवाद और ज्ञान में मारने की नात्मी मिमान का ही अनुकरण किया है।

अप्रैल १९६७ में यूनान में कागिस्त बनवां ने मता हटाय ली। उसी घड़ी में अमरीकी गजबर्षा ने अपना माग ध्यान टटली पर बंटित कर रखा है। बाकाबा, "म्याह और छुप मान आनकवाद का बागी-बारी में महारा नियं ज्ञान की प्रबिध यही अपनी परकाष्ठा पर पहुँची है। लेकिन टीक टग्वी का ही इसके लिए क्यों चुना गया'

हाल ही में मयुक्त राज्य अमरीका में राष्ट्रीय युगला परिषद की १० परबगी तथा ८ मार्च १९६८ की

<sup>१०</sup> *Covert Action Information Bulletin* No. 1 January 1979, p. 11.



रिपोर्टों को गुप्त दस्तावेजों की सूची से अलग करके प्रकाशित किया गया है। सारत, वे निष्ठुर "तनाव की रणनीति" के आधारबर्तों कार्यक्रम को निरुपित करती हैं। हम यहां इनके कुछ अंश उद्धृत कर रहे हैं:

"इटली में संयुक्त राज्य अमरीका का बुनियादी लक्ष्य इस अत्यंत महत्वपूर्ण देश में हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा के अनुकूल अवस्थाएँ स्थापित और कायम रखना है। अगर सोवियत संघ इन देशों—इटली, यूनान, तुर्की या ईरान—में से किसी पर भी नियंत्रण प्राप्त करने के अपने प्रयासों में सफल हो जाता है, तो समूचे पूर्वी भूमध्यसागर क्षेत्र और मध्य-पूर्व की सुरक्षा छतरे में पड़ जायेगी।" याद दिला दे कि साम्राज्यवादियों की शब्दावली में इस "नियंत्रण प्राप्त करने" का अर्थ इन देशों में वामपंथी सरकारों का विधिसम्मत, संसदीय तरीके से सत्ता में आना है।

१९४७ में संयुक्त राज्य अमरीका ने इटली और फ्रांस की सरकारों से कम्युनिस्ट मंत्रियों को बरखास्त करवाने में सफलता प्राप्त कर ली थी। लेकिन इटली में अप्रैल, १९४८ में पहले मुंडोतर चुनाव होनेवाले थे और वाशिंगटन इस आशका में सन्नस्त था कि वही चुनावों में कम्युनिस्ट और उनके साथ सहबंध में शामिल दल न जीत जायें। संयुक्त राज्य अमरीका ने इतालवी मतदाताओं और राजनीतिज्ञों को खरीदने के लिए करोड़ों डॉलर लगा दिये। कारण राजनीतिक और सैनिक अर्थों में रणनीतिक थे। रिपोर्ट में जाने कहा गया है: "भूमध्यसागर क्षेत्र में इटली की स्थिति







तो संयुक्त राज्य अमरीका सिसिली और सार्दीनिया पर सीधा आक्रमण करने का इरादा रखता था। इन टापुओं में जयचंदो के दल कायम किये गये थे, जो इटली में अपने वियोजन की ओर संयुक्त राज्य अमरीका में शामिल होने की इच्छा घोषित करने के लिए तैयार थे। सिसिली में पार्थिववादी आंदोलन में अगुआ भूमिका माफिया अदा करता था, माफी अधिमिलन से वह मादक द्रव्यों की तस्करी और अपने अन्य गैर-कानूनी कामों को बढ़ा सकता था।

प्रसंगत, पार्थिववादी प्रवृत्तियों को सी० आई० ए० आज भी प्रोत्साहित करती है। लेकिन आइये, अमरीकी राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद की दस्तावेजों को फिर से। उनकी बात करते हुए 'ल'एक्सप्रेसो' पत्रिका लिखती है: "दूसरे शब्दों में, संयुक्त राज्य अमरीका गृहयुद्ध भड़काने और दक्षिणपंथी अधिनायकत्व स्थापित करने का प्रयास कर रहा था।"

## तीन "मकार"

पचास के दशक में इटली में संयुक्त राज्य अमरीका की राजदूत और 'टाइम' पत्रिका के स्वामी की पत्नी क्लेअर बूथ लूस ने एक बार अमरीकी पत्रकार साइरस मूल्ल्सबर्गर से कहा था, "शायद मुसोलिनी के निर पर जेफरसन का बिग चिपका दिया जाना चाहिए था, न?"







प्रभावितों के साथ मित्रि करने की अनुपम सम्भावना प्रदान की है। माफिया की कार्यशैली तो स्वयं मध्यम राज्य अमरीका में भी प्रमाणित हो चुकी है। जहाँ उसने दम्प्य नियंत्रित व्यवसाय का समर्थन अनेक मिडीकेट बना लिया है। जब द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान अमरीकी गुप्तचरों तथा सेना को इतालवियों के समर्थन की जरूरत पड़ी, तो इसके लिए कोरा मोस्त्रा को ही चुना गया। उसके सरगनों में से एक, मान्वातोरे सूचीआनो को, जो सकी लूचीआनो (सुग-किस्मत सूचीआनो) के नाम से अधिक सुज्ञात है, जेल की कोठरी से एकदम एक आलीशान होटल में पहुँचा दिया गया। लूचीआनो के सूत्रों को मिमिली में माफीओजियो (माफिया-सदस्यों) के साथ संपर्क कायम करना सुगम बनाना था। मिमिली में अमरीकी सेनाओं के उतरने के पहले उन्हें “गुप्त उपवादी गुटों, उदाहरण के लिए, माफिया, के नेताओं के साथ संपर्क तथा संचार” स्थापित करने और उन्हें “हर सम्भव सहायता” देने का आदेश दिया गया था।\*

इस तरह से माफिया और अमरीकी गुप्तचरों ने अपने भावी निरंतर बढ़ते सहयोग की नींव डाली, जो राजनीतिक हत्याओं और भड़कावे की कार्यवाहियों जैसे ध्वसात्मक कार्यों के लिए अपरिहार्य था।

मैसन संगठन सी० आई० ए० के लिए इसलिए

\* Gaia Servadio, *Mafioso. A History of Mafia from its Origins to the Present Day*. Secket and Warburg. London. 1976, p. 82.







गणनप्रथादियों की तरफ से भाग लिया था और मा० मै० का० तथा सी० आई० ए० ने आरम्भ में उन पर दाम्पत्य भुक्ताव रगुने का मदेह किया था। बाद में कोर्वो ने अपने सम्मरणों में लिखा "कैसी भारी गनती थी। जरा यही देखिये कि शीतयुद्ध के समय पच्चीआदी ने इतालवी मजाम्म मेनाओ को किस तरह से पुनर्गठित किया।" वफादार अमरीकी एजेंट ने इटली के प्रतिरक्षा मंत्री की हैमियत से अपने मालिकों की ईमानदारी से मच्ची मेवा की। हैमिम्बे ने अपने 'नदी के पार, पेड़ों की छाह में' उपन्यास में इस "व्यद्वेष" सैन्यवादी-मंत्री के बारे में मर्मभेदी कटाक्ष के साथ लिखा है। आगे चलकर पच्चीआदी इटली में अपना अधिनायकत्व स्थापित पच्चीआदी इटली में अपना अधिनायकत्व स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील फाशिस्त-समर्थक शक्तियों के आदर्श बन गये। कोर्वो ने सिसिलियाई वकील सीदोना को भी अपने एजेंटों के जाल में शामिल किया। था, जो बाद में एक बैकर बन गये और 'वड्यंत्रों' का संगठन करने में सी० आई० ए० के सहयोगी और पी-२ लॉज के वित्तदाता बने।

अमरीकी यह बहुत अच्छी तरह से जानते थे कि इस तरह के एजेंटों को किस तरह इस्तेमाल करना चाहिए। सा० से० का० के कर्णधारों द्वारा अनुमोदित अपनी योजना के बारे में मैक्स कोर्वो ने कहा था कि "यह केवल गुप्तचर्या की ही नहीं, बल्कि मनोवैज्ञानिक युद्ध की भी योजना थी।" \* युद्ध किसके खिलाफ?







अमरीकी राजदूत थीमनी लूस की बड़े उत्साह के साथ मराहना करने हैं "कनेअर वूथ लूस अपने दूता-  
 राग में मवानिन सी० आई० ए० मक्खियाओं में गहरी  
 दिलचस्पी - और हिम्मा - सेनी थी अन्यत्र आकर्षक,  
 बुद्धिमान और मुक्ति, आत्मविश्वास और शानीदना  
 में परिपूर्ण, तेज और दृढमन्त्र, किमी को भी इसके  
 बारे में मदेह न रहने देनेवाली कि प्रमुख कौन है,  
 थीमनी लूस जोरदार और प्रभावी राजदूतों की  
 मेरी सूची में बहुत ऊँचे स्थान पर हैं।" और होना  
 भी क्या! आखिर थीमनी लूस तो मुमोलिनी के  
 सिर पर जैकरमन का बिग चप्पा करना चाहती थी।  
 राजदूतों के अधिकारों का स्पष्ट उल्लंघन करते हुए  
 वह मनमाने ढंग में आदेशित करती थी कि इनालवी  
 सरकार में किसे शामिल किया जाना चाहिए और  
 किसका शामिल होना रोका जाना चाहिए। वामपंथी  
 ईसाई जनवादी जोवान्नी शोकी के इटली का राष्ट्रपति  
 चुने जाने का विरोध इसकी एक ज्वलंत मिसाल है।\*

## मात्तेई का दूर किया जाना

जोवान्नी शोकी सोवियत संघ के साथ राजनीतिक तथा  
 आर्थिक संबंधों के सामान्यीकरण के पक्ष में थे। वह

---

\* १९८२ में राष्ट्रपति रैगन ने थीमनी लूस को अपनी नि-  
 सदस्यीय गुप्तचरों मक्खिया परिवीक्षण परिषद की सदस्य मनोनीत  
 किया।







पूर्ण था कि जितना अंतर्राष्ट्रीय मतभेदों को बढ़ाना और हथियारों की होड़ को नेत्र करना। तेल इजारेदारिया अपने अतिनामों को युद्ध उद्योगों में महत्व सगानी है। वे ह्याइट हाउस पर अंतर्राष्ट्रीय मामलों में अपनी नीति धोपने के लिए भी जोरदार प्रयास करती है। इसलिए हममें अचरज की कोई बात नहीं कि मोवियन मप के विरुद्ध राष्ट्रपति कार्टर और ऐसे ही राष्ट्रपति रैगन द्वारा भी लगाये गये प्रतिबंधों में तेलवेधन उपकरण और इलेक्ट्रानिकी उपकरण भी शामिल हैं। बुरी तरह से चढ़ाये हुए दामों पर तेल की बिक्री से अनिलाभ तेल इजारेदारियों के लिए इतने ही महत्वपूर्ण है कि जितने फौजी ठेको से प्राप्त लाभ। इसके अलावा उनका मोवियनविरोध उन्हें पश्चिमी यूरोपीय बर्जुआजी के कम्युनिस्टविरोधी प्रतिवर्तों का लाभ उठाने और ईंधन तथा सैनिक सामग्री के लिए अतिशय दाम वमूल करके अपने ही साभेदारों को ठगने में समर्थ बना देता है। तनाव-सौधित्य का विरोध करते हुए अमरीकी अल्पतम के नेता एक पत्थर से दो शिकार करना चाहते हैं। वे अपने विचार-धारात्मक विरोधियों को हानि पहुंचाने के उतने ही आकांक्षी है कि जितने अपने "मित्रों" को, क्योंकि "मित्र" का मतलब "प्रतिद्वंद्वी" भी है। और जब बात अरबो-स्रबो डॉलरों की हो, तो उसके लिए सभी कुछ बाजिब है।

जिस सक्रिया का अंत २७ अक्तूबर, १९६२ को एनरोको मास्तेई के निजी विमान की दुर्घटना में हुआ,







गणतन्त्र इस ईश्वर सम्पन्न को मान्य बनाने" (म  
विशालवस्त्र के दृष्टान्तद्वारा)। को गिरा देने के  
लिए विद्वत् कर्म के बलसे सभी कुछ किया।

मानव के मनु के राज्य का पता नमाने  
प्रत्यक्ष करनेवाले नारा स्वयं इस विमान-दुर्घटना  
बर्गों बाद भी लक्ष्य होने रहे। उदाहरण के लिए  
मिमिनिदाई पत्रकार मातुरों के मातुरों ने अपने प्रा  
गवाये जिन्होंने सीवान को अपनी घातक उदा  
के पढ़ने मिमिनी से मानेई के अतिरिक्त दिनों के बा  
से सुचना लक्ष्य की थी। मिमिनी के महाअभिनीय  
स्वामीओने मारे गये जो मानेई की हत्या और  
मातुरों के गायब होने के बारे में अवश्य ही बहुत  
कुछ जानने रहे होते। इसी प्रकार न्यायाधीश प्रावेम्ब  
कोवो भी मारे गये जो स्कानीओने की हत्या की  
जांच करने के लिए जेनोवा से सिमिनी आये थे  
ये सभी अपराध सी० आई० ए० तीन "मकार" और  
इटली की गुप्तचर्या सेवाओं के समुक्त कार्य की दौलत  
ही संभव हुए थे।

## इसावा-तंत्र

इटली के काताइजारो नगर के  
गुप्तचर्या एजेन्टों द्वारा १९९९  
में कराये गये विस्फोटों के बारे  
हुई। सीद के भूतपूर्व प्रधान,







गर्दीय इव ईधन ममात्र को "मान बानों" (मान विज्ञाननम मेव इवागंदागियों) को रिखावने देने के लिए दिवस करने के बान्ने सभी कुछ विमा।

मानेई की मृत्यु के रहस्य का पता लगाने का प्रयत्न करनेवाले लोग स्वयं इस विमान-दुर्घटना के बारे में बाद भी गायब होने रहे। उदाहरण के लिए मिमिनिषाई प्रकार माउरो के माउरो ने अपने प्राय गवाये, जिन्होंने मौतान को अपनी घातक उड़ान के पहले मिमिनी में मानेई के अन्तिम दिनों के बारे में सूचना एकत्र की थी। मिमिनी के महाअभिप्रेतक स्कालीओने मारे गये, जो मानेई की हत्या और के माउरो के गायब होने के बारे में अवश्य ही बहुत कुछ जानने रहे होंगे। इसी प्रकार न्यायाधीश फाचेस्को कोको भी मारे गये, जो स्कालीओने की हत्या की जांच करने के लिए जेनोवा से सिमिनी आये थे। ये सभी अपराध सी० आई० ए०, तीन "मकार" और इटली की गुप्तचर्या सेवाओं के समुक्त कार्य की बदौलत ही संभव हुए थे।







सन्देशों के द्वारा समाज को "सात बड़ों" (सप्त विष्णुसदृश नव इन्द्रांशुसिद्धि) को गिराने के लिए विचार करने के काम में अभी कुछ दिना।

मानव की मृत्यु के राज्य का पता लगाने का प्रयत्न करनेवाले लोग स्वयं इस विमान-दुर्घटना के कारणों का भी गायब होने रहे। उदाहरण के लिए मिमिनिचार्ड वरकर माउरो के माउरो ने अपने प्रान्त गवाड़े विन्डोने मौलान को अपनी घातक उड़ान के लक्ष्य मिमिनी में मानेई के अन्तिम दिनों के बारे में सूचना एकत्र की थी। मिमिनी के महाअभियोग स्वामीओं ने मारे गये जो मानेई की हत्या और के माउरो के गायब होने के बारे में अवश्य ही बहुत कुछ जानने रहे होये। इसी प्रकार न्यायाधीश फावेस्को कोको भी मारे गये, जो स्कान्नीओने की हत्या को जांच करने के लिए जेनोवा से सिमिनी आये थे। ये सभी अपराध सी० आई० ए०, तीन "मकार" और इटली की गुप्तचर्या सेवाओं के संयुक्त कार्य की बदौलत ही संभव हुए थे।

## उकसावा-तंत्र

१९७६ में दक्षिण इटली के काताडजारो नगर में इतालवी तथा यूनानी गुप्तचर्या एजेंसी द्वारा १९६६ में रोम और मीलान में कराये गये विस्फोटों के बारे में सूचनाएँ शुरू हुईं। सीद के भूतपूर्व प्रधान,



आंदोलन के नेता प्लेटिस के साथ संपर्क स्थापित किये। (यह "आंदोलन" तानाशाह मेताक्मास के विचारों से निर्देशित होता था, जिन्होंने ४ अगस्त, १९३६ को यूनानी संसद को भग कर दिया था और राजनीतिक दलों पर पाबंदी लगा दी थी) अग्रेज, १९६६ में राज्ञी ने पादुआ में एक गुप्त सम्मेलन में भाग लिया, जिसमें समस्त उत्तरी तथा मध्य इटली में उकसावों की कार्रवाइयाँ करने का निश्चय किया गया था। इन उकसावों को दो बट्टर फाशिस्टों फ्रांको फेदा और जोवान्नी बेनूरा के पादुआ स्थित गुट द्वारा संगठित किया जाना था। फेदा 'आर्य' विचारों के प्रचारक और प्रकाशनगृह का प्रधान था।

पादुआ सम्मेलन के बाद फेदा गुट काम में लग गया—नौ महीने की अवधि के भीतर उसने २२ हत्याओं और अग्नि-बमबादों का आयोजन किया। इन सभी कार्रवाइयों की परिणति १२ दिसंबर, १९६६ को मीलान के कृषि बैंक में एक अवरदस्त विस्फोट में हुई, जिसमें १६ लोग मारे गये और ८० घायल हुए। इसी के साथ-साथ रोम में भी विस्फोट हुए।

अपने एजेंट जेड (जानेतीनी) के जरिए मीड (और, निस्संदेह, सुपर-मीड) को प्रस्तावित अपराधों के बारे में मानूस था मगर उसने उन्हें रोकने के लिए कुछ भी नहीं किया। इन आतंकवादी कार्रवाइयों के कितने ही संगठनकर्ताओं—बट्टर फाशिस्टों की सीमा पार करने में सहायता की गयी। उनके बजाय अराजकतावादियों को बलि के बकरे बनाया



है किन्तु क्या हमें इसका जवाब देना है? "

उत्तर : हाँ, जहाँ तक है। सामग्री विचार भी इसके  
के अन्तर्गत रहे। हमें लगता है कि हमें अपने अन्तर्गत सामग्री  
के अन्तर्गत, अन्तर्गत, अन्तर्गत की विचारों को सामने लाने के  
अन्तर्गत है।

१९९१ के दशक की शुरुआत में फ्रांसिस फर्नान्डो  
सर्वेक्षण के अन्तर्गत शुरुआत में ही हमारे सामने है  
किन्तु किन्तु हमें लगता है कि हमें अपने अन्तर्गत सामग्री  
अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत है। उनके विचारों  
सामग्री फ्रांसिस फर्नान्डो अन्तर्गत है, किन्तु  
नयी शुरुआत के अन्तर्गत विचारों के अन्तर्गत  
है उनको अन्तर्गत की (कोई को यह कोविने)।  
अन्तर्गत न किन्तु अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत  
है अन्तर्गत करने की अन्तर्गत का सुझाव दिया।  
अन्तर्गत फ्रांसिस के "मान स्वयं" के अन्तर्गत  
में एक है। उनके सुझाव पर अन्तर्गत नूतनीय नानक  
नानक फ्रांसिस अन्तर्गत के अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत  
अन्तर्गत फ्रांसिस के अन्तर्गत में नानक उठाने के लिए  
अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत को अन्तर्गत भेजा था। अन्तर्गत  
होने का दिशावा करते हुए फ्रांसिस किन्तु ही अन्तर्गत  
अन्तर्गत में जा अन्तर्गत। उनका कार्यभार इन अन्तर्गत  
अन्तर्गत को ऐसी कार्यवाही करने के लिए उकसाना  
था, किन्तु अन्तर्गत अन्तर्गत के अन्तर्गत मड़ा जा सके।  
अन्तर्गत स्वयं भी अन्तर्गत गये, जहाँ उन्होंने चार अन्तर्गत



के नमूने पर होनेवाले विद्रोहों के अविराम सिलसिले में अपने दग का अनुठा पड़्यत्र है।

१९७३ के वसंत की बात है। मीलान में पुलिस आयुक्त कालाब्रेस्की के सम्मान में निर्मित स्मारक का अनावरण समारोह हो रहा था। समारोह में भाग लेने के लिए इटली के प्रधान मंत्री मारीआनो रमोर विशेष रूप से आये थे। समारोह के दौरान भीड़ में एक दहियल आदमी ने "पीनेल्ली जिदाबाद" का नारा लगाते हुए एक हथगोला फेंक दिया। विस्फोट से चार लोग मारे गये, बीसियों घायल हुए और भगदड़ मच गयी। लेकिन रमोर को कोई हानि नहीं पहुँची और अपराधी को, पड़्यत्रकारियों की आशा के विपरीत, मौके पर ही पकड़ लिया गया। पूछ-ताछ के दौरान वह यही दुहराता रहा कि वह पीनेल्ली की मौत का बदला लेना चाहता था। मगर असल में रमोर की हत्या को रोड़ा देई बेती दल द्वारा आयोजित सत्ता-परिवर्तन के समारंभ का सबेरा होता था।

हथगोला फेंकनेवाला बेर्नोली महज एक मोहरा था। वह एक सामान्य अपराधी था जिसका राजनीति में कोई दूर का भी संबंध नहीं था। इसके लिए कि उसका उद्देश्य विश्वमनीय प्रतीत हो सके उसे "तयूरबा पाने" के लिए एक अराजकतावादी संगठन में शामिल होने का अवसर दिया गया था। इसके बाद बेर्नोली को जिसमें पकड़ जाते और अदालत में साथे जाने का सबरा था इसगाने भेज दिया।



गया। उनमें से एक — कान्नेडा — को अपराधी घोषित कर दिया गया। एक और अराधकनावादी पीनेप्पी मीनान पुविम द्वारा पूछ-ताछ के दौरान मर गया। पीनेप्पी में पूछ-ताछ करनेवाले पुविम आयुक्त काना-वेडी की आत्मकथादियों ने हत्या कर दी।

जाघ के दौरान महत्वपूर्ण माध्यम नष्ट कर दिया गया। जब मुख्य आधिकारिक विवरण अनर्कमण मिड हुआ, तो गुप्तचर्या सेवाओं ने दूसरा विवरण गड़ दिया। कई वर्ष बाद जाकर ही इस जघन्य अपराध के वास्तविक कर्ताओं फेडा और बेनूरा को कठपुतले में लाया गया। लेकिन कानाद्वारो में मुकदमे का अंत अपराधियों की शर्मनाक दोषमुक्ति में हुआ।

इस प्रकार इटली में वर्तमान आतंकवाद के मूर्तों की खोज हमें आंतरिक तथा अंतर्राष्ट्रीय प्रतिक्रिया के अलवरदारों, सर्वोपरि नाटो के मनोवैज्ञानिक युद्ध-भिकरणों, पर ले जाती है। वे व्यवस्थाभंगक शक्तियों के लिए दंडमुक्ति मुनिश्चित करने का प्रयास कर रहे हैं, ताकि तीन “मकारो” की सहायता से पड़्यथो और आतंकवाद के सिलसिले को जारी रख सके।

**रोजा देई बेती**

रोजा देई बेती (‘हवाओ का गुलाब’) “फाशिस्त पलीता, वामपंथी बहाना, दक्षिणपंथी सत्ता-परिवर्तन”







गया जहाँ एक साथ में अधिक बड़ा एक कीम्यून\* में गया। जब उपयुक्त समय आया तो उन्हें इतनी सामान्य माकर मीनान में जाया गया और हाथ में एक हथगोला दे दिया गया। उबमाका फनीमून हुआ - दक्षिणपंथी प्रेम ने कम्युनिस्टों के खिलाफ जबरदस्त होशियारी बहा कर दिया। लेकिन हथ्या-प्रणाम की विफलता के कारण रोडा देई बेनी गुट मना-परिवर्तन को कार्यरत न दे सका।

पड़्यत्रकारियों द्वारा तैयार की गयी दम्नावेजों में कहा गया था कि कम्योर की मृत्यु वह घमाका साबित होगी, जो "मनाम्न सेनाओं को सीधे राष्ट्रीय मस्याओं के रक्षार्थ सामने आने के लिए मजबूर कर देगा"। न्यायाधीश ताबूरीनो के कथनानुसार रोडा सत्ता-परिवर्तन के दौरान "२००० राजनीतिक और सैनिक हस्तियों का शारीरिक विलोपन" हो सकता था।

पड़्यत्र में कई शीर्षस्थ सेनाधिकारी शामिल थे। इतालवी प्रेम के अनुसार नाटो सुरक्षा सेवा के प्रधान जनरल जानसन पड़्यत्र से प्रत्यक्षत जुड़े हुए थे। पड़्यत्र की तफसीली पर पी-२ सॉज के सदस्य, बैकर सीदोना के घर पर बातचीत की गयी थी। जैसे कि सीदोना ने बाद में स्वयं स्वीकार किया, वह अमरीकी बैकरो\*\* के मित्र और सी० आई० ए० के एजेंट थे।

\* इसराएली सहकारी फार्म और उसकी इस्ती। - ४०

\*\* आनाय कनेली और डेविड कनेली से है। दोनों ही अमरीका के वित्त मंत्री रह चुके थे। डेविड कनेली राष्ट्रपति रीगन के आंतरिक हमको से संबद्ध है।







और उनके द्वारा विधानाम में अमरीकी मुद्रिमन्त्री की निज्ञा के कारण नष्ट करने थे। सी० आई० ए० के चारम दक्षिणायी मण्डल ओ० ए० एम० के माय, त्रिभुजों के गोल के विरुद्ध जितने ही पक्षों में गिरफ्त थी, मन्त्र कोई अज्ञान नहीं है। यह बाद दिखाना हो चाक्री रहेगा कि दे गोल की हत्या के कोई ३० ( ' ) प्रमाण दिये गये थे। अगर वह इनमें सब पाये, तो अज्ञान फामोमी मुरझा मेवाओं के प्रमाणों की बदीनत, त्रिभुजों उन्होंने पुनर्मर्जित किया था, और अज्ञान शुद्ध संयोग में ही।

भूतपूर्व सी० आई० ए० कर्मी गोमालेस-माता ने अपनी पुस्तक ' दुनिया के असली मालिक ' में दे गोल के विरुद्ध सी० आई० ए० के प्रच्छन्न कार्यों का वर्णन किया है। सी० आई० ए० ने मई, १९६८ में पेरिस में छात्रों के जनरल दे गोल के विरुद्ध आंदोलन का किस प्रकार उपयोग किया, इसका विवरण विशेषकर रोचक है। एजेन्ट ' राजहस ' ( स्वयं गोमालेस-माता ही ) को उपपत्ती छात्र मंडलियों में घुसपैठ करने का कार्यभार सौंपा गया था। इसके बारे में उन्हें पेरिस में स्वयं जनरल वाल्टर्स ने निर्देश दिये थे और इस बैठक में अमरीकी थमिक मण्डल ए० एफ० एल० - सी० आई० ओ० के मोलीजानी नामक एक प्रतिनिधि ने भी भाग लिया था।

यह सचमुच हैरत की बात है कि अमरीकी मजदूर सघों कर्ता-धर्ता यूरोप में ध्वंसात्मक कार्रवाइयों में कितना भाग लेते हैं। उनके प्रतिनिधि अरविग ब्राउन







आई० ए० तथा अमरीकी सैन्य गुप्तचरों मस्जिदों के समन्वयक टैहम ने राजहस को उनका कार्यभार सौंप करके हटा दिया था कि "नध्य वामपंथियों द्वारा मस्जिदों के हथियारों को मुगल बनाना नहीं, बल्कि प्रदर्शनकारियों और व्यवस्था की शक्तियों के बीच मुठभेड़ करवाकर और अमरीक को प्रोत्साहन देकर फाम की 'मूक बहुमस्या' को ऐसी कार्यवाई करने के लिए उकसाना है, जो दे गोल को अपनी नीति बदलने, पूर्वी देशों में विरत होने और समुक्त राज्य अमरीका के साथ मैत्री-संबंधों में जुड़े यूरोप के आचन में लौटने को विवश कर देगी। दामे बाबू के दबाव को इस्तेमाल करके दे गोल को इस्तीफा देने और ऐसी सरकार के वास्ते रास्ता छोड़ने के लिए भी मजबूर किया जा सकता है, जिसके साथ सहमति ज्यादा आसान होगी हमें बिद्रोही नेताओं का विश्वासपात्र बनना होगा, ताकि उनकी योजनाओं को जान सकें और उन्हें अपने हित में प्रभावित कर सकें।

"प्रारंभिक अवस्थाओं में यह महत्वपूर्ण है कि हमारे मित्र, जो आंदोलनकारी गुटों में शामिल हो गये हैं, प्रदर्शनकारियों को यथासंभव अधिक टकराव की स्थितियाँ पैदा करने के लिए प्रोत्साहित करें।"

राजहस को सोरबोन (पेरिस विश्वविद्यालय) में पहुँचा दिया गया और वह ओडियन थियेटर में स्थित लडाकू वामपंथी गोशियो\* के मुख्यालय







कृष्णगी पर वे मभी जाने वागिंगटन को बटून  
 विनिग कर रहो थी। यही कारण है कि स्पेन में  
 वागिंगन फवात्री आदोवन और तानाशाही शासन में  
 नवश्रीवन का मषार करने के उद्देश्य में उमी पुरानी  
 'तनाव की रणनीति' का प्रयोग किया गया। इसके  
 लिए इटली की ही भाति यहा भी एक नाव हीआ  
 यडा करना, आतकवाद की समस्या पैदा करना जरूरी  
 था। अमरीकी गुप्तचर्या और स्पेनी सुरक्षा सेवाओं  
 ने इस कार्य के लिए पार्थक्यवादी प्रवृत्तियों का उपयोग  
 करने का निश्चय किया।

पार्थक्यवाद पर, अनेक यूरोपीय देशों में अपनी  
 विशिष्टताओं को बनाये रखनेवाले सजातीय समूहों  
 पर दाव लगाना "साल और काले" आतकवाद के  
 खेल की तरह ही सी० आई० ए० का एक सामान्य  
 तरीका बन गया है। "पार्थक्यवादी तुरप" का नि-  
 सिस्ती और सार्दोनीआ में भी प्रयोग किया गया था।  
 १९७८ के फ़ासीसी ससदीय चुनावों की पूर्ववेला में  
 समाजवादी नेता मिशेल रोक़ार ने कहा था कि सी०  
 आई० ए० ने वामपक्ष के विजयी होने की सूरत में  
 फ़ास के अस्थिरीकरण की एक योजना तैयार की है।  
 इस योजना के अनुसार फ़ासीसी वामपक्ष के विरुद्ध  
 विभिन्न सजातीय—कोर्सिकाई, ब्रेटन, एलसास-लोरी-  
 नी—आतंकवादी गुटों का उपयोग किया जाना था।  
 और मचमुच, चुनावों के ठीक पहले उनकी सरपर-  
 ॥ तेजी आ गयी। १९७८ के आम चुनावों  
 ययों की ही जीत हुई, मगर १९८१ में







करने का दरपत्र रखा जा रहा था। इन "राजनयज्जो" में से एक ने अपने बरिष्ठ अधिकारियों को इसी सूचना दी और ज्ञेय कि गोसानेस-माता अपनी पुस्तक में लिखने है "यह मानने हुए कि कार्ररो ब्लाको का हटाया जाना स्पेन तथा पुर्वगान में अपनी रजनीति के प्रयोग में सहायक रहेगा", उस "राजनयज्ज" ने "हत्या-प्रयाम की सफलता मुनिदिचन करने के लिए सभी कुछ" करने को कहा गया। लेकिन इसमें महत्वपूर्ण बात यह थी कि सभी कुछ "पार्थक्यवादियों द्वारा की गयी आतकवादी कार्रवाई" ही प्रतीत हो। आतकवादियों ने उस सड़क के नीचे एक सुरंग खोद डाली, जिसमें कार्ररो ब्लाको आम तौर पर गिरजाघर आया करते थे। १६ दिसंबर, १९७३ को उन्होंने सुरंग को विस्फोटको से भर दिया। "राजनयज्जो" के एजेंटो ने चोरी से सुरंग में प्रवेश किया और ("ताकि पूर्ण सफलता मिले") उनमें इलेक्ट्रानी पलीते लगी दो टैकनाजी सुरंगों और रख दी। अगली सुबह "बास्क आतकवादियों" और स्पेन के साथ मैत्री संबंध रखनेवाले एक देश के "राजनयज्जो" ने मिलकर स्पेनी प्रधान मंत्री और उनके अलावा दो पुलिसवालों को विस्फोट द्वारा स्वर्ग पहुँचा दिया। भूतपूर्व सी० आई० ए० एजेंट गोसानेस-माता ने ब्लाको की हत्या का यही विवरण दिया है। उन्होंने "राजनयज्जो" के नाम भी दिये हैं—अमरीकी दूतावास के सुरक्षा अधिकारी वेन तथा स्पेन में अमरीकी गुप्तचर्या-प्रमुख रांबर्ट। एलैम्बेडर हेग को, जो उस समय सहायक विदेश



मरी थे, सूचित कर दिया गया था कि हत्या किस दिन होनेवाली है। \*

बाद में स्पेन में शीर्षस्थ सैनिक न्यायाधीशों और वकीलों की हत्याओं और शासक दलों के कार्यकर्ताओं के अपहरणों की खबरें आयीं। १९६१ में स्पेनी बोरगेज़े-अनोनीओ तेहेरो मोलीना—ने अपने सह-अपराधियों के साथ आंतरिक अस्थिरता और आतंकवादी सतरे के आगे सरकार की “शक्तिहीनता” को कारण बताकर स्पेनी समद-भवन को कब्ज़े में ले लिया। विद्रोह को तो कुचल दिया गया, मगर अमरीकी सरकार स्पेनी सरकार को इस सफलता पर बधाई देना “भूल” गयी—श्रव्यक्षत, “शात अमरीकियों” की साक्षनिक भवज्जना के कारण ही।

## लाल ब्रिगेडों के अजीब पहलू

इटली में तथाकथित लाल ब्रिगेडों की मरगर्मियों में आठवें दशक के आरम्भ में छामकर तेज़ी आयी। उनकी “चोट करो और भाग जाओ” की कार्यनीति ने विकसित होकर “अराजकतापूर्ण आतंकवाद” का रूप में लिया। गहरी अवस्थाओं में यौद्धिक कार्य-कलाप को प्रचारित किया जाने लगा। हथियारों की दूरानों पर छापी और फिरीनी के लिए अपहरणों

\* Gonzales Mata L. *Les vrais maîtres du Monde* Paris, 1979, pp 111-116



[illegible]







करने का पहला कदम उठाया गया था। इन "राजनयज्ञों" में से एक में आने वाले वरिष्ठ अधिकारियों को उनकी सुरक्षा की नींव देने के लिए गोमालेस-माता अपनी पुस्तक में लिखते हैं "यह मानने शुरू कि कार्मेन ब्लाको का इलाका जल्दा मोत गया दुर्गमत्व में अपनी रचनाओं के उपयोग में सहायक रहेगा" उस "राजनयज्ञ" में "हत्या-प्रयास की सफलता सुनिश्चित करने के लिए सभी कुछ" करने को कहा गया। लेकिन इसमें महत्वपूर्ण बात यह थी कि सभी कुछ "पार्लियामेंटों द्वारा की गयी आनकवादी कार्रवाई" को प्रतीत हो। आनक-वादियों ने उस मंडक के नीचे एक सुरंग खोद डाली, जिसमें कार्मेनो ब्लाको आम तौर पर फिरजाघर आया करते थे। १६ दिसंबर, १९७३ को उन्होंने सुरंग को विस्फोटकों से भर दिया। "राजनयज्ञों" के एजेंटों ने चोरी से सुरंग में प्रवेश किया और ("ताकि पूर्ण सफलता मिले") उनमें इलेक्ट्रानों पसीते लगी दो टैंकवासी सुरंगों और रख दी। अगली सुबह "बास्क आनक-वादियों" और स्पेन के साथ मैत्री संबंध रखनेवाले एक देश के "राजनयज्ञों" ने मिलकर स्पेनी प्रधान मंत्री और उनके अलावा दो पुलिसवालों को विस्फोट द्वारा स्वर्ग पहुंचा दिया। भूतपूर्व सी० आई० ए० एजेंट गोमालेस-माता ने ब्लाको की हत्या का यही विवरण दिया है। उन्होंने "राजनयज्ञों" के नाम भी दिये हैं—अमरीकी इतावास के सुरक्षा अधिकारी वेन तथा स्पेन में अमरीकी गुप्तचर्या-प्रमुख रॉबर्ट। एलैम्बेडर हेन को, जो उस समय सहायक विदेश











तथाकथित अराजकतापूर्ण (अधा) आतङ्कवाद सी० आई० ए० द्वारा अपने मित्र नाटो-देशों की विभिन्न ममान सेवाओं के सहयोग से निरूपित कार्यनीति है जिसका उपयोग अधिकांशतः सरकारों को अभ्यस्य करने और सबद्ध आबादी से एक मजबूत पुलिम राज्य की स्थापना को स्वीकार करवाने के लिए अभीष्ट कार्यक्रमों के एक मुख्य तत्व की तरह किया जाना चाहिए।

चरम सामर्थ्यी नेताओं के अमरीकियों और दक्षिण पक्ष के साथ संपर्कों में कोई असामान्य बात नहीं है। पहले फासिस्त और बाद में लाल विरोधों के एक नेता रेनातो बूचीओ पेरिस में अपने समय नेप्ली के साथ-साथ रहे थे। उन्हें अनेक बार गिरफ्तार किया गया पर हर बार वह जेलों में बड़ी आसानी से निकल भागते थे, जो है तो अजीब मगर उनके बहुत से मित्रों के लिए भी साक्ष्यिक है। लेकिन जब उन्हें पीडा नगर के जेलमानों में डाला गया तो एक अद्भुत संयोग में उन्हें किसी रॉनल्ड स्टार्क नामक अमरीकी के साथ एक ही कोठरी में रखा गया। स्टार्क ने बूचीओ को मध्य-शुद्ध में अपने मित्रों के पते दिये जो हृदयधारों की त्वरीद में उनकी सहायता कर सके थे। स्टार्क ने बूचीओ को यह भी सिखनाया कि विस्फोटकों को किस तरह इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

स्टार्क को जल्दी ही रिहा कर दिया गया यद्यपि उन पर बितने ही आरोप लगाये गये थे। यह ज्ञात है कि वह मजबूत राज्य अमरीका में और बाद में बेन्जियम में दक्षिणपंथी माइक हथ्य बनाने



थे। उनके साथ तुर्की में गये बड़े हेमेटन मम्कारों के साथ मध्य थे। उनका बीचो-बीच में एक रैप (पनु-कार्य) था। बड़ा 'मादक' दुष्प्रभाव के रवि' दिमोरी भीरी बड़ा करने थे। मिन्हाने गाने प्रयोगों में एम० एम० री० का गुणगान किया था। मोरी एम० एम० री० का अपने शिष्टी अनुपातियों पर परीक्षण करना समझ करने थे। बाद में यह प्रकट हुआ कि ये प्रयोग एक मी० आई० ए० कार्यक्रम के अंग थे, जिसके अंतर्गत "मानव आधरण बढ़ाने", मनुष्य की मनोवृत्ति को विस्तृत करने और उसे अपने हाथों का अधिकार बनाने में समर्थ औद्योगिक कर्मियों को विकसित किया जाना था।

जब ११ अक्टूबर, १९७६ को (इटली में आन्दो मोरी को हत्या के बाद) एक बार फिर—इस मर्त्य बोम्बोन्ग्रा में—स्टार्क को जेल से रिहा किया गया, तो इसलिए कि न्यायाधीशों का कहना था कि उनपर मुकदमा चलाया ही नहीं जा सकता, क्योंकि अभियुक्त "सी० आई० ए० एजेंट है और वह इसी हैमियन में काम कर रहा था" (!)।

तो यह रहा जनरल वैंस्टमोरलैंड के मुठका में "चरम वामपंथी संगठनों" के अमेरिकी गुप्तचरों द्वारा उपयोग किये जाने के प्रकरण का जिंदा सबूत।

क्या यह अचरज की बात है कि नाल बिगेडो और सर्वहारा सघाम के मुछौटे पहनकर पूजीवादी :। को "उलटनेवालों" ने प्रगति के घोर शत्रु- :। होने की अपनी असलियत को उघाड़ दिया है! । फ़लाणियों के नेता, नाटो की गुप्तचर्या सेवाओं



की सहायता से स्थापित नवफाशिस्त काले इंटरनेशनल के सदस्य तोलो ब्लास्को ने इतालवी पत्रिका 'एऊरोपीओ' के सवाददाता से बातें करते हुए कहा था "हम एक आश्चर्यजनक परिघटना के प्रत्यक्षदर्शी हैं। हमने दिखला दिया है कि माओ के विचार हिटलर के विचारों के निकट हैं " "स्वेन में माल त्रिगेडो में कितने ही लोग चीन-ममर्थक रक्तान के हैं। हम उनमें कहते हैं 'स्वागतम्'।" \*

दक्षिणपक्ष को वामपक्षी आवरण ओढ़ने से कोई आपत्ति नहीं। मैग्ली के मित्रातकार इसकी उपयोगिता को बहुत पहले ही खोज चुके हैं - वामपक्षी आतंकवादी उकसावों के लिए बढ़िया आवरण पेन करते हैं, फिर चाहे वे अपने वामपक्षी विचारों के अनुसार काम कर रहे हों, अथवा मरीदे हुए प्रोलेटारिज्म हों। इस आवरण का क्या भी राजनीतिक अपराध करने के लिए उपयोग किया जा सकता है। आल्दो मोरो की हत्या इसकी एक मिशाल है।

"मैं संयुक्त राज्य अमरीका में  
सर्वथा कोई सहानुभूति नहीं पाता"

बैनेडी ब्युओ की हत्याओं की ही भांति इटली की ईमाई-ओबतात्रिक पार्टी के अध्यक्ष आल्दो मोरो की

\* L'Europeo, 17 XI 1978, 18.I.1979



मृत्यु बीगनी गरी के उमरगाँ का एक गभीरतम राज-  
 नीतिक अंगण है। बादरी पटनाक्रम गर्वजन है। १९७८  
 में मार्थ के मध्य में मान त्रिगेडों ने रोम में बीगनी  
 कानी ( कानी मार्ग ) पर आये मोरो की बार को  
 रोक दिया। उनके अंगणको का आगानी में माना  
 कर दिया गया और मोरो को तयारविन " जन-  
 कारागार " में हाथ दिया गया। ६ मई को मान  
 त्रिगेडों में एक टेपीफोन-मदेश प्राप्त होने के बाद  
 मोरो की मान रात्रधानी के केंद्र में, ईमाई-लोक-  
 ताविक पार्टी और कम्युनिस्ट पार्टी के मुख्यालयों के अग्र-  
 बीच, पायी गयी। मान का इस तरह से पाया जाना  
 अपने ही वृत्त का एक प्रतीक था - मोरो को शामक  
 ईमाई-लोकतयवादियों और कम्युनिस्टों के बीच मोहार्द-  
 स्थापन करवाने के अपने मोदेश्य प्रयामों के लिए  
 " दंडित " किया गया था।

मोरो के अपहरण में भाग लेनेवाले ६३ व्यक्तियों  
 में से ५४ को गिरफ्तार कर लिया गया। फरवरी,  
 १९८२ में गृह मंत्रालय ने रोम के निकट ही " जन-  
 कारागार " का पता लगाये जाने की घोषणा  
 की। अप्रैल, १९८२ में आतकवादियों पर मुकदमा  
 शुरू हुआ। लेकिन सवाल अब भी बना हुआ है -  
 इस दूरदर्शी राजनीतिज्ञ की हत्या से लाभ असल में  
 किसे होना था ?

क्या लाल त्रिगेडों को? शायद ही। मोरो  
 की हत्या ने उनकी कतारों में फूट पैदा कर दी।  
 " जन-कारागार " में मोरो की पूछ-ताछ से प्राप्त



सामग्री इतनी अपर्याप्त मिद्ध हुई कि त्रिगेडवाने अपने इस घमकीभरे वचन को भी पुरा न कर सके कि वे मनमनीमोड़ रहस्यों को प्रकाशित करने जा रहे हैं।

मोरो का अपहरण करने का निश्चय क्योंकर किया गया? उसकी प्रेरणा किमने दी? असहाय बंदी के मारे जाने पर किमने जोर दिया, जब यह स्पष्ट था कि उससे साल त्रिगेडो को फायदे की जगह नुकसान ही ज्यादा होगा?

सबसे तनावपूर्ण घड़ी में, जब यह आशा अब भी बनी हुई थी कि मोरो को बचाया जा सकता है, रोम की एक समाचार-एजेंसी ने यह रिपोर्ट प्रसारित की "मोरो के अपहरण के मूल में जो निदेशनकारी बंद है, उसकी साल त्रिगेडो से कोई भी सामान्यता नहीं है।" और इसके आगे कहा गया था 'उनका अपहरण सिर्फ इस मूरत में ही वाग्गर हो सकता है कि वह ईसाई-लोकतन्त्रवादियों और कम्युनिस्टों को सीहार्द-स्थापन की ओर निरंतर धकेलनेवाले सीजूटा एमान को उलटने में सहायक हो।' \*

यह समाचार-एजेंसी कागमीनो रेकोरेल्सी की थी जो लीचो जेल्ली के भूतपूर्व मित्र और उनके पी-२ पत्र के सदस्य थे। लेकिन जेल्ली में गुप्तचर सेवाओं की पाइने प्राप्त करने के बाद त्रिगेडे इलायची राज-नीतिज्ञों से संबंधित पाइने भी थी रेकोरेल्सी अपने ही सहयोगियों को छीरमेंल करने लगे। इन रहस्यों-

\* L'Unità December 8, 1990



पाटनों के कुछ ही महीने बाद पेकोरेन्नी को मार डाला गया। उनकी ज़्यादा मुद्र में गोली दागकर की गयी थी। यह अपना मुद्र बद न रख मरनेवालों के साथ निगटने का मानिया का तरीका है।

एक बात महोदानीय है - पेकोरेन्नी जानने थे कि अपहरण के अगामी मूत्रधार मान विवेकवाने नहीं है और यह कि उनके मूत्रधारों की खोज अन्य की जानी चाहिए। लेकिन कहा ?

आइये, कागजार से मोरो के पत्रों पर नज़र डालें। ईमार्ड-मोक्ताविक पाटों के शीर्षस्थ नेताओं की उन्हे खचाने की अनिच्छा को जानने के बाद मोरो ने लिखा था - "सम्भव है कि मेरे मामले में सली की यह स्थिति अमरीकी अथवा पश्चिमी जर्मन प्रभाव के कारण है।" अपहरण के कुछ सप्ताह पहले मोरो ने सीनेटर चेरवोनो से कहा था - "आप देखेंगे कि हमें अपनी नीति के लिए भारी कीमत अदा करनी होगी।" "किसे?" - सीनेटर ने पूछा। मोरो ने कहा - "देश में और विदेश में हमारे शत्रुओं को। मिसाल के लिए, मैं संयुक्त राज्य अमरीका में सर्वथा और पश्चिमी जर्मनी में आशिक रूप में कोई सहानुभूति नहीं पाता हूँ।"

मोरो राष्ट्रीय समझौते की अपनी नीति के प्रति संयुक्त राज्य अमरीका के विद्वेषपूर्ण रवये से बहुत परेशान थे। दिसंबर, १९७७ के अंत में उन्हें पता चला कि रोम में अमरीकी राजदूत रिचर्ड गार्डनर उनके बारे में वाशिंगटन को अत्यंत प्रतिकूल रिपोर्टें



भेज रहे हैं। मोरो ने अपने सहकारी पीजानू को वाशिंगटन भेजा, ताकि वह उनकी वाशिंगटन यात्रा की संभावनाओं की घाह ले सके, जो इस तनाव को कम कर सकेंगी। पीजानू के साथ उदासीनता से पैदा आया गया। एबीगेनेव कुभेज़ीन्स्की के सहायक ने उन्हें बताया कि वाशिंगटन में "कोई भी ईसाई-सोकतवावादियों के नेता से मिलना नहीं चाहता"।

संयुक्त राज्य अमरीका को यह आशंका थी कि मोरो की नीति यूरोप में समग्र स्थिति को विशेषकर फ्रांस में आम चुनावों को, जिसमें वामपक्ष की विजय निश्चित संभाव्य प्रतीत होती थी, प्रभावित कर सकती है। १२ जनवरी, १९७८ को अमरीकी विदेश मंत्रालय ने एक बड़ा वक्तव्य प्रकाशित किया जिसमें फामी-नियों और इतालवियों को स्पष्ट सलाह दी गयी थी कि वे कम्युनिस्टों को अपनी सरकारों में किसी भी रूप में प्रवेश न दें।

मोरो जानते थे कि इस चेतावनी का मतलब क्या है। उन्होंने पेरवॉनो से कहा था 'ये लोग इसके लिए सब कुछ करने कि छूटें से छूटें बीन्नीफो-नियार्ई मतरे बेच सकें।' निस्संदेह 'मतरे' शब्द का प्रयोग यहाँ इन्फे में किया गया था - बीन्नी-फोर्नियार्ई अमरीकी मैनिफेस्टो-ऑथोराटिव एटजोड का हृद-स्पष्ट था और अगला अमरीकी राष्ट्रपति बही म मानेवाना था।

मोरो पर प्रहार अधिकाधिक बढ़ होने जा रहा था। 'एऊरोपीओ' में प्रकाशित एक समाचार के



अनुसार ३ मार्च को कोनरिया विस्फोटस्थान में आग लग गई। राखल गार्डनर ने कहा था “आन्दोलनों द्वारा इलाकों में राजनीतिक समझौते पर मजबूत बनना और दुदरी बात करनेवाले व्यक्ति हैं।”

और १९ मार्च को मोरों को राह में हटाने के पहलुओं के पानी में पानी मार्ग पर चिनारों सवा दो गये।

## नाटो के कठपुतली नचानेवाले

एक भेटवार्ता में लॉचो जेल्नी ने कहा था कि वह बचपन से ही ऐसा कठपुतली नचानेवाला “बुरातोनोइओ” बनने का सपना देखते आये हैं, जो “सत्ता के सचासको” सहित लोगों को मन-मरजी के मुताबिक नचा सकता है। यह कोई कोरी डींग नहीं थी—पी-२ लॉज के लगभग १,००० सदस्यों\* में इटली की सभी सशस्त्र सेनाओं के शीर्षस्थ अधिकारी, समस्त गुप्तचर सेवाओं के संचालक सम्मिलित थे—जनरल ग्रास्सीनी, सातोवीतो, जान्नीनी और पेलोडी, नाटो संगठन में एक उच्च पद पर नियुक्त ऐडमिरल तोरींजी।

---

\* यह ओरेस्को में जेल्नी के निवास की तलाशी में मिली रस्तावेजों में उल्लिखित नामों की संख्या है। वास्तव में, इलाकों में रिपोर्टों के अनुसार, उच्च पदाधिकारियों में उक्त सदस्यों की संख्या २,००० से अधिक है।



उमके मदस्यो मे प्रमुख बैकर तथा उद्योगपति, अम्वारो और टेलीविजन केंद्रो के मालिक, ईसाई-लोकतन्त्रवादी तथा समाजवादी मंत्री और ससदीय नेता भी थे। लाँज के अफ्रीका और लातीनी अमरीका के साथ सम्पर्क थे, मगर धनिष्ठतम मवध मयुक्त राज्य अमरीका के साथ ही थे।

इतना ही नहीं—पी-२ लाँज के जगिए कोई २०,००० इतालवी मेसन सी० आई० ए० की एक तरह की शाखा का निर्माण करते थे। ऐसा क्यों? इसलिए कि अन्य पदिचमी यूरोपीय देशों की भांति इटली में भी मेसोनिक लाँजो का युद्धोत्तर पुनर्गठन अमरीकी गुप्तचर्या के नियन्त्रण में हुआ था। इस पुस्तक में पूर्वोद्धृत मैक्स कोवो के कथनानुसार सी० आई० ए० का संचालन करनेवाले अमरीकी मेसन फौरन ही इटली जा पहुंचे, जो अभी पूरी तरह से मुक्त भी नहीं हुआ था, नाकि वहां अपना जाल फैला सके। यह कार्य फ्रैंक जील्योनी नामक एक मेसन और दीर्घस्थ सी० आई० ए० अधिकारी के निदेशन में हुआ। उदाहरण के लिए, जेल्ली स्पेनी गृहयुद्ध में फाशिस्तों के पक्ष में लड़नेवाले स्वयंसेवकों में एक थे। मुसोलिनी की सेना में अफसर बनने के बाद उन्होंने इतालवी प्रतिरोध आंदोलन के छापामारों के खिलाफ अपनी बर्बरतापूर्ण कार्रवाइयों में वृत्त्याति अर्जित की थी। वह उन लोगों की एक मिसाल थे जिन्हें नये अमरीकी मेसन संगठनों में लिया गया था।

जैसे कि पहले ही बतलाया जा चुका है मयुक्त



राज्य अमरीका के राजनीतिक आर्थिक तथा सैनिक प्रकर समुदाय में - राष्ट्रपतियों में मेकर विज्ञानजन निगमों के प्रधानों और मेना के सर्वोच्च अधिकारियों तक - मेसन परम्परा में ही प्रमुख स्थानों पर रहे हैं। उदाहरण के लिए, मगमन मारे ही नाटो कमांडर मेसन है। पचास के दशक के अन्त और साठ के दशक के आरम्भ में इटली में नाटो के कार्यालयों और अमरीकी फौजी अट्टो में अमरीकी अफमरो के लिए विशेष मेमोनिक लांज स्थापित किये गये थे - बेरोना में बेरोना एमेरिकन, बीचेन्सा में जार्ज वाशिंगटन, लीवोनों में यैत्रेमिन फेकलिन, नेपन्ड के निकट हैरी एम० ट्रूमैन और फीऊली में एबीआनो लांज। रोम में कोलोजिज्जिम लांज अमरीकी राजनयजो और सैनिक अफमरो के लिए है। नाटो के मेसन मास्टर ( मुखिया ) समुक्त राज्य अमरीका और इटली, दोनों देशों की 'ग्रेड ओरीएंट' मेमोनिक सोसाइटियों के एकसाथ सदस्य हो सकते हैं - इसकी बदौलत वे अपने इतालवी अधीनस्थों की डोर को हाथ में रख सकते हैं।

इस अमरीकी सहायता के बिना जेल्ली कहा हुए होते, जिन्होंने शुरुआत मत्रियों को अपनी कर्म द्वारा निर्मित गद्दे भेंट करके की थी? अपनी बारी में स्वयं फाशिस्त-बूरासीनाइयो की हैसियत कही अधिक कुशल कठपुतली नचानेवालों की कठपुतली से अधिक नहीं थी। अमरीकी सैन्य-औद्योगिक गठबोड, ह्वाइट हाउस, सी० आई० ए० और बिल्डरबर्ग क्लब तथा

५. आयोग के अधिपति जेल्ली और उनके सर्व-







मान्यता एवं स्टेशन पर विम्बोट त्रिमं २०० में अधिक लोग माने गये और भ्रमण हुए थे। जेम्सी और उनके गुप्तचरों के साथ साथ विम्बोटों में भी-भी-भी भ्रमण हुए थे।

ईसाई-गोपनीयता पार्टी के राजनीतिक मंत्रि-पीकरोनी ने कहा था कि 'मोरो को इम्बिए इटाली गया कि वह नहीं चाहते थे कि इटली में सभी विधियों का गुना मच बन जाये।' जुलाई, १९८१ में पुनिग इम्पेक्टर माम्मीए के परिवार की मार्मई के एक शान उपनगर में बर्बरतापूर्वक हत्या कर दी गयी। माम्मीए पी-२ लॉज के फासीसी समकक्ष-यरुशलम मंदिर के नाइटों के मध्य-में सबद्ध रहे थे। यह तुर्की में हथियार बरीदा करने थे और उन्हें इटली भेज देते थे, जहां वे लाल विम्बोटों को दे दिये जाने थे। माम्मीए को ऐसे एक मौदे से हुई प्राप्ति को ध्या जाने के कारण मारा गया था। इसके अलावा, फासीसी अधिकारियों की जाच से यह पता चला कि हथियारों का प्रेषण सी० आई० ए० के निर्देशों पर जेल्सी के लॉज द्वारा संगठित किया जाना था। इतालवी और अमरीकी गुप्तचरों सेवाओं के साथ यह लॉज इटली में "काले" और "लाल" आनक का संचालन करता था। इस प्रकार इटली तब समय से अमरीकी "तनाव की रणनीति" के लिए भारी कीमत अदा करता आया है।

आज यह सुज्ञात है कि जेल्सी का न्यूयार्क के इतालवी समुदाय के नेता और रॉनल्ड रेगन के राष्ट्रपति







## निष्कर्ष

‘संयुक्त राज्य अमरीका के बुनियादी हिंनों’ की प्रख्यापना ने जो अमरीकी इम्नोपेक्वाद का मकसदात्मक आधार है पश्चात् के दशक के उत्तरार्ध में राजनीतिक शब्दावली में पक्की तरह से प्रवेश पा लिया था। मिस्र के विरुद्ध निष्फल आण्विकामीनी-इमराणी आक्रमण के फौरन ही बाद राष्ट्रपति आइज़नहॉवर ने कांग्रेस में मध्य-पूर्व में मशमूर शक्ति का प्रयोग करने का विवेकाधिकार प्रदान करने का अनुरोध किया। ह्वाइट हाउस ने “मोवियन तथा कम्युनिस्ट मतरे” की कपोल-कल्पना को अपने नये आक्रामक सिद्धान्त की आधारशिला बनाया।

५ मार्च, १९५७ को अमरीकी कांग्रेस के दोनो सदनों ने एक प्रस्ताव पारित किया, जिसमें, और बातों के साथ-साथ, कहा गया था:

“अगर राष्ट्रपति इसकी आवश्यकता समझें, तो संयुक्त राज्य अमरीका किसी भी ऐसे राष्ट्र अथवा राष्ट्रों के ऐसे समूह को सहायता देने के लिए सशस्त्र सेनाओं का उपयोग करने को तैयार है, जो अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिज्म के नियंत्रणाधीन किसी भी देश द्वारा सशस्त्र आक्रमण के विरुद्ध सहायता का अनुरोध करता है।”

इस तरह से तथाकथित आइज़नहॉवर सिद्धान्त



अभित्व में आया था, जिसने न केवल आनेवाले कई वर्षों के लिए अमरीकी रणनीति को आक्रामक ही नहीं बनाये रखा, बल्कि तत्काल कार्टर सिद्धांत के आदर्श का काम भी किया, जिसे सर्वप्रथम जनवरी १९८० में इस प्रकार सूचित किया गया था

“फारम की खाड़ी के क्षेत्र में बाहरी शक्तियों द्वारा नियंत्रण प्राप्त करने के किसी भी प्रयास को संयुक्त राज्य अमरीका के बुनियादी हितों पर प्रहार माना जायेगा, और इस तरह के प्रहार का सैनिक शक्ति सहित आवश्यक हर साधन से निवारण किया जायेगा।” \*

दोनों ही सूत्रीकरणों में युग्मजो जैसी समानता है। लेकिन फिर भी उनके बीच एक तात्त्विक अंतर है - आइजनहॉवर सिद्धांत जहां किसी के “सहायता का अनुरोध” करने के प्रत्युत्तर में अमरीकी हस्तक्षेप की परिकल्पना करता है वहां कार्टर सिद्धांत अमरीकी राष्ट्रपति को सैनिक शक्ति का जहां वही भी वह “संयुक्त राज्य अमरीका के बुनियादी हितों” पर “प्रहार” का सख्तरा महसूस करे, वहां उपयोग करने का अनन्य अधिकार प्रदान करता है।

कार्टर सिद्धांत की बात करते समय इसका विशेषकर उल्लेख किया जाना चाहिए कि अपने निष्पण में उसने राष्ट्रीय सुरक्षा के बारे में राष्ट्रपति के तत्कालीन विशेष सलाहकार ब्रिजेजीन्स्की द्वारा प्रतिपादित तथा-

\* *The Washington Post*, February 4, 1980, p. A 25



कथित "मकट के चापों" अथवा "अस्थिरता के चापों" की सकल्पना से बहुत कुछ ग्रहण किया है। इस सकल्पना का सारतत्त्व यह है कि कितने ही अफ्रीकी तथा एशियाई देशों में जातिकारी तथा मुक्तिकारी प्रक्रियाएँ "संयुक्त राज्य अमरीका के बुनियादी हितों" के लिए एक सभाव्य सुतरा प्रस्तुत करती हैं।

राष्ट्रपति कार्टर ने २३ जनवरी, १९८० को अमरीकी कांग्रेस में सम्मुख भाषण देते हुए अपने नये मित्रता के मूलाधारों को प्रस्तुत किया। यह मित्रता संयुक्त राज्य अमरीका के महासैन्यशक्ति के वन पर विश्व-प्राधान्य के दावे पर आधारित था। कार्टर मित्रता को अपना प्रस्थान-विन्दु बनाकर पैटागॉन ने तुरत तड़ितपात सक्रिया की योजनाएँ तैयार करना शुरू कर दिया। इन योजनाओं में उन देशों तथा क्षेत्रों को अमरीकी मंगलों की विशेष इकाइयों के द्रुत प्रेषण की परिकल्पना की गयी थी, जहाँ कच्चे-जीन्सकी की सकल्पना के अनुसार "संयुक्त राज्य अमरीका के बुनियादी हितों" के लिए मनरनाक स्थिति उत्पन्न हो सकती थी। तार्किक रूप में यह राष्ट्रीय सुरक्षा आशयनों को कुचलने के लिए एक नया हथियार निकालने की ही बात थी।

अन रैगन प्रशासन द्वारा मत्ता में आने के साथ प्रतिपादित "अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के विरुद्ध संघर्ष" का मित्रता पूर्ववर्ती प्रशासन की आक्रामक सामरिक-

सकल्पनाओं का तार्किक निरुपस्थान ही है।

१. संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की छद्मप्राप्ति



कायेम में प्रस्तुत वैदेशीय समिति की रिपोर्ट में इंगित किया गया है कि "मुहिमवाजी और सकीर्ण तथा स्वार्थपरक लक्ष्यों की खातिर मानवजाति के हितों को दाव पर लगा देने की उद्यतता—अधिक आश्रामक साम्राज्यवादी हलकों की नीति में जो चीझ विशेषकर नुनै तौर पर सामने आयी है, वह यही है। राष्ट्रीय के अधिकारों और आकांक्षाओं के लिए चरम तिरस्कार का प्रदर्शन करते हुए वे जनसाधारण के मुक्ति मर्घ्य को आतंकवाद की तरह से दिखलाने का यत्न कर रहे हैं। उन्होंने सर्वथा असाध्य की सिद्धि करने के लिए—समर में प्रगतिशील परिवर्तनों के आगे अवरोध डाल करने के लिए, जनगण की नियति का फिर से नियामक बनने के लिए—पग उठाया है।" \*

एशियाई, अफ्रीकी तथा सातीनी अमरीकी जनगण के अपनी स्वतंत्रता तथा स्वाधीनता के लिए न्यायमगत मर्घ्य को ह्वाइट हाउस अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद की तरह पेन करने का हठपूर्वक प्रयास कर रहा है। अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के विरुद्ध मर्घ्य" के गढ़े हुए बहाने की आड में अमरीकी साम्राज्यवाद राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन पर और सर्वोपरि समाजवादीन्मुख देशों पर गुना हमला बोल रहा है।

अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद की समस्या बहुत समय से विश्व समुदाय के ध्यान का केंद्रबिंदु रही है। टेड

\* सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की छत्तीसवीं कांग्रेस।  
 एशियाई तथा अफ्रीकी जनगणों को (1) एक एकजुट, एकजुट  
 1959 पृ. 23 (अधिवेशन)।

9331

10-2-2011







अन्य समाजवादी देशों के प्रतिनिधिमंडलों ने गुट-निर्पेक्ष देशों द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव का एकमत समर्थन दिया। इस प्रस्ताव का शीर्षक था अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद का निरोधन करने के लिए उपाय, जो निरपराध लोगों को सड़क में डालता या उनकी जाने लेता है अथवा मूलभूत स्वतंत्रताओं के लिए खतरा है तथा आतंकवाद और हिंसा की कार्यवाहियों के उन रूपों के आधारभूत कारणों का अध्ययन जो निर्धनता, कुछ, शिकायत तथा हताशा में निहित है और जो कुछ लोगों को आमूल परिवर्तन लाने के प्रयास में अपने प्राणों महित लोगों के प्राणों को बलि करने के लिए प्रेरित करते हैं।"

प्रस्ताव के शीर्षक से यही निष्कर्ष निकलता है कि उनके प्रस्तावक आतंकवाद और निश्चित सामाजिक कारणों से जनित हिंसात्मक कार्यों के बीच स्पष्ट सीमांकन करते हैं। प्रस्ताव अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद की सभी कार्यवाहियों की दृढ़तापूर्वक निंदा और शांति तथा मानवतावादी आदर्शों की स्थातिर उनके विच्छेद संघर्ष की आवश्यकता को अपना प्रस्थानबिंदु बनाता है।

अमरीकी सत्ताधारी "अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के विच्छेद संघर्ष" की अपनी अपीलें आम तौर पर सोवियत-विरोधी सहजे में करते हैं। लेकिन हकीकत यही है कि आतंकवाद में हमारे देश के शामिल होने का हर दावा भोडा और कुटिल इरादों में मग्न गया झूठ है। सोवियत संघ अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद सहित आतंकवाद के सिद्धान्त और व्यवहार का मिडानन मंदा में विरोधी रहा है और विरोधी है।



१९३७ में २४ देशों के प्रतिनिधियों ने जेनेवा में आतंकवाद के निवारण तथा उसके निष्पत्ति के बारे में एक अभिगम्य पर हस्ताक्षर किये थे। इस अभिगम्य ने अन्तर्राष्ट्रीय कानून के इस उद्देश्य की पुनर्पुष्टि की थी, जिसके अनुसार किसी भी राज्य के विरुद्ध सशस्त्र किसी भी आतंकवादी गतिविधि का निरोध करना प्रत्येक राज्य का कर्तव्य है और अभिगम्य के हस्ताक्षरकर्ताओं ने किसी गतिविधि के दोषी व्यक्तियों को दण्डित करने का दायित्व लिया था। अभाष्यवश यह अभिगम्य प्रचलन में आया ही नहीं।

अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद की समस्या पर हाल के समय में मयूक्त राष्ट्र मंच में भी विचार किया गया है। मयूक्त राष्ट्र महासभा के २७ के अधिवेशन में उस पर विशेषकर विमतापूर्वक तथा तेज चर्चा हुई। पश्चिमी देशों के प्रतिनिधियों ने राष्ट्रीय सुरक्षा तथा आर्थिक उद्धार के लिए व्यापकतः सशस्त्र अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद के साथ समीक्षण करने राष्ट्रीय सुरक्षा आदेशों पर कार्य करने का प्रयास किया। प्रचलित प्रतिनिधिमण्डल द्वारा आतंकवादी गतिविधि में यह भी विशेषकर प्रयत्न था। संश्लेषण के विरुद्ध प्रयासों की सर्वप्रथम आशय यह था कि आतंकवादी और निरक्षरों को सशस्त्रों प्रयत्न के प्रति व्यवहार प्रयत्न की संज्ञा के लिए प्रयत्न प्रयत्न के अन्तर्राष्ट्रीय तत्त्वों में जो लगे हुए सशस्त्र कार्य।

जैसा कि मयूक्त राष्ट्र मंच के २७ के अधिवेशन में इस प्रयत्न की प्रयत्न की। अन्तर्राष्ट्रीय तत्त्वों



अन्य समाजवादी देशों के प्रतिनिधिमंडलों ने गुट-निरपेक्ष देशों द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव का एकमत समर्थन किया। इस प्रस्ताव का शीर्षक था "अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद का निरोधन करने के लिए उपाय जो निरपराध लोगों को सकट में डालता या उनकी जानें लेता है अथवा मूलभूत स्वतंत्रताओं के लिए खतरा है तथा आतंकवाद और हिंसा की कार्रवाइयों के उन रूपों के आधारभूत कारणों का अध्ययन जो निर्धनता, कुशा, गिरावट तथा हताशा में निहित है और जो कुछ लोगों को आमूल परिवर्तन लाने के प्रयास में अपने प्राणों महिष लोगों के प्राणों को बलि करने के लिए प्रेरित करते हैं।"

प्रस्ताव के शीर्षक में यही निष्कर्ष निकलता है कि उसके प्रस्तावक आतंकवाद और निश्चित सामाजिक कारणों से जनित हिंसात्मक कार्यों के बीच स्पष्ट सीमांकन करते हैं। प्रस्ताव अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद की सभी कार्रवाइयों की दृढ़तापूर्वक निंदा और दानि तथा मानवतावादी आदर्शों की गानिर उनके विरुद्ध सघर्ष की आवश्यकता को अपना प्रमथानबिंदु बनाता है।

अमरीकी सत्ताधात्री "अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के विरुद्ध सघर्ष" की अपनी अपीले आम तौर पर मोबियन-विरोधी सहजे में करने है। लेकिन हकीकत यही है कि आतंकवाद में हमारे देश के दानिमान होने का हर दावा भोडा और कुटिल दगादो में गड़ा गया अड है। मोबियन सघ अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद महिष आतंकवाद के निदान और व्यवहार का निदानन सदा में विरोधी रहा है और विरोधी है।



अनुमृत जनमहार का नान का त्व। ३० ६। २ . .  
 प्रोत्साहन भी यही प्रमाणित करता है।

मस्वादोर में, जहां अमरीकी परामर्शदाता सार्व  
 प्रिय नागरिकों के कत्लेआमों का निदेशन कर रहे  
 हैं, लेकर घाई-कपूचिया सीमा तक, जहां अमरीकी  
 द्वारा समर्थित फोल फोल के बचे-बुचे गिरोहों ने शरण  
 ली है, यही सुस्थापित और सुस्पष्ट कार्य-प्रणाली देश  
 में आती है। संयुक्त राज्य अमरीका की सेंट्रल इंटेलीजेंस  
 एजेंसी कभी का वह मुख्य केंद्र बनी हुई है, जो अणु  
 राष्ट्रीय स्वतंत्रता तथा सामाजिक प्रगति के लिए सशस्त्र  
 जनगण के विरुद्ध आतंकवादी कार्रवाइयों का नि



